विनाश या इलाज

[यूरोप में सत्य और अहिंसा के कुछ प्रयोग]

लेखिका

कुमारी म्यूरियल लेस्टर

अनुवादक

श्रीरामनाथ 'सुमन'

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली

कुछ शब्द

यह पुस्तक उन लोगों के लिए नहीं हैं जो केवल मनोरंजन की भूख मिटानें के लिए पुस्तकें पढ़नें के आदी है। यह उन लोगों के लिए है जो जीवन को अन्तःमुखी बनानें में प्रयत्नशील हैं—जो जीवन में आध्यात्मिकता और मानवता के ऊँचे आदर्शों से अनुप्राणित हैं अथवा कम-से-कम अनुप्राणित हो उठने के लिए जिनमें व्याकुलता और खीझ है। यह उन लोगो के लिए है जिनका स्वाद चटपटी चीजें खाने से विकृत नहीं हो गया है और जो स्वास्थ्यकर सात्त्विक भोजन साहित्य में चाहते हैं। यह उन लोगो के लिए है जो गांधीजी तथा अन्य लोगों द्वारा होनेंवाले उस महान् प्रयोग की ओर आशा के साथ देख रहे है जिसने विनीत पर निश्चय एवं दृढ़ता के स्वर में जगत् के सामने यह बात रख दी है कि जहाँ हिंसा है वहाॅ स्थायी रूप से समाज का कल्याण सम्भव न होगा और यह कि समाज के मूल में जो हिंसा है वह हिंसा से दूर न हो सकेगी; फिर चाहे वह कोई 'वाद' हो और आज कितना ही लुभावना प्रतीत होता हो।

× × × ×

आज संसार भयानक वेग से विनाश की ओर दौड़ा जा रहा है। प्रत्येक देश की सरकार शान्ति और सभ्यता की बाते करती है पर शस्त्रीकरण का काम एक मिनट के लिए बन्द नहीं है। संसार एक विराट पर अज्ञात वधस्तंभ की तैयारी में लगा हुआ है। मनुष्य का सभ्य और उन्नत वैज्ञानिक मस्तिष्क ऐसे अन्वेषणों को परिपूर्ण करने में लगाया जा रहा है जिससे कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक प्राणी सहूलियत से मारे

जा सके। न केवल सैनिको को रण में मारने वरन् लाखो और करोडो निरीह जनता को पगु वना देने, उनके फेफडे ख़राब कर देनें, उनमें मारक रोगो के कीटाणु भर देने के 'सभ्य' प्रयोग भी किये जा रहे है।

जब इन सैनिक प्रयोगो के लिए प्रत्येक देश करोडो रुपये व्यय कर रहा है; तब वहाँ की जनता भूख से पीड़ित छटपटा रही है; लाखो व्यक्ति बेकार फिर रहे है। मजदूर यत्र वनते जा रहे है और उनकी मानवी भावनायें कुण्ठित होती जा रही है। बच्चो को दूध नहीं मिलता; पौष्टिक खाद्य-पदार्थो के अभाव से जनता में क्षय तथा अन्य भयकर रोगो का प्रचार बढ़ रहा है। विधायक एव जन-हितकर कार्यो के लिए सरकारें धनाभाव का बहाना करती है। ठीक इसी समय प्राणियो के क़त्ल की सगठित तैयारी भी प्रत्येक देश में चल रही है।

बीसवीं शताब्दी के पिछले ३७ वर्षो में मानवता ने बार-वार युद्ध दूर करने के लिए युद्ध वा शस्त्रीकरण की नीति की व्यर्थता अनुभव की है और जव आधुनिक महाराष्ट्र सभ्य एव विज्ञानप्रिय होनें का दावा करते है तव भी आश्चर्य है कि वे घोर अवैज्ञानिक प्रवृत्तियो में फँसकर मृत्यु की ओर दौड़ रहे है।

इस दु खदायी स्थिति का कारण यह है कि आज ससार का भाग्य ऐसे लोगो के हाथ में है, जिनके मस्तिष्क में उस सभ्यता ने अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति की है, जो प्रतिहिंसा की नींव पर खडी है। राष्ट्रो का शासन अहकारी एव स्वार्थी वर्ग के हाथ में है और वे कोटि-कोटि शान्ति-प्रिय लोगो में ग़लत दृष्टिकोण का प्रचार करनें एव मनुष्य की पाशविक प्रतिहिंसक भावनाओ को जाग्रत करनें के लिए समाज और राष्ट्र की संगठित शक्ति का वुरी तरह प्रयोग कर रहे हैं। दुनिया की किस्मत आज कुछ अन्धो के हाथ में है।

इस दुःखदायी और भयंकर स्थिति से दुनिया को ऊपर उठना होगा। युद्ध की दवा युद्ध नहीं, और न हिंसा की आग प्रतिहिंसा से बुझ सकती है। रक्तबीज की तरह हिंसा सदैव हिंसा से बढ़ती रहेगी। वस्तुतः मनुष्य अथवा समाज के सुधार या संस्कार का यह तरीका ही गलत है। हिंसा का सबसे बड़ा दुर्गुण यह है कि वह प्रयोगकर्त्ता के दिमाग पर हावी हो जाती है और उसे एक उन्मत्त, अचेत अस्त्र के रूप में कार्य करने को बाध्य करती है। फिर प्रत्येक नशे की तरह जब यह हटती है तो तीव्र विषाद, अवसाद, खीझ, शिथिलता और अपनी असमर्थता का भाव मनुष्य में छोड़ जाती है। इसलिए स्थायी शान्ति के साधन के रूप मे इसकी कल्पना ही नही की जा सकती। यह तो जगत् की नैतिक शक्ति, मानवता के आत्म-विश्वास को संगठित करके अभय के वातावरण में ही सम्भव है।

और यह कोई अव्यावहारिक कल्पना नहीं है। जो सिद्धान्त मनुष्य की अन्तःप्रकृति पर आश्रित हैं; जो प्रत्येक अवस्था में मानव-प्रकृति की श्रेष्ठता में विश्वास रखना सिखाता है वह अव्यावहारिक कैसे कहा जा सकता है। आज की विपरीत परिस्थितियो, सैनिक चालो, झूठे एवं खुदगर्जी से भरे प्रचार तथा पाशविक हिंसापूर्ण कार्यक्रमो के बीच भी दुनिया की आशा उन लोगों पर लगी है जो प्रत्येक देश में अहिंसा को अपनाकर मनुष्य की क्षुद्र प्रवृत्तियो पर विजय पाने के प्रयोग में लगे हुए हैं।

कुमारी म्यूरियल लेस्टर शान्ति एवं अहिंसा के ऐसे ही व्रती लोगों में से हैं। अहिंसा की उनकी साधना जीवनव्यापी और आध्यात्मिक भावो को लेकर है। लन्दन में उनका आश्रम (किंग्सले हाल) गरीबो के बीच नैतिक जागरण का जो कार्य कर रहा है, उससे उत्साहित होकर ही

महात्मा गांधी ने दूसरी गोलमेज-परिषद् के समय, वहाँ रहना पसन्द किया था। पश्चिम में होनेवाले अहिंसा-प्रचार एवं शान्ति के प्रत्येक आन्दोलन से उनका सम्बन्ध रहा है। उनका सारा जीवन नैतिक साहसिकता की प्रतिमूर्त्ति रहा है। उनकी अहिंसा का स्रोत, गाधीजी की नाई प्रभु में उनकी अटल निष्ठा और उसके प्रति आत्मार्पण का भाव है।

उनकी प्रस्तुत पुस्तक (Kill or Cure ?) उन प्रयोगो का एक लघु चित्र है जो यूरोप के विभिन्न भागो में होते रहे हैं। सबसे अच्छी बात तो यह है कि मिस लेस्टर ने इसमें साधारण आदमियो और कार्य-कर्त्ताओ को लिया है और यह दिखाया है कि जब हमारे पडित राजनीतिज्ञ शंका एवं अश्रद्धा से भरे हुए मनुष्य की निम्नवृत्तियो को उकसा रहे हैं तब सामान्य आदमियो का हृदय किस प्रकार काम कर रहा है। इस पुस्तक से मानव-प्रकृति के मूल में शान्ति, सहयोग और बंधुत्व का जो भाव है उसका बड़ा ही स्पष्ट एवं मन को मुग्ध कर लेने वाला चित्र हमारे सामनें खड़ा हो जाता है।

मै मानता हूँ कि जो लोग आज भारत में अहिसा की साधना में लगे हुए हैं उनको इस पुस्तक से बल मिलेगा और यह मालूम होगा कि गांधीजी के या उनके प्रयोग एकाकी नहीं है। आज दुनिया में सहस्रों आदमी ऐसे है जो अपने दीर्घकालिक अनुभव से अहिंसा की अन्तिम सफलता में विश्वास स्थापित करने को बाध्य हुए है। यह ठीक है कि ऐसे लोगो की सख्या कम है पर सत्य के अन्वेषण का साहस कम ही लोगो में होता है। उनकी शक्ति उनकी संख्या में नहीं, उनके विश्वास और मानव-प्रकृति की स्वाभाविक अच्छाई में है। इसलिए आज वे जो बीज बो रहे है, उपयुक्त खाद और जलवायु मिलते ही वह विशाल वृक्ष बन जायगा। अपनी प्रकृति के कारण हिंसा एवं युद्ध सदा असफल होगे और

अन्त में मनुष्यों को ऊबकर और थककर शाश्वत प्रेम और अहिंसा की शरण में आना पडेगा।

इस दृष्टि से यह पुस्तक हिंदी में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दुःख यही है कि प्रकाशक इसे जल्दी प्रकाशित नहीं कर सके।

पढ़ने में यह कहानी की भांति रोचक और आकर्षक है और मुझे आशा है कि इसकी हिन्दी में अच्छी बिक्री होगी और पाठक इसे ख़रीद कर और पढ़कर ही न रह जायँगे वरन् जीवन में इसकी नैतिक भावना को स्थान देंगे।

c/o हरिजन-सेवक-संघ,
किंग्सवे, दिल्ली

श्रीरामनाथ 'सुमन'

विषय-सूची

परिशिष्ट-भाग

विनाश या इलाज

फैले 'बो' के इस ऊसर एव गन्दे विस्तार में बसनेवाली कारखानो में काम करनेवाली लडकियो, श्रमिको एव माताओं के सम्बन्ध में मुझे कैसे जानकारी हुई और कैसे मेरे हृदय मे उनके लिए आदर का भाव उत्पन्न हुआ, यह एक अलग ही कथा है। यहा इतना ही कहना काफी होगा कि मैंने जीवन को देखने के उनके ढङ्ग में, उनके आचरण के नियमों में तथा उनके साहस, उदारता एव हास्य मे सीखने की इतनी बातें पाई हैं कि अभीतक मैं उनकी नैतिक उच्चता तक नहीं पहुंच सकी और न उनसे उऋण ही हो पाई हूँ। पहले मैंने अपने एक श्रमिक मित्र के मकान में एक कमरा लिया, फिर कई कमरे, उसके बाद आधा मकान तथा आगे पॉच कमरे का एक पूरा मकान किराये पर लिया, जहॉ मै आगे आनेवाले दिनों में अपनी कुछ सहेलियो के साथ बस गई—पूर्वी लन्दन की एक जिम्मेदार नागरिक और उसके फलस्वरूप बाद में 'एल्डरमैन' (नगर-सभा की सदस्य) बनने के लिए।

जहातक यूरोप का सम्बन्ध था, अधिकाश भागों मे शाति थी। इग्लैंड में लोग दिन-दिन धनवान और आनन्दी हो रहे थे और धर्म-पुस्तक (गास्पेल) के धनिक मूर्ख के इस मनोभाव की प्रतिध्वनि उनमें सुनाई पड़ती थी—"हे मन, तेरे पास तेरे भर को बहुत-सी अच्छी चीजें, बहुत काफी दिनो के लिए, हैं। शाति के साथ रह और खा, पी तथा मौज उड़ा।" * पार्टियॉ (दावते) अधिक-से-अधिक खर्चीली,

---

* "Soul, thou hast gotten to thyself plenty of good things for many days to come Take thine ease eat, drink, and be merry."

"The stranger

बहुरंगी पार्टियाँ, कृत्रिम आयोजनों के साथ होतीं; पर उनमें प्रकट होने-वाला आनन्द सदा सच्चा न मालूम होता था। अतिथि आनन्द का अनुभव न करते थे और फलतः जीवन को अविश्वास-पूर्वक देखने लगे थे। उनके मन में यह प्रश्न उठने लगा था, कि क्या यह जीवन सचमुच ही जीने लायक है?

जिन्होंने जरा सतह के नीचे देखने की चेष्टा की उन्होंने उसे पाया जिसका प्रत्येक सन्तति, प्रत्येक पीढ़ी को अपने लिए पुनः अन्वेषण करना अत्यन्त आवश्यक है और वह कि केवल सेवा में, किसी सत्कार्य में अपनेको खो देने में, अपनी इच्छा के स्थान पर प्रभु की इच्छा को स्थापित करने में ही आनन्द है। ऐसे लोगों को उनके जीवन का कार्य बिलकुल चित्रित और तैयार मिल गया।

सामाजिक और औद्योगिक स्थितियों के अध्ययन ने सैकड़ों युवा व्यक्तियों को 'सोसायटी' (समाज) की चमक-दमक से दूर, निर्जन साहसिक मार्गों पर डाल दिया।

ओलिवर श्रीनर का 'स्वप्न' (Dreams)—नामक एकग्रन्थ प्रका- शित हुआ। इसने अपनी शक्तिमान भावनाओं के द्वारा हजारों के मन में वैभव के लिए अभिमान की जगह लज्जा की अनुभूति पैदा की।

कितनों ने ससार के उस रूप का स्वप्न देखना शुरू किया जो 'सब मनुष्यों का सम्मान करो' उक्ति के अनुसार आचरण करने पर होता—एक ऐसी दुनिया जहाँ वर्ग, जाति, राष्ट्र और धर्म की दीवारें नहोंगी और जहाँ—

"अपरिचित, अपरिचित में अपने बन्धु को पावेगा और आँखो मे उसे अपनी बहन दिखाई देगी।" *

जिन लोगों को यह प्रकाश मिला था, उन्होंने अपने भावों को विभिन्न रूपों मे कार्यान्वित करने की चेष्टा की। अनेक अपने उच्च वर्गों को त्याग कर दीन-दुखियों और अकिंचन लोगों के बीच चले गये। कितने ही अपने दिलों मे मित्रता की आग लिये हुए पृथ्वी के कोनों तक पहुँचे—दया के वश नही, लोगों को सिखाने और उपदेश करने के अहकार की तृप्ति के लिए भी नहीं, वरन् अपने नये पड़ोसियों से कुछ सीखने और जो कुछ वे जानते हों उनमे उनके साथ हिस्सा लेने के लिए।

इस अवधि में बहुत-से गिर्जाघर शुष्क और नीरस अवस्था मे थे। उनके सम्बन्ध में समझा तो यह जाता था कि वे विश्व के समक्ष क्राइस्ट को प्रकट कर रहे हैं, पर वस्तुतः उनके द्वारा असख्य सेवाएँ ली जाती थीं तथा स्कूल, क्लब और साधारण ढग के अन्य कितने ही कार्य लिये जाते थे। उनके सुगठित और क्रमबद्ध कार्य-क्रम मे व्यथा या भक्ति की चोट से शायद ही कभी व्याघात होता था। यदि किसी दूसरे ग्रह से आनेवाला कोई आगतुक इन चर्चों मे से किसी एक में पूरा दिन धर्माध्यक्ष के उपदेश ग्रहण करने में बिताता, तो भी सभव यही था कि वह अर्द्धरात्रि तक भी ईशु मसीह (जीसस क्राइस्ट) के ओजस्वी व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कुछ भी न जान सकता।

---

* Shall see in the stranger his brother atlast,
And his sister in eyes that were strange"

इसी बीच रूस में एक आवाज़ उठी। उसने दुनिया को पुकार-कर कहा कि भजनों, मत्रों एवं अग-सचालन द्वारा क्राइस्ट की पूजा करना छोड़ो और उनकी शिक्षाओं को गभीरतापूर्वक जीवन में ग्रहण करके उसका सम्मान करो।

टालस्टाय‡ ने सबसे अपील की कि हम एक-दूसरे के बारे में निर्णय और निन्दा करना छोड दे; दूसरो पर प्रभुत्व एवं अधिकार जमाने की बात का त्याग करे और कहीं भी किसीको शत्रु के रूप में देखना छोड़ दे। उसने हमे, क्राइस्ट की भाँति, सेवा का जीवन बिताने तथा 'क्रास' के अप्रतिरोध मे किसी भी, भूत या वर्तमान, साम्राज्य की तलवार से अधिक विश्वसनीय एक नई शक्ति देखने–अनुभव करने की चुनौती दी।

जार के अधिकारियों–द्वारा रूस मे टालस्टाय के अनुयायी सतत उत्पीड़ित किये गये, उनका स्थान-स्थान पर पीछा किया गया और उनपर मुकदमे चलाये गये। स्वय स्वतन्त्र रहकर सैकड़ों सीधे-सादे लोगों को पीड़ित होता देखने तथा कष्ट और मृत्यु के लिए जिम्मे-दार होने का दुःख टालस्टाय को सहना पड़ा। फलतः उसने ज़ार के नाम एक सार्वजनिक अपील, एक खुली चिट्ठी, प्रकाशित की, जिसे समा-

---

‡ देखिए 'टालस्टाय की २३ कहानिया' (Twenty three Tales of Tolstoy) World classics series: और 'स्वर्ग का राज्य तुम्हारे अन्दर है' (The kingdom of Heaven is with-within you)। टालस्टाय की कई श्रेष्ठ पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद सस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित हुए हैं)।

चारपत्रों ने खूब स्थान दिया, और उससे प्रार्थना की कि ये निर्दोष किसान छोड दिये जायँ और सारी प्रतिहिंसा मुझपर तृप्त की जाय।

नार्मल एंजेल ने 'दि ग्रेट इल्यूजन'* (भारी भ्रम) और रैम्जे-मैक्डानल्ड ने 'टेन इयर्स ऑफ सीक्रेट डिप्लोमैसी' (कूटनीति के दस वर्ष) नामक पुस्तके लिखीं। दोनों पुस्तकों ने लोगों की आत्मा को सजग किया और कितने ही आदमियों के विवेक को बल दिया, जिसके फल-स्वरूप अधिकाधिक लोगों ने महायुद्ध के विषय में बुद्धिपूर्वक शाति के साथ विचार करना शुरू किया।

क्या यह ढग जीर्ण और बोझीला तथा इस वैज्ञानिक युग के लिए अयोग्य था? अलजीसिरस की सधि (Treaty of Algeciras) की भाति, सर्वशक्तिमान प्रभु का नाम लेकर, शाति के समझौते पर हस्ताक्षर करने से क्या फायदा, जबकि हस्ताक्षरकर्ताओं मे से तीन-चार को, जैसा कि असल में हुआ, समझौते की सार्वजनिक शर्तों को निस्सार करनेवाली निजी शर्तों और गुप्त नियमों के ठहराव से रोकने का कोई उपाय नहीं है?

स्त्रियो ने मताधिकार-आन्दोलन (suffrage campaign) मे सगठित होकर अद्भुत कर्त्तृत्व और साहस के साथ अपना उद्धार किया। आश्चर्य-चकित विश्व के सामने फूट पडनेवाला यह एक बिलकुल नूतन दृश्य था। ससार अभीतक अनुभव नही कर सका है कि इसके कारण वे बातें और अवस्थाये फिर हर्गिज नहीं आ सकतीं।

---

* इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद श्री रामदासजी गौड ने 'भारी भ्रम' के नाम से किया है, जो बहुत दिन पहले मद्रास से प्रकाशित हुआ था।

स्त्रियों ने कतिपय प्राचीन प्रथाओं के जारी रहने के अधिकार का साहसपूर्वक विरोध किया। उन्होंने गुप्त बुराइयों—गोरे गुलामों के व्यापार, वेश्यावृत्ति के आर्थिक पहलू इत्यादि—की ओर ध्यान दिया। उन्होंने वेश्याओं के साथ मित्रता स्थापित की, तथा कुछ ने तो अपने पतियों द्वारा उत्पन्न अवैध संतति और परित्यक्ता तथा ठुकराई हुई स्त्रियों के अधिकारों का भी समर्थन किया। अपनी उमंग, व्यवहार-बुद्धि तथा सामान्य विवेक के साथ उन्होंने कारागारों, शुश्रूषा-गृहों, कारखानों, सुधार-गृहों तथा अनाथालयों—मतलब कि सामाजिक जीवन के प्रत्येक भाग में प्रवेश किया।

उन्होंने युद्ध को उसके चकाचौंध, उसकी युग-युगव्यापी मर्यादा, और उसके विस्तृत गौरव से रहित करके देखा और लोभ, अहंकार, वासना, घृणा, झूठ, जासूसी, अज्ञान, गलतफहमी, भय, धनैषणा, वणिक वृत्ति, पक्षपात एवं महत्वाकांक्षा इत्यादि परस्पर-विरोधी भावनाओं के तीव्र भंवर के रूप मे उसका दर्शन किया।

अपने सम्पूर्ण इतिहास मे इंग्लैंड युद्धों में संलग्न रहा है और आज यह मान लिया गया है कि इनमे से अनेक स्पष्टतः अन्याय मूलक थे। फिर भी सैनिक संघर्षों से इतना अधिक साहस एवं भक्ति जाग्रत होती थी कि उसकी स्वाभाविक बुराई पर आसानी के साथ कलई चढ़ गई थी। किन्तु अब इस बीसवीं शताब्दी मे, इस वैज्ञानिक युग मे, क्या हम राष्ट्र की रक्षा के उसी जर्जर एवं आत्मघाती उपाय का प्रयोग करते रहेंगे?

स्त्रियों ने कहा—"चाहे कोई शत्रु हो, हमारे बच्चे आगामी युद्ध मे लड़ने के लिए न जायेंगे। हम जानती हैं कि उनके जीवन का

बलिदान व्यर्थ होगा। युद्ध कोई हल नहीं हुआ करता। विजय के गर्भ में आगामी समर के बीज होते हैं। कोई देश न तो कभी बिलकुल गलत हो सकता है, न बिलकुल ठीक हो सकता है। प्रत्येक राष्ट्र मे भले-बुरे दोनों होते हैं। आप एक सम्पूर्ण राष्ट्र के विरुद्ध कोई दोषारोपण नहीं कर सकते। आप एक सम्राट् के अहकार का दण्ड उसके बहुसख्यक कृषकजनों को मारकर नहीं दे सकते। हम, इसलिए, गर्भावस्था के महीनों के बीच से गुजरने एव प्रसव-पीडा बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हैं कि सिर्फ तोपों के लिए खूराक पैदा करें।"

'पर्सिफाल' × के केवल वेरूथ में खेलने का जो स्वत्वाधिकार श्रीमती वैगनर के पास था, उसकी अवधि समाप्त होगई और यह नाटक सम्पूर्ण यूरोप मे खेला गया और इससे नवीन आन्दोलन को सहायता मिली। इसने श्रवण और दर्शन-द्वारा, विशाल जन-समूहों के सामने, यह बात प्रकट की कि मनुष्य-जाति के त्राता को निःस्वार्थ, साहसी, जन-सेवक एव हरि-जन होना चाहिए।

एक नाटक प्रकाशित हुआ, जिसमें एक 'परिपूर्ण ईसाई' का चित्रण किया गया था। इसमें कियार्टन नामक एक समुद्री डाकू (Viking) † अपने मित्र, बन्धु एव प्रेमिका द्वारा बुरी तरह विश्वासघात का शिकार होता है, फिर भी वह उन लोगों को

× एक नाटक।

† उत्तरवासी जो आठवीं, नवीं एवं दसवीं शताब्दियों में पश्चिमी यूरोप के समुद्र-तटों पर डाका डालते फिरते थे।

मारकर अपनी रक्षा करने की अपेक्षा, यही कहते हुए उनके हाथ मारा जाता है—

"बन्धु, तेरे हाथों द्वारा मेरा कत्ल होना अच्छा है।
इसकी अपेक्षा कि मेरे हाथो तू मृत्यु को प्राप्त हो॥"†

इन शब्दों के द्वारा जो आइसलैण्ड* के विरुद्ध गीतों के रूप मे, शताब्दियों से जीवित चले आरहे हैं, कियार्टन ने मानो देश मे ईसाई-धर्म का प्रारम्भ किया।

लोग अब महसूस करने लगे कि कंस्टैण्टाइन ने ईसाई-धर्मावलम्बियों पर होनेवाले दमन को रोककर और उसे राजधर्म बनाकर वस्तुतः ईसाई-धर्म को अपरिमित हानि पहुंचाई।‡

लोगों ने अपनी पूजा मे प्रयुक्त प्रार्थनाओं और भजनों की छान-बीन शुरू की और जिन वाक्यों या भजनों को वे दिल मे नही मानते थे उन्हे गाने या दुहराने से इन्कार किया। क्या हम उस युग-आदृत

---

† "Brother, by thy hand liefer were I slain.
Than bid thee die by mine"
—Kiartan the galander by Newman
Howard (प्रकाशक—7 M Dent & Co)

* एक प्रदेश। अग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक हालकेन यहाँ बहुत दिनों तक गवर्नर थे और उन्होंने अपने कई उपन्यासो में यहाँ के जीवन के बहुत सुदर चित्र खींचे हैं।

‡ लेखिका का कहना है कि जबतक दमन होता रहा ईसाई-धर्म का अन्तस्तेज चमकता रहा। राज-रक्षण से वह मुर्दा-सा होगया।

भजन—"हमारे प्रभु, अतीत युगों के हमारे त्राता" (O God, our help in ages past)—को, जिसमे निम्नलिखित कड़िया जुडी हुई है, गाने के अधिकारी हैं ?—

"केवल तेरी भुजाये पर्याप्त हैं
और हमारी रक्षा निश्चित है।"
["Sufficient is Thine arm alone,
And our defense is sure"?]

क्या हम सचमुच इसे जानते थे ? यदि उत्तर 'हॉ' मे हो तो हमें सारी स्थल सेना, सारी जल तथा वायु सेना को तोड़ देना चाहिए। यदि नहीं तो हमे इसे गाना बन्द कर देना चाहिए। क्योंकि ऐसा आदर्श जो सुन्दर लगता है और सुन्दर वाक्यों से पूर्ण है पर व्यवहार में जिसका कोई अर्थ नही है, प्रभु और मनुष्य के प्रति एक अपराध है।

इस समय दुनिया को यह बात बताई गई कि १९०२ ई० में कैसे 'अपरिहार्य'—अनिवार्य—युद्ध अर्जेण्टाइन और चाइल के बीच टाला जा सका। केवल एक आदमी† के प्रयत्न ने, जिसका ईश्वर, अपने पडोसियों और अपने 'शत्रुओं' में अगाध विश्वास था, मनोवैज्ञानिक स्थिति बदल दी और क्रूर राजनीति में एक नये उपकरण—एक नये अध्याय का समावेश हुआ।

---

† "The christ of the Andes" by Ernest Taylor (TheFriends Book Shop, Euston, London) परिशिष्ट न० १ देखिए।

इग्लैण्ड की एक ग्राम्य पाठशाला में पढ़नेवाले माली के १२ वर्ष के एक लड़के को छात्रवृत्ति मिली और उसने शिक्षक बनने की शिक्षा आरम्भ की। वह प्रार्थना-मन्दिर मे नियमित रूप से जाता। पर ज्यों-ज्यों वह बढ़ने लगा त्यों-त्यों गैलिली के कृषक (ईसामसीह) के प्राणद एव उत्पादक जीवन से धर्मोपदेशक की शुष्क, नीरस और परम्परापूर्ण पूजा के वैराग्य की बात उसके दिमाग मे आने लगी।

'धर्म-मन्दिर में जानेवालों के आरामदेह और यान्त्रिक जीवन के साथ 'पार्वतीय धर्मोपदेश' (Sermon on the Mount) मेल न खाता था। एक दिन तो मिनिस्टर (धर्मोपदेष्टा, पुजारी) ने मञ्च पर स्पष्ट कह दिया कि इसके अनुसार आचरण करना असभव है। युवक ने इस 'नकार' के विरुद्ध विद्रोह किया और अपने इस नये व्यवहार के कारण किस प्रकार उसे अपनी प्रतिष्ठा, अपने मताधिकार (वोट), अपनी जीविका और अपनी आजादी से हाथ धोना पड़ा, यह आगे के अध्याय मे बताया गया है।

स्वीजरलैण्ड मे एक ग्रामीण स्कूल मास्टर था, जो स्थानीय बैरकों मे जाकर प्रति वर्ष दो सप्ताह सेना मे अपनी सेवाये देने की सूचना करता था। महाद्वीप (यूरोप) में अनिवार्य सैनिक सेवा ('कासक्रिप्शन') का नियम इतना व्यापक है कि उस बेचारे को कभी इस नियम के नैतिक आधार की जॉच करने अथवा इसके मूल तात्पर्य को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न नही हुई। किन्तु चूॅकि वह ईसा का एक सरल एव श्रद्धालु अनुयायी था, किसी अन्तःप्रेरणा के कारण सदा वह अपनी सैनिक सेवा की अवधि मे अपने कोट के भीतर बाइबिल को छिपा रखता था। अज्ञान में

ही सही, उसने शाति के राजकुमार (ईसा) की कथा और बन्दूकी कवायद एव गोलदाजी के अभ्यास का मिश्रण नहीं किया और प्रतिवर्ष लगभग एक मास तक वह बाइबिल को कभी न खोलता, यद्यपि वह सर्वदा सर्वत्र उसके पास रहती थी। यह व्यक्तिगत मानसिक सघर्ष कैसे अकस्मात् सार्वजनिक सेवा एव हित के कार्य में बदल गया, यह बाद में बताया जायगा।

लन्दन मे कारखाने में काम करनेवाली एक लड़की ने, जिसका सारे दिन का काम तांतो के भोजन से टिन के डब्बों को भरना या उन डब्बा पर 'लेबल' लगाना था, ससार को नवीन दृष्टि से देखना शुरू किया। उसके मन मे एक ऐसा विचार आया जिसने उसके जीवन मे उथल-पुथल—क्राति—करदी। उसके पड़ोसियों और उनके कुटुम्बों का सम्बन्ध सदा से सैनिकों एव नाविकों से था। उनकी पोशाक चुस्त, जीवन स्वस्थ और वेतन नियमित था और उनमें शामिल होने से कोई 'दुनिया को भी देख सकता था।' उसके सिर पर यह भूत सवार हुआ कि देखें उसके ये आदमी दरअसल क्या करते हैं। वे हत्या करने का अभ्यास कर रहे थे और यही उनका सारे समय का काम था। फिर भी रविवार के दिन वे अपने अफसरों-द्वारा उस प्रभु के यशोगान के निमित्त गिर्जे में ले जाये जाते जिसने आकाश के नीचे स्थित सम्पूर्ण राष्ट्रों को एक ही रक्त से बनाया है। इस नये विचार ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी।

एक दिन मैंने, पोट्सडम में कैसर द्वारा सेना के निरीक्षण का समाचार (अखबारों मे) पढा। इस सेना में ज्यदातर नये रगरूट थे;

कुछ तो बिलकुल ही नौसिखुए थे। कैसर का भी ध्येय बहुत स्पष्ट था। उन्होंने उनसे कहा—"अब तुम हमारे सैनिक हो। हमारे आदमी हो। तुम्हारा कर्त्तव्य अब केवल मुझीतक है। पूर्ण, निर्बाध आज्ञा-पालन तुम्हारा काम है। तुम भूलना मत कि मैं तुम्हारे भाग्य का विधाता-हर्त्ता-कर्त्ता हूँ। अपने लिए स्वय सोचना तुम्हारा काम नही है। वात्सल्य-सम्बन्ध के किसी रसीले या कोमल भाव के कारण तुम्हारी पूर्ण आज्ञाकारिता में कोई बाधा नही पड़नी चाहिए। सम्भव है, तुम्हे तुम्हारे ही पिताओं और भाइयो पर गोली चलाने की आज्ञा मुझे देनी पडे। यदि यह दिन आये, तो मेरी आज्ञा पर कोई हिचकिचाहट—मीन-मेख—नही होनी चाहिए। तुम्हे गोली मारनी पड़ेगी।"

० ० ० ०

१९१४ ई० का अगस्त नजदीक आरहा था। समाचार आया कि जर्मन सैनिक अधिकारी आगामी युद्ध की प्यास से छटपटा रहे हैं और फ़रासीसी सैनिक ने 'बर्लिन के लिए' प्रतिज्ञाबद्ध होरहे हैं। अग्रेज सैनिक नेता भी अन्य देशो के सैनिक नेताओं के ही समान है, क्योंकि किसी पेशे में कुशलता प्राप्त करके फिर वेकार बैठे रहना और उसका व्यावहारिक प्रयोग न करना अनिवार्यतः उबा देनेवाला होता है। सैनिकों के लिए युद्ध-काल के सिवा शीघ्र उन्नति की आशा एक स्वप्न-मात्र है।

युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाली कम्पनियाँ विदेशो मे अपनी शाखाये खोल रही थी और ऐसी चातुर्यपूर्ण तैयारियाँ कर रही थी कि चाहे कोई पक्ष विजयी हो पर उनकी चाँदी रहे। इसी नीति का फल था

कि ब्रिटिश कम्पनियों ने तुर्की को तोप के गोले पहुँचाकर अपने हिस्सेदारों को खूब मुनाफा बाँटा और उधर ये ही गोले गैलीपोली की रक्तभूमि में हमारे युवकों को विनष्ट, पगु तथा लुञ्जपुञ्ज करने के काम में लाये गये।

इसमें से बहुतोंने किसी शांति-समिति का आवेदन-पत्र लेकर लोगों के हस्ताक्षर के लिए चक्कर लगाना शुरू किया। इस आवेदन-पत्र मे अधिकारियों से प्रार्थना की गई थी कि वे तोपों के विकट फैसले की जगह बातचीत और समझौते की आधुनिक विधियों का इस्तैमाल करें।

—:०:—

:२:

शस्त्रों का सङ्घर्ष

अकस्मात् यूरोप युद्ध की अग्नि में कूद पड़ा। इसमे लोगों को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए था, पर अब भी मनुष्य बौद्धिक प्राणी नहीं बन सका है, इसलिए लोग चकित हुए। स्कूल, कारखाने, दूकान एव मिलो से निकलकर ताजा आये हुए हजारों किशोरो ने अपनेको फ्रास की खाइयो मे लड़ने की द्रुत एव गहरी सैनिक शिक्षा लेते हुए पाया। इस जीवन में उनको एक नई मित्रता व बन्धुता, एक नई जीवन-शक्ति, एक नई सिहर का अनुभव हुआ। इन युवकों में से बहुतों ने तो शायद जीवन में पहली ही बार यह जाना कि निश्चित समय पर मिलने-वाले पेटभर अच्छे भोजन, स्वच्छ ताज़ी हवा, स्वास्थ्यप्रद स्थान, दाँतों की परीक्षा, तैराकी, स्नान और विस्तृत क्रीड़ा-स्थलों की सुविधा क्या चीज है ! इसके अलावा दूसरा कारण जिससे इस नई परिस्थिति में सुख का अनुभव हुआ, यह था कि ग़रीबी और बेकारी के साथ जुड़ी हुई अनेक छोटी बहुरङ्गी दुःखप्रद चिन्ताओं से अकस्मात् मुक्ति मिली।

परन्तु बहुत जल्द उनका स्वप्न भङ्ग होगया और उन्होंने अपने-को ज़मीन के अन्दर, चूहों, बदबू, खून और कीचड़ के बीच पाया। यह 'अनावृत नरक' (Hell With the lid off) था, फिर भी

इसने इन बहुत साधारण आदमियों में, जो शायद अपनी महानता की बात सुनकर आश्चर्य करते, एक विनोद-वृत्ति, एक सहिष्णु प्रसन्नता और एक अकथनीय साहस को जन्म दिया। उनकी यह वीरता आज गद्य और काव्य में अमर होगई है।

० ० ० ०

कुछ ही महीने बाद, युद्ध-क्षेत्र मे, 'बड़ा दिन' (क्रिसमस) का आगमन हुआ। दोनों ओर के सैनिकों के मन मे एक ही विचार थे। वर्ष के सब ईसाई-त्योहारों में यह सबसे लोकप्रिय है। पतित-से-पतित पापी भी साता क्लाज † और 'क्रिसमस ट्री' * की याद करके किंचित् नम्र और कोमल बन जाता है। गरीब-से-गरीब भी इस दिन अच्छे भोजन का इन्तजाम करते हैं। हफ्तों पहले से महाराजिनें (House wives) दूकानों की शीशेदार आलमारियो के अन्दर सजे हुए सूखे अँगूरों, बेदाना दाड़िमों तथा मीठे नीबू के मुरब्बों को, उनकी बेहद बढ़ी हुई कीमत के विचार के साथ, निहारा करती हैं। जब फल मास, आटे एव मसाले में मिलाकर कढ़ाई में तला जाता है तब भी जो कोई इस कार्य

---

† साता क्लाज—एक गौरवर्णा मोटी बुढ़िया, जो बडे दिन की पूर्व रात्रि को छोटे बच्चों को नाना प्रकार के उपहार देती है।

* 'क्रिसमस ट्री'—मकान के एककमरे मे मुख्यतः 'फर' जाति का एक वृक्ष लगाया जाता है और क्रिसमस के लिए आये हुए उपहारों से उसे लाद दिया जाता है। यह दृश्य दिवाली के दिनों मे अन्नकूट के लिए बनाये जाने वाले मन्दिरों, वृक्षों इत्यादि से मिलता-जुलता है।

में हाथ लगाता है वह भाग्यवान समझा जाता है। प्रत्येक को चुपचाप कोई कामना करनी चाहिए और इस बात का विश्वास होना चाहिए कि हमारी कामना अवश्य पूरी होगी। सैनिकों को भी सब बाते याद आ रही थीं और वे सोचते थे कि क्या हमें इस मैदानेजग में गुलगुले और पकौड़ियाँ चखने को मिलेगी ? और फिर वे क्रिसमस के भजन और गाने ?

क्रिसमस की पूर्व-संध्या को एक-दो अंग्रेज टामियों (सैनिकों) ने भजनो की पुरानी कड़ियाँ गुनगुनाना शुरू कीं। धीरे-धीरे आवाज ऊँची होने लगी, और आश्चर्य के साथ उन्होंने सुना कि 'शत्रु'-सेना की ओर के सैनिक भी उनके साथ ही गा रहे हैं। अवश्य ही शब्द भिन्न थे, पर उनके अर्थ एक ही थे। ये आदमी जो एक-दूसरे को मारने के लिए वहां लाये गये थे, जब साथ-साथ स्वर-सामञ्जस्यपूर्वक गा रहे थे, तो, उनके दिल युद्ध-भूमि से बहुत दूर थे। प्रत्येक की आँखों में उसका घर, उसकी पत्नी, उसकी मा, प्रेमिका एवं बच्चे नाच रहे थे। इसके बाद वे एक-दूसरे को 'सिगनल' (इशारा) करने लगे। बधाई-सूचक संदेश भेजने लगे। वे इसका कायदा ('कोड') जानते थे। लकड़ी के एक छोटे टुकड़े-द्वारा 'लड़ाई बन्द' (Cease fire) का भाव प्रदर्शित किया गया। तब उन्होंने सिगनल किया कि, "हम सब घर क्यों न चले जायँ ?" फिर उधर से प्रश्न हुआ –"सिगरेट लेना पसन्द करेंगे ?" और उसका यह उत्तर –"हाँ, हाँ, हमारे खत्म होगये हैं। यद्यपि हमारे पास चाकलेटों–एक मिठाई–के ढेर पड़े हैं। थोड़ा लेना।" इस तरह बम फेकने की जगह वे एक-दूसरे पर उपहारों की वर्षा करने लगे। उन्होंने खाइयों से सिर बाहर निकाले कि जरा एक-दूसरे की शक्ल अच्छी तरह देखे,

और जो कुछ उन्होंने देखा उससे उनको बडी खुशी हुई, क्योंकि दोनों तरफ के ज्यादातर सैनिक सुकेशी, नीलाक्ष एव स्वस्थ तथा प्रसन्नवदन युवक थे। वे आगे बढ़े और सीमा के पास, जिसपर किसी पक्ष का अधिकार न था ('No man's land'), एकत्र होकर बातचीत करने लगे।

प्रधान छावनी को खबर लगी। 'भ्रातृत्व का प्रदर्शन!' उनके मुख से निकला और ओठो पर यह शब्द अत्यन्त घृण्य और भयानक रूप में प्रतिध्वनित हुआ। जिन अफसरों के बारे मे यह खयाल किया जाता था कि वे ऐमी वाहियात भाव-प्रवणता को नहीं बर्दाश्त कर सकते, वे भेजे गये। ये सैनिक मित्र तुरन्त अपनी-अपनी खाइयों में बुलाये गये। सैक्सन सैनिक दूसरी जगह भेज दिये गये और उनका स्थान 'प्रशन' सैनिकों ने लिया और बडे दिन का अन्त होते-होते तक चतुर्दिक घृणा के गीत का ताण्डव होने लगा

"ईसा–क्राइस्ट–में ही हमारी शाति है, जिसने हम दोनों को एक बनाया और जिसने उन सब बन्धनो को तोड़ दिया है जो हमको अलग किये हुए थे।"*

बाइबिल की यह भविष्यवाणी एकाएक सत्य सिद्ध हुई, पर सत्य को तुरन्त दबा दिया गया।

० ० ० ०

---

* 'Christ is our peace, who has made both of us one, and destroyed the barriers which kept us apart"

[Eph 2 14]

उधर देश में हज़ारो नवयुवकों को सैनिक शिक्षण दे-देकर, युद्ध में आहत लोगों का स्थान लेने के लिए तैयार किया जा रहा था। इन हताहतों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही थी। नये रंगरूट किरचें चलाने का अभ्यास कर रहे थे। ड्रिल सार्जेन्ट ने भूसे के कसे हुए बडे-बड़े बण्डल सामने एक कतार में लटका रक्खे थे, जो शत्रुओं की तोंद के भद्दे नमूने थे। इन लड़कों को सिखाया जा रहा था कि कैसे किरचों को भोंकना और उसके बाद कलाई को तेजी से घुमाना चाहिए ताकि पेट की आँतों को फाड़ती हुई किरच बाहर आजाय। कुछ लड़के दृढ़ निश्चय पर क्षीण उत्साह से आज्ञा का पालन कर रहे थे। सार्जेन्ट उत्साहित करता हुआ बोला—"हाँ, ज़रा बढ़कर! अरे, जरा अपने अन्दर जीव न डालो, जीवन! बस, खयाल करो कि तुम एक पाजी जर्मन को मार रहे हो!" लड़कों ने अपने ओठ जोर से चबाये और फिर प्रयत्न किया।

° ° ° °

कैसर के एक चैपलेन (पादरी) का मन फ्रास और इंग्लैण्ड के मित्रों की ओर, जिनमें सब क्राइस्ट के सच्चे प्रेमी थे, दौड़ रहा था। वह कैसे उन्हें घृणा करे? क्राइस्ट के प्रति बेवफा होकर पितृभूमि (फ़ादर-लैण्ड) के प्रति वफादारी दिखाना कैसे सभव हो सकता है? उसने अपने दिल की बाते जोरों के साथ कहीं। उसकी घोषणा की प्रतिध्वनि, उसके देश की अपेक्षा, अन्य देशो और अन्य पीढियों में अधिक हुई।

° ° ° °

लन्दन में १६ वर्ष का एक लड़का था। अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत लम्बा था। इंग्लैण्ड ने उसे जीवन में कोई विशेष सुविधा

नहीं प्रदान की थी। जब वह बच्चा था, उसके पिता असाध्य रोगो के अस्पताल मे भेज दिये गये थे और उसकी माता उसका भार सम्हालने मे असमर्थ थी। उसकी बूढ़ी दादी उसे अपने घर ले गई और उसके पालन-पोषण में अपनी परवा न की। अब वह काम करनेलायक होगया था। उसने युद्ध की खबर पढी। सरकार-द्वारा प्रचार-कार्य का सगठन किया जा रहा था और मित्र-राष्ट्रों के सामरिक उद्देश्य पर लोकप्रिय व्याख्यान देनेवालों को काफी पुरस्कार दिया जा रहा था। इन व्याख्यानो मे जर्मन सैनिकवाद के विरुद्ध मित्र-राष्ट्रों के युद्ध मे शरीक होने के महान् आदर्शों और धार्मिक रूप की चर्चा होती थी। रंगरूट भरती करने के लिए भी जगह-जगह व्याख्यान कराये जा रहे थे। सरकारी विभागों-द्वारा धर्मोपदेश के खाके तैयार कराके सब प्रकार के पादरियो, धर्मोपदेशकों के पास भेजे जाते थे और उन्हे बताया जाता था कि किस प्रकार युद्ध-ऋण में रुपया लगाने के लिए वे अपने श्रोताओं पर प्रभाव डाल सकते हैं। बहुतेरे धर्मोपदेशकों को, अपने श्रोताओ को समझाने के लिए, इस सरकारी आश्वासन की आवश्यकता न थी कि युद्ध प्रभु के राज्य के लिए लड़ा जा रहा है।

इस लड़के को भी विश्वास होगया कि यह युद्ध पवित्र एवं धार्मिक है, और उसे ऐसा जान पड़ा मानों वह इससे अलग नही रह सकता। वह भरती-कार्यालय में गया और (चूँकि उसकी उम्र कम थी) ज्यादा उम्र बताकर सैनिक बन गया। सैनिक शिक्षण के बाद वह लड़ाई पर भेजा गया और वहाँ घायल हुआ। उसके आदर्श भूल गये, पर चूँकि अपनेको शान्त एवं विश्वसनीय रख सका, उसे एक खास तरह के काम

पर तैनात किया गया। उसे सैनिक पुलिस का कार्य दिया गया। इस काम के सिलसिले में उसे सेना के उपयोग के लिए रक्खी गई वेश्याओं के आसपास निगरानी रखनी पड़ती थी और यह देखना पड़ता था कि सैनिक ज्यादा देर तक अन्दर (वेश्याओं के साथ) न ठहरें। अगर वे देर करें तो उसका कर्तव्य था कि अन्दर जाकर उन्हे बाहर घसीट लाये। इन दृश्यों को देखते रहने के कारण पवित्र एव धार्मिक युद्ध की उसकी भावना में परिवर्तन हो गया।

० ० ० ०

एक दिन एक जर्मन नगर में भीड़ लगी हुई थी। लोग आकाश की ओर प्रसन्नता से देख रहे थे। बात यह थी कि एक अंग्रेजी हवाई जहाज रास्ता भूलकर इधर आ निकला था और अपने विनाश की ओर अग्रसर हो रहा त्रा। जर्मन जहाज उसे चारों ओर से घेर रहे थे और ज्यों-ज्यो वह अकेला हवाई जहाज़ उनके चंगुल में फँसता जा रहा था त्यों-त्यों लोगों की उत्कण्ठा बढ़ती जाती थी। इसी भीड़ में एक अधेड़ जर्मन सौदागर भी था।

अन्त में, लोगो की तीव्र हर्षध्वनि के बीच, वह जहाज गिरफ्तार करके नीचे लाया गया। किन्तु वह अधेड़ जर्मन सौदागर खुशी न ज़ाहिर कर सका। वह उस उड़ाके को इंसान के रूप में देख रहा था, शत्रु के नहीं। उड़ाके की वायुयान-कला-कुशलता के लिए उसमें सम्मान का भाव था और उसका शान्त, निरुद्वेग साहस देखकर उसे खुशी थी। जब नागरिकों की भीड़ से हर्ष पर हर्ष प्रकट किया जा रहा था तब इस अधेड़ के दिल की गहराई से आवाज निकली—"वीर

आदमी !" उसने इसे दोहराया । पास खडे भीड के लोगो ने अपनेक अपमानित समझा और वे क्रोध मे भर गये । वह बेचारा जासूस समझा जाकर, जाँच के लिए, पुलिस स्टेशन लेजाया गया ।

जैक और बिल दोस्त थे। दोनो सेना में थे। इनमे से एक युद्ध-सम्बन्धी भगदड़ मे काँटेदार तारों से उलझ गया। उसके मित्र ने हाथ और घुटनों के सहारे घिसटते हुए वहाँ जाकर उसे निकाल लाना चाहा, पर उसके अफसर ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया। उस बेचारे ने बड़ी आरजू-मिन्नत की, कहा, 'मै अपने मित्र को छोड नहीं सकता, वह खून से लथपथ होरहा है और मर जायगा। हम दोनो की प्रतिज्ञा है कि अगर एक मुसीबत मे फॅस जाय तो दूसरा उसका साथ देगा।' पर अफसर ने उसे जबरदस्ती रोका। कहा—'वहाँ जाने से क्या फायदा होगा ? इसका मतलब सिर्फ मृत्यु है। और बिल तो मर ही रहा है। एक सिपाही का धर्म लडना है, जान-बूझ कर मर जाना नही। अपनी जिन्दगी को इस तरह नष्ट करना एक सैनिक अपराध है।' इत्यादि-इत्यादि।

पर ज्यों ही अफसर वहासे हटा, जैक निकल भागा। चारों ओर गोलियों की भयानक वर्षा होरही थी। उसे भी गोली लगी, पर उसने इसकी परवा न की। अन्त मे वह बिल के पास पहुँच ही गया। पर उसे उलझे तारों से निकालना कठिन काम था। उसने जान हथेली पर रखकर काम शुरू किया। किसी तरह तारो से उसे निकाला और पीछे हटा कि दूसरी गोली लगी। दोनो मित्र पास-पास पड़े थे। बिल के प्राण निकल रहे थे, पर उसने बलपूर्वक

हँसी हँसते हुए कहा—"मै जानता था कि तुम आओगे।" और ठण्डा होगया।

० ० ० ०

किरचो की लड़ाई के पहले नियमित रूप से और बड़ी उदारता-पूर्वक सैनिको को 'रम' (किशमिश से बनाई जानेवाली एक प्रकार की शराब) पिलाई जाती थी। उनमें कोई साहस या स्फूर्त्ति लाने के लिए नही। इसका प्रयोग इसलिए किया जाता था कि उनकी अनुभव-शक्ति कम होजाय, जिससे वे आदमियों के मारने के बारे में कुछ विचार न करे। शराब न पीने वालों की बुरी दशा थी। उनमें से बहुतों ने केवल आत्म-रक्षा के खयाल से अपना सिद्धान्त छोड़ दिया; उन्होंने सोचा, पागल हो जाने से तो जरा पी लेना ही अच्छा है।

आक्सफर्ड स्ट्रीट में एक बूढी महिला छुट्टी पर घर आये हुए एक सैनिक से मिली। सैनिक ज्यादा पिये था; इससे बुढ़िया को चोट लगी। घर के लोग तो यह समझते थे कि हमारे सब सैनिक उतने ही उच्चाशय और महामना हैं जैसे जर्मन पशु और क्रूर हैं। बेचारी उस सैनिक के पास गई और बोली—"नवयुवक, तुम इतने थोड़े दिन के लिए इग्लैण्ड आये हो। मै तुम्हे इस बुरी हालत मे देखना पसन्द नहीं करती।" सैनिक ने उस महिला की ओर देखा। महिला के उसकी ओर देखने के ढग मे कुछ ऐसी बात थी कि उसने सैनिक का विवेक जाग्रत कर दिया। उसने कहा—"श्रीमतीजी, क्या आप जानती हैं कि पॉच ही दिन हुए होंगे जब मेरी किरच की नोक पर एक मनुष्य झूल रहा था? और आप जानती है पॉच दिन बाद शायद मुझे दूसरे आदमी

के कलेजे में किरच भोंकनी पडे ? अब मुझे बताइए, क्या आप इस तरह का काम होश-हवास दुरुस्त रहते हुए करने की आशा मुझसे करती हैं ?"

० ० ० ०

निम्नलिखित शब्द एक पत्र से उद्धृत किये गये हैं, जो फरासीसी रेड क्रास को अक्तूबर १६१४ ई० में एक मृत जर्मन सिपाही के पास से मिला था :—

"मेरे प्रियतम प्राण, जब छोटे बच्चों ने प्रार्थना करली है और अपने प्रिय पिता के लिए प्रभु से प्रार्थना करने के बाद सो गये हैं, तब मैं बैठी हुई तुम्हारे बारे में सोच रही हूँ। मैं हम लोगों के आनन्द-पूर्ण विवाहित जीवन के बारे में सोचती हूँ। ऐ लुडविग, मेरी आत्मा के प्यारे, लोग एक-दूसरे से क्यों युद्ध करते हैं ? मैं यह नहीं सोच सकती कि परमात्मा इसे चाहता होगा।"

० ० ० ०

उत्तरी फ्रास के एक नगर के समीप पड़ाव डाले हुए एक जर्मन सेना में एक युवक जर्मन रसायनशास्त्री कार्य करता था। उसका काम यह था कि अगले आक्रमण में जिस विषैली गैस की सभावना हो उसकी प्रतिकारक चीज ढूढकर तैयार रक्खे। इस प्रकार विज्ञान की सब प्रकार की सुविधाओं का इस्तैमाल वह जर्मन सैनिकों का दुःख-दर्द दूर करने में करता था। ऐसे उपयोगी काम मे लगा रहने में उसे सुख था। किन्तु जब महीने पर महीने बीतने लगे, उसे दो बातों का अनुभव हुआ। एक तो यह कि जिन आदमियों की मैं रक्षा करता हूँ, उन्हे चगा करता है, वे पुनः उसी प्रकार की पीडा बर्दाश्त करने को भेजे जाते हैं।

यदि मैं अपनी बुद्धि उनको चगा करने में न लगाता तो वे घायल या असमर्थ हो जीवन भर घर रहते। दूसरी बात यह कि जब मैं एक खाँसते हुए पीडित गरीब जर्मन के पास बैठा हुआ जो कुछ सुख उसे पहुँचा सकता हूँ, वह पहुँचा रहा हूँ, तब मेरी ही वैज्ञानिक चिकित्सा के प्रत्यक्ष फल-स्वरूप कितने ही अज्ञात फरासीसी सैनिक इसी प्रकार के दुःख-दर्द से विकल अस्पतालो में पड़े अपने फेफड़ों के खराब हो जाने से खाँस रहे हैं। वह युवक रसायनशास्त्री जितना ही इसपर विचार करता गया उतना ही उसका हृदय अवसादयुक्त एवं गंभीर होता गया और उतना ही वह अपनेको सूना और इकला अनुभव करने लगा। १५ वर्ष बाद, अहिंसा-आन्दोलन के एक सदस्य की हैसियत से वह उस नगर में गया और वहाँके निवासियों के सामने अपने अपराध क़बूल किये।

° ° ° °

चिन्ताशीलता, विचार, ध्यान इत्यादि को युद्ध में उत्तेजन नहीं दिया जाता। यद्यपि यह बात वाहियात मालूम होगी, पर यह सच है कि इनसे युद्ध ख़तरे में पड़ जाता है। ये बाते राष्ट्रीय अभिप्राय को विशृंखल कर देती हैं। परन्तु बुरा हो उस राष्ट्र का जिसका अभिप्राय ऐसा हो कि वह स्पष्ट, खुले आम, प्रकट किये जानेवाले विचार का गला घोंट दे। कोई भी बदूक का घोड़ा चढा सकता है, बम चला सकता है, या विषैली गैस छोड़ सकता है। पर दूसरों के जीवन पर, तथा हमारे ही देश में और प्रकार के क्षेत्रों पर, ऐसे कार्य का क्या असर पड़ता है, इसे देखना हमारा कर्त्तव्य है। इन बातो पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होजाता है कि केवल ईश्वर का ही नियम चल सकता है।

: ३ :

स्वदेश में

अहिंसा सत्य पर आश्रित है। उसे सचाई से अलग नहीं किया जा सकता। यह जबर्दस्ती नहीं ग्रहण की जा सकती और न इसका पाखंड किया जा सकता है। जबतक संघर्ष, वेदना और आत्मोत्सर्ग-द्वारा यह आपके व्यक्तित्व में मिलकर आपके अस्तित्व का ही अंग न बन जाय, तबतक यह चल नहीं सकती। नीति (पालिसी) या क्षणिक उपाय के रूप में अथवा उपयोग के लिए पड़े अनेक अस्त्रों में से एक अस्त्र के रूप में इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता।

जिन्होंने मन से हिंसा का त्याग नहीं किया है, वरन् केवल शरीर को निःशस्त्र बना लिया है और समझते हैं कि हम अहिंसा का उपयोग कर रहे हैं, वे अपनेको बड़ा धोखा दे रहे हैं। जबतक असंतोष, क्रोध, द्वेष, उपेक्षा, दंभ अथवा कटुता विद्यमान है, आपके कार्य में अहिंसा का केवल आभास रहेगा, उसकी विजय नहीं हो सकती। यह तो बहुत करके 'लांगीनस के भाले' (Longinus' Spear) † की तरह है।

---

† पौराणिक गाथाओं के अनुसार यह भाला सलवात पर्वत पर बने रक्त भाण्ड (Holy Grail—वह प्लेट जिसमें अंत में क्राइस्ट

जो अपवित्र है उसके हाथ मे जाकर यह बेकार हो जाती है। अत्यन्त वीर ही इसका उपयोग कर सकते हैं।

ज्योंही महायुद्ध छिड़ा, सत्य आहतो की सूची में प्रकट हो गया। और ऐसा सदा ही होता है। यह हमारी मानव-प्रकृति की तात्विक कल्याण-शीलता का एक प्रमाण है कि लड़ने वाले, युद्ध जारी रखने के लिए असत्य की शरण लेते हैं। बिना इसके एक सम्पूर्ण राष्ट्र की जनशक्ति अथवा मस्तिष्क, समय, धन एव प्रार्थना का सामूहिक सगठन युद्ध के लिए किया ही नहीं जा सकता।

- सन् १९१४ ई० में झूठ का व्यापार शत्रु-द्वारा की जाने वाली काल्पनिक क्रूरताओं से आरम्भ हुआ। यह प्रचार किया गया कि बच्चों

ने भोजन किया था और जिसमें क्रूस पर चढ़ने के बाद जोसेफ ने उनका रक्त एकत्र किया था) के मन्दिर के भाण्डार का एक मूल्यवान सग्रह था। क्रूस-स्थित ईसा के बग़ल में यह भाला भोंका गया था। तबसे यह वहीं घायल कर सकता था जहॉ पाप हो। यह असल में ग्रेल के बादशाह के पास था, पर एक बार उसकी असावधान अवस्था मे जादूगर क्लिंज़गसर ने उसे उड़ा लिया। इसने वर्षों तक बड़े अभिमान-पूर्वक इस शस्त्र के स्वामित्व का प्रदर्शन किया था। इसी समय पर्सीफाल नामक युवक क्षेत्र में आया। इसी वीर के द्वारा जादूगर के लोभी अपवित्र हाथों में पड़ी हुई जीवन की सुन्दर एवं लाभप्रद वस्तुओं का उद्धार होना था। जादूगर ने इसे दूर खड़े देखा और अपने क़िले की मीनार पर खड़े होकर उसने वह भाला जोर से पर्सीफाल पर

के हाथ कतर लिये जाते हैं, भिक्षुणियों (Nuns) का सतीत्व नष्ट किया जाता है, आदमी सूली पर चढाये जाते हैं एक जहाज को गोले से छिद्रमय करके पनडुब्बी (सबमेरीन) के खलासी लहरों मे डूबते-उतराते तथा अपनी जान के लिए व्याकुल होकर चेष्टा करते हुए आदमियों का तमाशा देखते, हँसते, उनका मजाक उड़ाते हैं। युद्ध की समाप्ति के बाद कहीं इन बातों के सदेहजनक स्रोत का पता लगा। पर युद्ध के समय तो लोग इन्हें ही धार्मिक सत्य की तरह मान लेते थे। अखबार इन्हे निश्चित एव अबाध सत्य के रूप में ग्रहण कर लेते थे। जाली फोटोग्राफ तक बनाये जाते थे, जिनमें पीड़ित का नाम एव जातीयता को स्वेच्छानुकूल भरने के लिए जगह खाली रक्खी जाती थी।

सामरिक प्रचार-कार्य तो एक लाभप्रद व्यापार बनगया था।

चलाया। पर पर्सीफाल को तो इस आक्रमण की खबर भी न थी। वह लुभाने के लिए आई सुन्दरी मायाविनी की ओर पीठ किये अपनी तलवार की क्रूसनुमा मूठ पर झुका हुआ था, अपनी वासनाओं पर काबू पाने का प्रयत्न कर रहा था, क्योंकि वह जानता था कि इसीमें उसका एव उस स्त्री का भी कल्याण है। अभीतक क्रास लिये हुए प्रत्येक आदमी तथा प्रत्येक कल्याणकारी चीज की वह हँसी उड़ाती थी। शताब्दियों से वह मनुष्यों के स्वास्थ्य, यश और विवेक का हरण कर रही थी। इस प्रकार अपने दुर्भाग्य से थकी हुई उस स्त्री की न तो मौत होती थी और न तबतक वह शान्ति ही प्राप्त कर सकती थी जबतक

कर्नल रेपिंगटन अपनी पुस्तक महायुद्ध की डायरी' (Diary of the Great War) के भाग २ पृष्ठ ४४७ पर लिखते हैं:—

"मुझसे कार्डिनल गैस्के (Cardinal Gasquet) ने कहा कि पोप ने वादा किया हैं कि बेलजियन भिक्षुणियो के साथ बलात्कार करने या बच्चों के हाथ काटने का यदि एक भी उदाहरण साबित कर दिया जाय तो मै ससार के समक्ष इसका प्रबल विरोध करूँगा। फलतः जॉच कराई गई और बेलजियम के कार्डिनल मर्सर की सहायता से अनेक केसों की छानबीन कीगई, पर एक उदाहरण भी सत्य सिद्ध न किया जासका।"

श्रीयुक्त नित्ती, जो महायुद्ध के समय इटली के प्रधान मन्त्री थे, अपने संस्मरणों में लिखते हैं:—

कोई ऐसा आदमी पैदा न हो जिसके सदाचरण में उसकी बुराइयों से अधिक शक्ति हो—ऐसा आदमी जो उसके प्रलोभनो एवं आकर्षणों को कुचलकर उपर उठ सके। अस्तु, जादूगर का चलाया हुआ भाला आकाश मे झपटता है पर पर्सीफाल के पास जाकर अधर मे लटक जाता है। पर्सीफाल हाथ फैलाकर उसे ले लेता है। बस बुराई (evil) का सारा इन्द्रजाल नष्ट होजाता है और जादू के किले की नीव टूट जाती है। सच पूछे तो बुराई की शक्ति तो अक्सर दिखावट एवं छिछलेपन, सदेह एवं असत् और मिथ्या में ही रहती है। यह उसके प्रति हमारा दुष्ट भय है जिसके कारण उसका हमपर इतना अधिकार होजाता है।

"दुनिया वर्तमान् यूरोपीय दुरावस्था को ठीक-ठीक समझले, इसके लिए यह जरूरी है कि सामरिक प्रचार द्वारा फैलाई हुई झूठी एव विषैली कहानियों का बार-बार खण्डन किया जाय। युद्ध के समय फ्रास ने, अन्य मित्र-राष्ट्रों के साथ मिलकर, जिनमे इटली की हमारी सरकार भी शामिल थी, हमारे देशवासियों में युद्ध या बदले का भाव जागृत करने के लिए बिलकुल वाहियात कल्पित बातें फैलाईं। जर्मनो के अत्याचार की ऐसी-ऐसी कहानियाँ घडकर फैलाई गईं कि सुनकर हमारा खून खौल उठे। हमने सुना कि हूणो—जर्मनों—द्वारा छोटे, कोमल बेलजियन बच्चों के हाथ काट लिये जाते हैं। महायुद्ध के बाद एक धनी अमेरिकन ने जो फरासीसी प्रचार से बड़ा ही प्रभावित और द्रवित हुआ था, बेलजियम में एक अपना प्रतिनिधि इसलिए भेजा कि जिन बच्चों के हाथ काट लिये गये थे उनकी आजीविका का प्रबन्ध मेरी ओर से वह करे। पर वहाँ एकभी ऐसा लड़का न मिला। श्री लायड जार्ज और इटली की सरकार का प्रधान मन्त्री रहने के समय मैंने इन भयानक दोषारोपणों की अच्छी तरह जाँच करवाई। कुछ केसो में तो नाम और स्थान का भी उल्लेख किया गया था। जितने मामलों की जाँच की गई उनमे से अनेक कोरी गप एव कल्पना के सिवा और कुछ न निकला।"*

---

* लार्ड आर्थर पानसनबी-लिखित 'युद्ध-काल में असत्य' (Falsehood in War Time) 216 George Allen & Union, देखिए पृष्ठ ३।

सरकार की और सब प्रकार के स्वच्छ मनोवृत्ति वाले लोगों को आकर्षित करने के लिए कुछ लोगो ने जर्मनों को राक्षसों की भाँति सींग, पूँछ और चगुल से विभूषित करना शुरू किया। यदि शत्रु का क्राइस्ट-विरोधी रूप दिखाया जासके तो सम्पूर्ण राष्ट्र में सामरिक मनोवृत्ति पैदा करदेना सरल होजायगा। जब सेंट पाल (इग्लैण्ड का महान् गिर्जाघर) के डीन (आचार्य) और उनकी सभा ने, गिर्जे के भीतर, 'शान्ति के राजकुमार' (क्राइस्ट) की वेदी के सामने ही एक बड़ी तोप लगाने की आज्ञा देदी तो युद्ध—ज्वर की शक्ति और विस्तार की चरमसीमा होगई। इससे यह मालूम हुआ कि यह रोग अपने आसामियों पर अकस्मात् आक्रमण करके उन्हे कुछ समय के लिए ऊँचा बना देता है और उनकी विवेक एव विनोद-वृत्ति का हरण कर लेता है।

परन्तु शताब्दी के प्रथम चौदह वर्षों में जो जागृति हुई थी, उसमें कुछ सचाई थो। सारे देश में ऐसे अनेक स्त्री-पुरुष थे जो जानते थे कि अखबार सदा सच नहीं लिखते। एक राष्ट्रीय आपदा के समय भी, ऐसे आदमी अकस्मात् अपने बहुत दिनों के पाले हुए विश्वासों का त्याग नहीं कर सके। युद्धकाल में 'पार्वतीय उपदेश' (Sermon on the Mount) को स्थगित करने से उन्होंने इन्कार कर दिया। धर्म को इस प्रकार तोड़—फोड़कर स्वार्थ के अनुकूल बना लेने की अपेक्षा वे उसका त्याग ही कर देना ज्यादा पसन्द करते। वे धर्म का उपयोग चोगे की तरह नहीं कर सकते थे कि मौके के अनुसार जब चाहे पहन लिया और जब चाहे उतार कर रख दिया। उन्होने पहले से ही समझ लिया था कि चाहे क्राइस्ट को खाकी (वर्दी) के साथ जोड़ देना सरल

हो, पर वहाँसे हटा देना अत्यन्त कठिन होगा। उनके लिए मानवीय भ्रातृत्व का भाव केवल उपदेश या भजन मे प्रयुक्त होनेवाले कोरे जबानी जमाखर्च की तरह नही था, वरन् वह एक सचाई थी—एक सच्ची चीज थी।

एक आदमी किसी नदी या समुद्रखण्ड अथवा कृत्रिम रूप से ठहराई हुई सीमा के उसपार पैदा होने के कारण ही अकस्मात् हमारा शत्रु कैसे हो सकता है? दूसरे देश की सरकार के नाम दी जानेवाली चुनौती (Ultimatum) पर, परराष्ट्र-विभाग मे बैठे हुए एक आदमी के हस्ताक्षर करदेने मात्र से चिरतन रुचि-वैचित्र्य में कैसे अन्तर पड़ सकता है? दोनो देशों के सर्वसाधारण का एक-दूसरे से कोई झगड़ा नहीं था। इस प्रकार का दृष्टिकोण रखनेवाले लोग दिसम्बर सन् १६१४ ई० में एकत्र हुए और उन्होंने ('फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलियेशन' † नाम की) एक सस्था बनाई। इस सभा की नींव में यह विश्वास है कि क्राइस्ट की शिक्षा, जीवन एव मृत्यु में प्रकाशित प्रेम ही ससार की शाति का निश्चित आधार हो सकता है। इसके सदस्य युद्ध के स्थान पर क्राइस्ट के प्रेमपूर्ण उपायों की स्थापना की चेष्टा करते हैं।

यद्यपि युद्ध-विभाग द्वारा पर्याप्त रूप में पुरस्कृत अनेक व्याख्याता ऐसे थे जिनके व्याख्यानों मे, किसी भी टाउनहाल मे, अपार जन-समूह देखा जा सकता था और जो लोगों को बताते थे कि जर्मनी जूडा (जूडा—जिसने क्राइस्ट को फँसाया) की जाति यहूदियों का देश है और गोला-बारूद ही इन लोगों के लिए उचित उपहार हैं और प्राचीन

† 'फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलियेशन' १७ रेडलाइन स्क्वायर, लन्दन।

धर्मोपदेश (Old Testament) के अनुसार जर्मन सीमा पर हवाई-जहाज़ों से आक्रमण करना न्यायपूर्ण है तथा यह कि ईश्वर की माँग के अनुसार जर्मनों को मानवीय न्यायालय के सामने झुकाना ही पड़ेगा; परन्तु डाक गेट्स (धक्के के दरवाज़ो) तथा विभिन्न गलियों के नुक्कड़ों पर तथा बग़ीचो में भी, प्रति सप्ताह उन अपुरस्कृत व्याख्याताओं को सुनने के लिए अच्छी सख्या में लोग एकत्र होते थे जो मानवीय प्रकृति में निहित मूल; सार्वदेशिक और चिरंतन तत्वों को अपील करते थे।

० ० ० ०

लड़ाई में शामिल होने की लार्ड किचनर की अपील का राष्ट्रव्यापी प्रभाव हुआ। हरेक जगह सुदर्शन रगो में छपे हुए अच्छे-से-अच्छे 'डिज़ाइन' के पोस्टर चिपकाये गये थे कि जिसने अभीतक सैनिक पोशाक न धारण की वह भी जल्द-से-जल्द करले एक निश्चिन्त, प्रसन्न और पूर्ण स्वस्थ सैनिक की तस्वीर दीवारों, बसों एवं अन्य प्रमुख स्थानों से लोगों को आकर्षित करती थी! इसके नीचे ये शब्द होते थे—"वह आराम से और प्रसन्न है ; क्या तुम भी ऐसे हो?" दूसरी आकर्षक तस्वीर ४० वर्ष के एक अधेड़ चिन्ताग्रस्त आदमी की थी जिसका छोटा लड़का अपनी इतिहास की पुस्तक से सिर उठाकर भोलेपन से पूछता है—"बाबू जी, आपने महायुद्ध में क्या किया था?" इन सब प्रलोभनकारी प्रचारों के होते हुए भी युद्ध से अलग रहनेवाले लोग भी थे।

अनिवार्य सैनिक सेवा का नियम (Conscription) हमारे सिर पर मँडरा रहा था। हमारे संस्कार सब इसके विरुद्ध हैं, क्योंकि सदियों से स्वयं- सेवा हमारे जीवन की कुञ्जी रही है। इसलिए इस

क़ानून के विरुद्ध लार्ड और किसान, खनिक और अध्यापक, दूकानदार और बुद्धिमान, कारखाने में काम करनेवाली लड़की और शिक्षा-शास्त्री सब अपनी एक सभा (No Conscription Fellowship—अनिवार्य सैनिकता-विरोधी भ्रातृसघ) बनाकर उठ खड़े हुए।

एक आदमी द्वारा दूसरे भाई का मारा जाना कुछ लोगों को ऐसा ही लगा जैसे लोगों में जबर्दस्ती वेश्या-वृत्ति जारी की जाय। इस प्रकार की जबर्दस्ती का क़ानून व्यक्तित्व का विनाशक था, जिसका परिणाम नागरिकता की श्रेणी का पतन और जीवन के मूल्य का विनाश छोड़कर और क्या होता ?

पर, इन विरोधों के होते हुए भी सन् १६१६ ई० में अनिवार्य सैनिक सेवा (Conscription) का क़ानून जारी कर ही दिया गया। यह घटना ब्रिटेन के इतिहास में बड़े मार्के की है। इस नये क़ानून के मुताबिक न्याय-समितियाँ (ट्रिब्यूनल) बैठाई गई जिनके सामने युद्ध-विरोधी लोग भरती से इन्कार करने के कारणों का उल्लेख कर सकते थे। यदि उनके बताये कारण काफी वजनदार समझे जाते तो उन्हे आंशिक या पूर्ण छूट देदी जाती थी। इन समितियों (ट्रिब्यूनल्स) पर बैठनेवाले सिविलियनों के सामने एक अजीब समस्या थी। उनसे आशा कीजाती थी कि वे सच्चे युद्ध-विरोधियों (युद्ध के प्रति आत्मिक या धार्मिक अविश्वास रखनेवालों) एवं बहाना करनेवालो को अलग छाँट सकेंगे; परन्तु होता यह था कि वे इस बात में ज्यादा समय गँवाना पसन्द न करते थे। सेना के एक-दो प्रतिनिधि हमेशा वहाँ प्रश्न पूछने के लिए तैयार रहते थे। वे प्रायः सब युद्ध-विरोधियों से एक ही प्रश्न करते

थे—"कल्पना करो कि तुम एक जर्मन को अपनी दादी पर आक्रमण करते देख रहे हो; क्या तुम अलग खड़े तमाशा देखते रहोगे ?"

इन समितियो के सामने लाये जानेवाले आदमियों में से कुछ के मनोभाव के साथ अधिकारियों की रुक्ष, अनुदार एवं पारस्परिक मनोभावनाओं की तुलना असाधारण रूप से मनोरंजक प्रतीत होती थी। अधिकारी समझते थे कि ये गहरे विचारशील, अत्यन्त अनुभवी और आध्यात्मिक मनोवृत्तिवाले युद्ध-विरोधी सब बातों एव स्थितियों को न समझ सकने के कारण ही ऐसा (युद्ध-विरोधी) रुख ग्रहण कर रहे हैं।

(उन्हे जानना चाहिए था कि) स्त्री-पुरुष अपने साथी नागरिकों से अलग होकर बाहर आने के प्रश्न को हँसी-खेल नहीं समझते; वे खूब विचार के बाद ही, जब वैसा करने के गभीर कारण होते हैं तभी, ऐसा करते हैं। अपनी प्यारी-से-प्यारी वस्तुओं को छोड़कर, लोगों की उपेक्षा एवं संदेह, घृणा एवं सामाजिक बहिष्कार का शिकार होना तथा अपने मताधिकार, अपनी जीविका और अपनी स्वतन्त्रता का त्याग करना हँसी-खेल नहीं है, न सबका काम है, और इसके बड़े ही गम्भीर कारण हुआ करते हैं।

कभी-कभी सारे नगर में केवल एक ही युद्ध-विरोधी होता था—एक ग़रीब अशिक्षित आदमी, जिसके लिए टाउनहाल या पुलिस कोर्ट में अधिकारियों एवं जन-समूह के सामने खड़े होकर यह बताना कि क्यों वह एक नगण्य आदमी सम्पूर्ण चर्च, राष्ट्र तथा साम्राज्य के संगठन के विरुद्ध अपनी निजी सम्मति लेकर खड़ा हुआ है, अत्यन्त कठिन काम था। इसकी अपेक्षा अपने सिद्धान्तों को छोड़कर धारा का साथ देना,

'तुममें हम भी हैं' कहना और बहुमत के बधुत्व का आनन्द लेना कहीं सरल था। पर वे बराबर अपने मन में प्रश्न करते थे कि क्या हुआ; हमारे राष्ट्र के इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब आपद्काल में थोडे-से व्यक्तियों को दृढतापूर्वक अत्याचारी एव दभी के मुकाबले में खडा होना पड़ा था। क्या हुआ यदि चार्ल्स प्रथम के समय मे पार्लमिंट की साधारण सभा (हॉउस-ऑफ कामन्स) में अध्यक्ष (स्पीकर) को उसके आसन पर रखनेवाले चार भी अच्छे एव सच्चे आदमी नहीं मिले थे।

चाहे कितना ही खराब समय हो, कितना ही अँधेरा काल हो, और कितना ही शिथिल विश्वास हो, क्राइस्ट (ईसा) के अनुयाइयों के इतिहास में ऐसे एक-न-एक आदमी हमेशा निकलते आये हैं जिन्होंने अपनी दृष्टि को स्वच्छ रक्खा, अपने धर्म-विश्वास और आचरण में समानता रक्खी। पीटर ने तीन बार साथ छोड़कर भी अन्त में, क्राइस्ट का मृत्यु तक अनुगमन करने का निश्चय किया था।

इस प्रकार जिन युद्ध-विरोधियों को छूट न मिलती फिर भी जो अपने विश्वास के विरुद्ध चलना पसन्द न करते, वे पहरे के अन्दर सैनिक छावनियों में भेजे जाते और फिर वहाँ से सिविल जेल में लेजाये जाते थे। स्त्रियॉ रेकर्ड-विवरण-रखतीं; ऐसे कैदियों की पत्नियों एव उनके कुटुम्बों को देखने जातीं; खुली जगहों में सभायें करतीं और जब जेल की कोठरियो से या सेना के सन्तरियों से छनकर कोई खास खबर आती तो उसकी छानबीन करतीं, बीच में पड़कर उसका निबटारा करातीं। प्रथम अध्याय मे जिस माली के लड़के का ज़िक्र किया गया है

उसे यह साफ-साफ़ कह दिया गया कि तुम अंग्रेज़ स्कूली बच्चों को अब शिक्षा नही देसकोगे। वह ऐसा आदमी न था कि अपने विश्वास एव कर्तव्य को छोड़कर सैनिक यत्र का पुर्जा बनजाता। वह जॉच-समिति (ट्रिब्यूनल) के सामने पेश किया गया और समिति ने यह निर्णय किया कि उसे छूट नही दी जासकती। फलतः वह पहले बैरक मे लेजाया गया और वहॉ से जेल भेज दिया गया। यहॉ उसने जेल-जीवन का इस विचार से मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया कि पीछे अपने ही जैसे अन्य राजनैतिक कैदियों के साथ शामिल होकर जेल-सम्बधी सुधारों में शीघ्रता करने का आन्दोलन किया जाय।

एक दिन मुझे एक अपरिचित प्राइवेट सैनिक का एक पोस्टकार्ड मिला। उसपर निम्नलिखित शब्द लिखे थे—"कुमारी, यदि तुम इस ए० बी० कैदी को जानती हो जो हमारे पास है, तो ईश्वर के नाम पर उसके लिए कुछ करो। वे (अधिकारी) उसके साथ रोमाचकारी व्यवहार कर रहे हैं।" इस क़ैदी की बॅधी कलाइयो में एक बड़ी बालटी बॉध दी गई थी, जिसमें २८ सेर रेत भरदी जाती थी और उसे पत्थर की सीढ़ियों से नीचे लेजाने का हुक्म होता था। अपनी खतरनाक उतराई को आरंभ करने के लिए उसे एक ठोकर दीजाती थी। यह क़ैदी प्रथम अध्याय में उल्लिखित 'वैट फैक्टरी' का श्रमिक था।

इसी प्रकार दस आदमियो को मृत्यु-दण्ड देकर गोली से मार देने के लिए फ्रास भेजा गया, पर समय पर जनता में आन्दोलन होने के कारण यह दुर्घटना न हो सकी।

कोई इन छोटे-छोटे कष्टों की युद्धक्षेत्र में वीरता-पूर्वक सहन किये जानेवाले कष्टों से तुलना करने की कल्पना न करेगा, किन्तु स्वयं

टामियों (अंग्रेज सैनिकों) ने किंचित् अत्युक्ति और अपनी स्वभाविक उदारता के साथ अनेक बार कहा है–"मै! मै तो इन सब बातों के विरूद्ध खड़ा होने का साहस कभी न कर सकता। मैं चाहता हूँ कि मुझमें इतना साहस होता। ये आदमी मुझसे कहीं ज्यादा वीर हैं।"

पुरुषों की तरह स्त्रिया भी जेल गई। साम्राज्य-रक्षा कानूनों (Defence of Realm Act) के अनुसार सैनिको को ऐसे पर्चे बॉटना जिससे भरती को धक्का पहुँचे, जुर्म था। बाइबिल के उद्धृतांशों को भी कुछ लोग शाति सम्बन्धी (युद्ध-विरोधी) खतरनाक प्रचार समझते थे। हमे खुशी थी कि यह बात प्रगट तो होगई। जिनके हाथ में अधिकार था, वे हमारे लगातार प्रतिरोध को पसद नहीं करते थे। सर आर्किबाल्ड बाडकिन ने, जो इस समय सम्राट्-सरकार के एक प्रधान कानूनी अधिकारी थे, विशेष रूप से तैयार की हुई एक वक्तृता दी। पर जिसे वह सबसे प्रभावशाली भाग समझते थे उसकी शब्दावली उन्हीं-के मतलब के लिए बिलकुल अभागी—खराब—सिद्ध हुई। उससे उलटा हम लोगों का उद्देश्य सधा। इसलिए हम लोगो ने पोस्टरों में बड़े-बड़े अक्षरों में उसे छापा और स्थान-स्थान पर उसका प्रदर्शन किया। उनके शब्द ये थे—"यदि व्यक्ति लड़ने से इन्कार करना शुरू करते हैं तो युद्ध असभव हो जायगा।" एक सरकारी अधिकारी के लिए इस तरह की ग़लतियों से बच जाना बड़ा ही कठिन है। जो आदमी सबके विरुद्ध किसी खास बिन्दु पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित करने को मजबूर हो वह चारों तरफ से ठीक-ठीक किसी बात को देखने का अवसर कैसे पा सकता है? ऊँचे क्षितिज पर से देखने पर

आदमी को उसकी, चारों ओर की, परिस्थिति उतनी सच्ची नहीं दिखाई पड़ती। उस अवस्था में जो विरोध मालूम पड़ता है वह अग्रभूमि एवं पार्श्वभाग दोनों को स्पष्ट कर देता है। सेना के प्रतिनिधि जब दादी पर आक्रमण होने की बात पूछते हैं तब जर्मन हमारे ध्यान में आता है। महीने-पर-महीना, साल-पर-साल बीतता है, पर सैनिक अधिकारी इसी प्रश्न को उस बच्चे की तरह बार-बार पूछता है जिसने किसी प्राचीन समस्या का उत्तर देना अभी-अभो सीखा हो। इतने पर भी बहुत सभवत: इस प्रकार का अधिकारी कभी-कभी, जैसे हफ्ते में एक बार, तो अपनेको ऊचे क्षितिज से देखने का अवसर देता ही है। वह एल्डर,* डीकन‡ या रविवार-पाठशाला के अध्यापक में से कोई भी हो सकता है। वह क्राइस्ट का सम्मान करता है, जिसने एक दिन कहा था कि क्रूस पर चढ़ने के बाद मै सबको अपनी ओर आकर्षित करूँगा—जिसने सिखाया था कि प्रेम, सच्चे, स्थायी, निष्ठायुक्त प्रेम का, जो क्षमा करना ही जानता है और जो यह नही गिनता कि मेरे विरुद्ध कितने पाप किये गये हैं, ऐसे प्रेम की शक्ति का प्रतिरोध अधिक काल तक

---

* एल्डर—प्रेस बाईटेरियन चर्च (ईसाइयों का एक उपासना सम्प्रदाय, जिसमे सब पादरी बराबर समझे जाते हैं और चर्च का शासन इसी सिद्धान्त पर चलाते हैं) में एक प्रकार के पादरी या धर्मोपदेशक।

‡ डीकन—एपिस्कोपल (बिशपो द्वारा निमंत्रित) चर्च में पुजारी के नीचे कार्य करने वाले पादरी। प्रेसबाईटेरियन चर्च में एल्डर से भिन्न एक अफ़सर जो पैस्टर को सलाह देता तथा प्रसाद वितरण करता है।

कोई नहीं कर सकता,—और जिसने कहा था कि मेरे अनुयायियों को मेरे ही समान होना चाहिए और एक-दूसरे की सेवा-सहायता करनी चाहिए, न कि एक-दूसरे पर अधिकार जमाना चाहिए। तुम मेरे कैसे अनुयायी हो, इसका पता लोग इसीसे लगायेगे कि तुममे आपस में एक-दूसरे के लिए कितना प्रेम है और 'याद रक्खो कि तुम अपने किसी बंधु को चाहे खिला रहे हो या वस्त्र पहना रहे हो, उसकी प्यास बुझा रहे हो या उसे नगा-भूखा और प्यासा रख रहे हो,—जो कुछ तुम उसके साथ कर रहे हो, वह असल मे मेरे साथ ही कर रहे हो।' *

यह सभव है कि इन सैनिक प्रतिनिधियों मे से किसीकी आँखो से ये पृष्ठ गुजरे। यदि ऐसा हो तो मै चाहती हूँ कि मै उन्हे बता सकती कि दादियों तथा अन्य स्त्रियों की रक्षा असल मे किस बात में है। हम लोग इस प्रश्न को अंग्रेज, जर्मन, फ्रेंच या आस्ट्रियन नागरिक की हैसियत से नही देखती हैं, वरन् स्त्री की हैसियत से देखती हैं। हम जानती हैं कि अन्य युद्धों की भाँति इस युद्ध ने भी मनुष्य-जाति की अकथनीय हानि की है। व्यभिचार-दोष से फैलने वाले धातु-विकार के रोगो की बाढ आगई। इनमें से बहुतेरे रोगों ने तो बाद में इंग्लैण्ड के घरों में अड्डा जमा लिया। गर्भ-स्थित बच्चों को इस पाप का बोझ ढोना पड़ा। युद्ध के पहले अनेक आदमी वेश्या-वृत्ति से बचे हुए थे, प

---

* 'And whatever you do to your brother whether it is feeding him, giving him drink, clothing him, or leaving him naked and hungry and thirsty remember you are really doing it all the time to Me"

युद्धकाल में तो वेश्या-वृत्ति बहुत ज्यादा बढ गई। जो आदमी इस चक्कर में पड़ा वह फिर अपने पहले जीवन के आत्म-गौरव और आत्म-सम्मान को न प्राप्त कर सका। सेनाओं के लिए सामान्य सार्वजनिक वेश्या होती थी और ऐसी भी स्त्रियाँ होती थीं जिनके द्वारा शत्रु के सैनिक एवं राजनैतिक भेदों को प्राप्त करने की आशा की जाती थी। शान्ति का समझौता होने पर समझौते की शर्तों के अनुसार फ्रास की काली पलटनों (black troops) के लिए स्थापित किये गये चकलों में भरती होने को जर्मनी की अनेक स्त्रियाँ आर्थिक कारणों से विवश हुई। राइन-प्रान्त के नगरों में पहले एक चकले का भी पता न था, पर बाद में वे चकले कायम करने पर मजबूर किये गये। इन नगरों में से एक के नगराधिपति (मेयर) किसी तरह अपनेको यह बीभत्स कार्य करने के लिए तैयार न कर सके। उन्होंने तद्विषयक आवश्यक काग़ज-पत्रों पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। तब उन्हे बताया गया कि ऐसा न करने पर सख्त जुर्माना किया जायगा और चाहे वह हस्ताक्षर करें या न करें चकले तो कायम होंगे ही। तब उन्होंने विवशतापूर्वक हस्ताक्षर कर दिये।

युद्ध स्त्रियों की रक्षा करता है, इस बात को टूक-टूक कर देने के लिये क्या इतनी बाते काफी नहीं हैं?

साधारण जीवन में भी शारीरिक बल या खूबसूरत छोटे पिस्तौलों की चमक से स्त्री की पवित्रता की रक्षा नहीं होती। हम जहाँ-जहाँ जाती हैं तहाँ-तहाँ अपनी रक्षा के लिए नौकर, बन्धु या पति को साथ नहीं ले जातीं। यदि ऐसा करना पड़े तो हमारा जीवन कितना

दूभर और दुखदायी हो जाय ? और जब पति वृद्ध होजाते हैं या बीमार पड़ जाते हैं, या पगु हो जाते हैं, तब क्या उपाय हो सकता है ? हमारी पवित्रता, हमारा सतीत्व या हमारा जीवन हिंसा के ऊपर निर्भर करे तो हमारी रक्षा की सभावना कितनी शिथिल एव कमजोर होगी !

फिर नित्य हम लोग खतरे से घिरी रहती हैं । सभवत: जब भी हम अकेली गाँवों या निर्जन स्कूलों की ओर घूमने जाती हैं तब हमे अनेक कुत्तों, साँडों, बाघ चोरों, शराबियों या दुर्जनों के पास से गुजरना पडता है, जो यदि वैसा निश्चय ही करलें तो हमें आसान से दबा सकते हैं ।

पर हमारी मुक्ति या रक्षा तो लोगों के विवेक तथा पारस्परिक विश्वास एव इस धारणा मे है कि ईश्वर ने ससार को एक अच्छा स्थान बनाया है । जहाँतक हमारे वैज्ञानिक खोज कर सके हैं, वहाँतक पता चलता है कि जिन मूलभूत नियमो से ससार शासित है वे सामञ्जस्य, नियमितता सुघड़ता, सुशीलता, सौंदर्य और उदारता को व्यक्त करते हैं ।

विश्व के उपकरणों—तत्त्वो मे ही कोई ऐसी चीज है जो विश्वास, निश्चय एव सदिच्छा को बढाती एव उसका स्वागत करती है ।

मेरे या मेरे मित्रों के साथ बार-बार ऐसी घटनायें घटित हुई हैं जब हमपर किये जानेवाले किसी आकस्मिक आक्रमण से बचने की कोई सूरत न थी और हम निर्जन स्थान में अकेली थीं । यदि हम चीखती, डर जातीं या अपनी रक्षा के लिए सामान्य चेष्टा करतीं, तो

संभव है कोई दुर्घटना होजाती और इसमें तो कोई संदेह नहीं कि कम-से-कम, मानसिक उत्तेजना तो बहुत अधिक बढ़ जाती। परन्तु हम शान्त रहीं, प्रभु की शरण ली, केवल उस माता की रक्षा करनेवाली शक्ति का ध्यान किया और अपनी सारी शक्ति एक शक्तिमान् सर्वव्यापक चेतना पर केन्द्रित की। परिणाम यह हुआ कि आक्रमणकारी भाग गया अथवा खतरा दूर होगया।

ऐसी घटनाये कोई अद्‌भुत् कहानियाँ नहीं हैं। ये तो केवल सामान्य विधान को प्रकाशित करती हैं। जब-जब मनुष्य ने अपनी शका और भय की कैंचुल उतारकर, बिना किसी हिचकिचाहट के निर्भय होकर, अपनी नाव छोड़ दी है और स्वय अपना पथ-प्रदर्शन करने का खतरा न उठाकर अपनेको निश्चिन्ततापूर्वक प्रभु की दया धारा पर छोड़ दिया है, तब-तब ऐसी बाते प्रत्येक देश मे और प्रत्येक युग मे उसे अनुभव हुई हैं।‡

---

‡ यहाँ लेखिका ने अपनी कापी मे एक सुन्दर प्रार्थना अंग्रेज़ी में दी है जो मुद्रित संस्करण में नहीं है। वह यहाँ दी जाती है:—

'Flood thou my soul with thy great quietness
O let thy wave
of silence from the deep
Roll in on me, the shores of sense to leave .
so doth thy living water softly creep
Into each cave
And rocky pool, where ocean creatures hide

'प्राचीन धर्म पुस्तक' (Old Testament) की एक कथा में यह विचार बड़े सुन्दर दृष्टान्त-रूप से लिखा है। इलिशा एक प्रत्यक्ष-वादी था तथा सम्राट् के आसपास रहनेवाले इसराईल राजनीतिज्ञों एव सेनानायकों से कहीं अधिक व्यावहारिक था। उसके कारण ही, सीरिया की आक्रमणकारी सेनाओं की सुव्यवस्थित युद्ध-कला असफल होती रही। सप्ताह पर सप्ताह बीतने लगे, पर सीरियनों को विजय न मिली, जिसकी आशा करने के उसके पास यथेष्ठ कारण थे। तब उन्होंने समझा कि यह इलिशा, यह हरिजन, ही जो न तो डराया या धमकाया जा सकता है, न उसे किसी प्रकार की घूस दी जासकती है, हमारा प्रधान शत्रु है।

Far from their home, yet nourished of thy tide
Deep-sunk the wait
The coming of the great
Inpouring stream that shall new life communicate,
The, starting from beneath some shadowy ledge
Of the heart's edge,
Flash sudden coloured memories of the sea
Whence they were born of thee
Across the mirrored surface of the mind
Swift rays of wondrousness
They seem,
And rippling thoughts arise
Fan-wise
From the quick-darting passage of the dream,
To spread and find

जबतक इसे दूर न किया जायगा, हमारी इच्छा पूरी न होगी। इसलिए सारी सैनिक शक्ति लगाकर उसीको गिरफ्तार करने और ऐसी जगह बंद रखने की व्यवस्था की गई, जहाँसे वह साम्राज्य-विस्तार की उनकी गौरवपूर्ण महत्वाकाक्षाओं में विघ्न न डाल सके।

प्रातःकाल का समय है। सेवक पर्वत-शृंग पर बनी इलिशा की कुटिया की सफाई कर रहा है। अकस्मात् उसकी दृष्टि पहाड़ी की तलहटी में जाती है और वह चिन्ता के साथ देखता है किसी रियन सेनायें चारों ओर से पहाड़ी को घेरे हुए हैं; निकल भागने का कोई मार्ग नहीं है।

Each creviced narrowness
Where the dark waters dwell,
Mortally still,
Until
The Moon of Prayer,
That by the invincible sorcery of love
God's very self can move,
Draws thy life-giving flood
E'ven there
Then the great swell
And urge of grace
Refresh the weary mood;
Cleansing anew each sad and stagnant place
That seems shut off from thee
And hardly hears the murmur of the sea

वह कहता है—"हाय मेरे स्वामी, अब हम क्या करे ?" इलिशा कहते हैं—"निर्भय रहो; उनके पास जितने आदमी हैं उससे कहीं ज्यादा हमारे पास हैं।" परन्तु सेवक को विश्वास कैसे हो; वह तो सब कुछ अपनी आँखों से देख रहा है: 'यहाँ केवल हम दो आदमी हैं; शत्रु-सैन्य असख्य है।' पर इलिशा उससे बातें करने मे अधिक शब्दों का अपव्यय नही करते। एक भीत आदमी के लिए उससे कहीं अच्छे उपाय हैं। वह प्रार्थना करते हैं—"हे प्रभु, इस युवक की आँखें खोलदे, जिससे यह देख सके।"

अकस्मात् वह युवक सेवक सत्य को प्रत्यक्ष करता है। यह पर्याप्त है। यह अकल्पनीय है कोई चिन्ता नही, कोई भय नहीं; आक्रमण-कारी शत्रु की विराट सैन्य-गणना का कोई विचार नहीं, आपदा की अनिवार्यता की कोई भावना नहीं।

अब वह युवक स्पष्ट देख रहा है। उसके और उसके स्वामी के चारों ओर, ऊपर-नीचे, इधर-उधर अग्नि के रथ हैं। इलिशा की प्रार्थना के कारण अकस्मात इनका प्रादुर्भाव नहीं हुआ। यह सामान्य विधान है। सनातन प्रभु ही हमारा आश्रय-स्थल है और उसके नीचे अनन्त सैन्य एव शक्ति है।

° ° ° °

"आज आधुनिक ईसाइयत (क्रिश्चियानिटी) के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि वह 'पार्वत्य उपदेश' (सर्मन ऑन दि माउण्ट) का जीवन-यापन की एक व्यावहारिक विधि के रूप में पुनः अन्वेषण एव ग्रहण करे। आज हममे सदेह एव भय है कि शायद

यह व्यावहारिक नहीं। मानव-प्रकृति को ऐसे रूप में ढालने की चेष्टा करना जिसे वह ग्रहण नहीं करेगी, हमें थकानेवाला कार्य लगता है। मानव-प्रकृति जिसके लिए नहीं बनाई गई है उसे लादना व्यर्थ है। हाउसमैन ने इसी बात को कहा है:—

"And since, my soul, we can not fell
To Saturn or to Mercury
Keep we must, and keep we can,
Those foreign laws of God and man."

(और, हे मेरे प्राण, चूकि हम उड़कर शनि या बुध ग्रहों तक नहीं पहुँच सकते इसलिए हमें ईश्वर एवं मनुष्य के; विदेशी—अप्राकृतिक-कानूनों को सुरक्षित रख देना चाहिए और हम उन्हें सुरक्षित रख सकते हैं।)

क्या 'पार्वत्य उपदेश'(सर्मन ऑन् दि माउण्ट) में निश्चित किये सिद्धान्त विदेशी—अप्राकृतिक, अमानवीय—नियम हैं ? क्या उनमें कोई ऐसी बात है जिसके लिए हमारा निर्माण नहीं हुआ है ? पहली बार देखने से सभव है, ऐसा मालूम पड़े। चेस्टरटन कहता है कि पहली बार पढ़ने पर ऐसा मालूम पड़ता है कि यह सब वस्तुओं को उलट देता है, पर जब दूसरी बार आप इसे पढ़ते हैं तो आपको पता चलता है कि यह प्रत्येक वस्तु को सीधा कर देता है। जब पहली बार आप इसे पढ़ते हैं तो आपको अनुभव होता है कि यह असंभव है, पर जब दूसरी बार पढ़ते हैं तो अनुभव होता है कि इसके अतिरिक्त और कोई बात संभव ही नहीं है। मैंने जीवन की इस विधि पर जितना ही विचार किया है

उतना ही मेरा निश्चय दृढ होता जाता है कि इस (सर्मन ऑन् दि माउण्ट) में जो हम सब नैतिक असंभाविताओं की कल्पना करते हैं वह सब ग़लत है। तथ्य यह है कि सब नैतिक सभावितायें यहाँ हैं और सब असंभावितायें इसकी परिधि के बाहर हैं।

"पार्वत्य उपदेश (सर्मन ऑन् दि माउण्ट) असभव मालूम पड़ सकता है, पर केवल हमारे अत्यत बुरे क्षणों में ही। हमारे उच्च क्षणों में—और वे ही हमारे असली क्षण हैं—हम अनुभव करते हैं कि और सब कुछ अविश्वसनीयतापूर्वक असभव तथा मिथ्या है।" †

० ० ० ०

---

† ई० स्टेनली जोन्स कृत 'दिक्राइस्ट ऑन् दि माउण्ट' पुस्तक से। प्रकाशक—एबिंगडन प्रेस।

: ४ :

युद्धकाल में हमारा जीवन

पिछले अध्यायो म मुझे, स्थानाभाव-वश, जीवन के इतिहास का एक पैरे म और एक व्यक्तित्व का कतिपय वाक्यो में वर्णन करना पड़ा है।

और इस अध्याय के बाद वाले अध्यायों में मै यूरोप के विभिन्न अहिंसावादी समाजो एवं समूहों के कार्यों का निर्देश करूँगी और इनमे से प्रत्येक ने सैनिकवाद तथा उसके अभिन्न उपकरण गरीबी और पीड़ा से मुकाबला करने के कार्य म जो क्रियात्मक योजना ग्रहण की है उसका खाका खींचने की भी कोशिश करूँगी।

इस अध्याय में लन्दन के पूर्वीय भाग (ईस्ट एण्ड) की कुछ पार्श्ववर्त्ती गलियों में बसे हुए मनुष्यो के दैनिक जीवन का गम्भीर अध्ययन किया गया है। यह अभिनय ५-६ गलियो से निर्मित एक सकुचित मञ्च पर होता है। प्रत्येक गली मे प्राय. ४० छोटे मकान है; प्रत्येक मकान मे दो या तीन कुटुम्ब—अर्थात् १२ से १५ आदमी—बसते है। इनमें प्रत्येक मनुष्य के अपने अलग विचार है और वह अपने व्यक्तित्व की पवित्रता की रक्षा करता है: और हमारी अंग्रेजी प्रकृति के अनुकूल वह इस विषय में बड़ा कट्टर होता है। यदि कोई अन्वेषणकर्त्ता

मानव-प्रकृति, ईश्वर और शस्त्र-युद्ध के नैतिक समवर्ती साधन (moral equivalent) का अध्ययन करना चाहे तो उसके लिए इस भाग (बोटाल्फ रोड, बो) में पर्याप्त सामग्री मिल सकती है।

जब इस नगर-भाग (बोटाल्फ रोड) में युद्ध का प्रवेश हुआ तब मैं 'बो' को पिछले ११ वर्षों में बहुत अच्छी तरह जान चुकी थी। गली के कोने में 'किंग्सले हाल'‡ था और उसके सामने एक चकला था। रोज, क्राउन तथा 'ब्लैक स्वान' इसके बिलकुल नजदीक थे और एक अन्य मद्यालय तथा जुएखाने तीन मिनट के रास्ते पर थे। सट्टेबाज तथा रेस सम्बन्धी खबरें इधर से उधर जुटानेवाले हमेशा इन स्थानों में मौजूद रहते थे। छोटे-छोटे बच्चे भी रेस सम्बन्धी सवाद पहुंचाकर तथा गलियों के नुक्कड़ो पर खडे रहकर एवं किसी पुलिस सिपाही को आते देख इशारा कर देने के बदले कुछ कमा लेते थे।

जब शाम को ज्यादा गर्मी पडती तो इन मकानों में रहनेवाले अपने दर्वाजों के सामने, गलियों में, अपनी पुरानी लकडी की कुर्सियाँ डालकर बैठते। १३-१४ वर्ष के बच्चे नीचे पत्थर के फर्श पर ही मकान की दीवारों का सहारा लेकर बैठ जाते और कौड़ियों के लिए ताश खेलते। लड़कियाँ म्युनिसिपैलिटी के कैम्प के खम्भों से बाँधकर रस्सियों के झूले बनातीं। कुछ दूसरे लोग, अपने छोटे पड़ोसियों को एकत्र कर

---

‡ 'किंग्सले हाल'—यह एक प्रकार का सेवाश्रम है, जिसे मिस म्यूरियल लेस्टर ने स्थापित किया और जहाँ वह तथा उनके साथी रह कर जन-सेवा का कार्य करतीं एव जीवन को अहिंसा की भित्ति पर ढालने का प्रयत्न करती हैं।

उनके सामने एक क्षीण काली पट्टी रखकर, स्कूल-अध्यापक का पार्ट अदा करते। बहुत छोटे बच्चे, पत्थर की पटरी पर बैठकर, गटर-नाले- में पॉव डाले, कीड़ों से भरे हुए कीचड़ के खेल करते थे।

किंग्सले हाल खुलने के बाद स्थानीय जीवन मे ज्यादा ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। किंग्सले हाल सर्वसाधारण का घर है, जिसका संचालन स्वयं पड़ोसी बधु करते हैं और जहाँ स्त्री-पुरुष, अंग्रेज और विदेशी, चालाक और सीधे, ईसाई (आस्तिक)और नास्तिक सभी लोग सेवा और भ्रातृत्व के द्वारा अपनी मुक्ति को ढूँढते हैं।

दयालुता, साहस और विनोद, समीपवर्ती गलियों में बसनेवालों की मुख्य विशेषतायें हैं और इसीलिए, अगस्त १६१४ ई० (युद्ध के आरंभ) के कुछ दिनो बाद तक भी जर्मन और आस्ट्रियन वंश के ४-५ दूकानदार शाति एवं संतोषपूर्वक अपना व्यापार करते रहे। यद्यपि अख़बार अपनी सारी अक्ल खर्च करके युद्ध-सम्बन्धी प्रचार कर रहे थे, पर 'बो' के निवासियों के शातिमय कार्यक्रम में, कुछ दिनों तक, कोई अन्तर न पड़ा। उन्होंने पिछले सालों में इन अखबारों मे बन्दरगाहो के श्रमिको की महान् हड़ताल तथा बेकार एवं भूखे आदमियों की यात्राओं (hungermarches) की मनगढ़ंत रिपोर्टें पढ़ी थीं और वे जानते थे कि "ये लोग ऐसी चालाकी से भरे वाक्य लिखते हैं कि जो बाते हुई ही नहीं वे भी सच्ची-सी मालूम होने लगती हैं। इसमें उनका दोष नहीं है। उन्हे इसीके लिए वेतन मिलता है। उनको जीभ को मरोड़कर उच्चारण किये जानेवाले ऐसे लम्बे शब्दों की जानकारी रखनी पड़ती है जिनका खंडन तुम तबतक नहीं कर सकते जबतक तुमने

कालेज की शिक्षा न पाई हो। वे प्रायः अच्छे एव सज्जन युवक अथवा कुटुम्बों के पिता होते हैं और अपने बच्चों को रोटी जुटाने के लिए उनको मजबूर होकर यह सब करना पड़ता है । उनको अपने मालिकों की आज्ञा माननी पड़ती है। और सुन्दर फ्रेमका चश्मा लगाने वाला सम्पादक जो आधी रात आफिस-डेस्क पर बैठा रहता है, वह भी तो आखिर तनख्वाह पानेवाला एक गुलाम ही है। शेयर होल्डर, जो उसे तनख्वाह देते हैं, जो कुछ पढ़ना चाहते हैं वैसा ही उसको लिखना पड़ता है। यदि वह एक शब्द ज्यादा लिखे तो उसे काम छोड़ना पड़ता है।"

यों तो ईस्ट एण्ड के निवासियो मे से हजारो आदमी युद्धक्षेत्र मे थे। पर वे साधारण ढग से इसमे शामिल हुए थे और जानते थे कि 'धर्म-युद्ध की लम्बी-चौड़ी बातों मे कोई तथ्य नहीं है।' वे यह भी जानते थे कि हमारे आदमी कोई फरिश्ते नहीं हैं और जुलाई १६१४ मे, युद्ध आरम्भ होने के पूर्व, वे टाम, डिक और हेरी (साधारण आदमी) थे, किसी कारखाने में मजूरी करते थे और शनिवार की रात को पी-पी-कर गालियाँ बकते थे और बुरी हरकते करते थे। और आज वर्दी के साथ भी वे वही टाम, डिक, हैरी हैं। यदि गोली के शिकार न हुए तो एक दिन किसी अच्छी लड़की के साथ विवाह—बंधन मे बंधकर वे गृहस्थ हो जायेंगे।

° ° ° °

चूँकि किंग्सले हाल का उद्देश्य और कार्यक्रम जाति, समूह एवं राष्ट्र के बंधनों को तोड़ना था, इसलिए वह युद्ध का समर्थन नही कर सकता था।

पर दुनिया में ऐसे आदमी सर्वत्र मिलते हैं जिनको शरारत में ही मज़ा आता है। मनोविज्ञानवादियों ने ऐसे आदमियों की अचेत मनः-स्थिति एवं तात्पर्य के विषय में बहुत-कुछ लिखा है। यह जानने के लिए विशेष अध्ययन की आवश्यकता नहीं है कि 'बो' के एक बहुजनाकीर्ण गृह में, जहाँ कभी-कभी १२-१२ आदमी तक रहते, सोते, भोजन बनाते, खाते, कपड़े धोते, पढ़ते, प्रेमालाप करते, एक तंग कोठरी में संतान उत्पन्न करते और एक दिन मर जाते हैं, तहाँ 'शरारत करना' ही लोगों का ध्यान आकर्षित करने का एकमात्र उपाय है। हाँ, मरना ज़रूर एक बात है जिससे लोग चर्चा करते हैं, पर उस हालत में मरनेवाले को कोई ख़बर नहीं रहती कि उसके कारण लोगों में क्या हलचल पैदा हो रही है।

अतः शीघ्र ही चारों ओर तरह—तरह के संदेह लोगों में फैलाये जाने लगे और 'रोज़ एन्ड क्राउन' मद्यविक्रेता की कलवरिया में यह बात दोहराई गई कि किंग्सले हाल देशद्रोहियों (ट्रेटर्स) का अड्डा है। इन मद-विक्रेताओं के लिए ऐसी बातों का प्रचार करना व्यापारिक दृष्टि से लाभ-प्रद था, क्योंकि किंग्सले हाल ने बहुत-से ऐसे आदमियों को भी आकर्षित कर अपने अंदर शरीक कर लिया था जो पहले अपना समय और धन इन शराब बेचनेवालों की जेब भरने मे खर्च करते थे। शीघ्र ही इन शरारतियों को यह भी पता चल गया कि किंग्सले हाल वालों ने अपनी रविवार की उपासना से विजय की प्रार्थना को निकाल दिया है। इससे भी बढ़कर उत्तेजक एक बात यह फैलाई गई कि ये लोग तो जर्मनों के जासूस हैं। संभवतः एक भी आदमी ने इन बातों में दिल से विश्वास

नहीं किया होगा, पर उन्हे दोहराने और श्रोता पर होने वाले उनके प्रभाव को देखने में एक मजा तो आता था।

एक रात को हम लोगो ने सुना कि 'बो' की एक विख्यात महिला, जो बड़ी मद्यप थी, 'रोज एण्ड क्राउन' की कलवरिया मे प्रत्येक आगन्तुक को मुफ्त में शराब पिला रही है और इसके बाद वे लोग किंग्सले-हाल पर धावा बोलेंगे। सार्वजनिक गृहो के निवासी मुझे होशियार रहने और पुलिस बुला लेने की सलाह देने को आये और जरूरी सूचना देकर उन्होंने अपना रास्ता नापा। उनमे से एक ने कहा—"मैं किसी झगड़े मे पड़ना नहीं चाहता, अत. सीधे घर जाकर बिस्तर की शरण लूँगा। अब तुम व्यर्थ समय न खोओ। वे किसी समय यहाँ आ सकते हैं। वे कह रहे थे कि तुमपर गधक का तेजाब फेंकेंगे। ओह, शर्म! ऐसा कृत्य!"

उस सध्या को हाल में एक जबर्दस्त, आनन्द मे किलकारियाँ मारने और अट्टहास करनेवाली मडली जुटी थी। बिलियर्ड, ताश, अन्य खेलों तथा सङ्गीत के क्रम चल रहे थे। ऐसी हालत मे शायद उत्साही युवकों का यह दल बिना आज्ञा के हाल में घुस आनेवालों के झुण्ड से दो-दो हाथ हो जाने को सभवतः पसद करता। एकत्र स्त्री-पुरुषों में सिर्फ चद आदमी ही 'अहिंसा-दल' के थे; अन्य साधारण सदस्य प्रभु की उस सतत उपस्थिति के अभ्यास‡ की आध्यात्मिक

‡ देखिए ब्रदर लारेंस-लिखित 'ईश्वरीय उपस्थिति का अभ्यास', The Practice of the Presence of God) पुस्तक। मूल्य ६ पेंस या १ शिलिंग। फ्रेंड्स बुकशाप, यूस्टन रोड, लदन।

साधना के लिए तैयार न थे जिसके कारण मनुष्य पुलिस की अपेक्षा अदृश्य (ईश्वरीय) शक्ति पर अधिक भरोसा रखना सीखता है । मैंने उन कतिपय विश्वसनीय आदमियों को अलग बुलाया । इनमे प्रथम अध्याय में उल्लिखित तोतो के लिए खाद्य सामग्री बनानेवाला श्रमिक, एक डाक (धक्के) का मजूर, और दूसरे ८ - ९ आदमी थे । मैंने इन्हे सब बाते समझा दीं कि क्या होनेवाला है । इसके बाद फिर हम अन्य लोगों के साथ शामिल होकर खेल तथा नृत्य में लग गये और अपनी आध्यात्मिकता को आक्रमण सहन करने लिए जाग्रत करते रहे । धीरे-धीरे समय बीतने लगा; यहातक कि हाल बद करने का –१० बजे का—समय होगया और कोई घटना नहीं घटी । नाच-गान बद हुए और, जैसा कि किंगसले हाल का कायदा है, वृत्ताकार खडे होकर हम लोगों ने शान्ति के साथ प्रार्थना की । अन्त में दुआ–सलाम और शुभाकाक्षाओं तथा विदाई के विनोंदों के साथ लोग विदा हुए। किंगसले हाल के सदस्य सब शारीरिक श्रम स्वयं करते हैं । छोटा-सा 'अहिसा-वादी' दल उस रात को वही ठहर गया । ज्यों ही हम लोग झाड़ू-बोहारू करके और प्रातःकाल के लिए सब चीजे यथास्थान रखकर फारिग हुए कि बग़ल के दरवाजे पर एक आकस्मिक थाप सुनाई पड़ी । दरवाजा खुल गया और उस स्त्री-नेता के पीछे शराब में चूर स्त्री-पुरुषों की भीड़ अन्दर घुस आई । बड़ी शान के साथ, जो शराबी का एक विशेष बनाव–पोज–है, वह स्त्री अनुयायियों के सग हाल को पार कर उधर घूमी जिधर हम लोग खडे थे । मैने अपने आदमियों से कह दिया कि मेरे पीछे हो जाओ; और प्रतीक्षा करने लगे कि क्या होता है । एक

विचित्र तमाशा था। मेरी प्रतिद्वन्द्विनी अद्भुत मालूम पडती थी। वह आहत निर्दोष व्यक्ति का अभिनय बडी परिपूर्णता के साथ कर रही थी। वह तोंदीली स्त्री, बाहे फैलाये हुए, नाटकीय चाल से आगे बढी। मैंने प्रभु का स्मरण किया, और चुप खड़ी रही। जब उसका हाथ हमारो नाक से एक इच दूर था, वह रुक गई और उसने भाषण देना शुरू किया। जब वह साँस लेने के लिए रुकती तो उसके पीछे खडे करुण दर्शन व्यक्ति उसके पिछले वाक्य को टूटी और शिथिल आवाज में दोहरा देते अथवा ग्रीक कोरस की भाँति उसपर अपनी सहमति के कुछ शब्द बुदबुदाते थे। डाक मे काम करनेवाले श्रमिक को ऐसा जान पड़ा कि हम लोग पर्याप्त मात्रा में आध्यात्मिक शक्ति नहीं जाग्रत कर पा रहे हैं, अतः वह चुपचाप प्रार्थना द्वारा प्रभाव डालने के हित उपासना-मदिर में चला गया। बहुत शीघ्र ही उस मोटल्ली स्त्री के व्याख्यान पर उसके साथियों में से एक कह उठा—"मिसेज राबिंसन, ईश्वर तुम्हारे कष्ट में तुम्हारी सहायता करेगा।" (Gawd will 'elp you through your trouble, Mrs Robinson,") यही मेरे लिए अवसर था।

मैंने शीघ्रता और दृढता से कहा—"निःसन्देह, प्रभु सहायता करेंगे। आओ, हम सब प्रार्थना करे।"

जान पड़ता है, उन लोगों को किसी तरह मालूम था कि किंग्सले हाल में प्रार्थना किस तरह होती है क्योंकि लोगों ने अपनी चिकनाहट से भरी टोपिया उतार दीं और वृत्ताकार खडे होगये। मैंने हम लोगों मे से प्रत्येक के हृदय की इस आकाक्षा को प्रार्थना के रूप

में प्रकट किया कि यह दुःखदायी प्रसङ्ग टल जाय और मिसेज राबिंसन का घर पड़ोस के घरों में एक अत्यन्त सुखी गृह बन जाय तथा हम सब लोग अपनी शक्ति-भर स्वर्ग-राज्य के नियमों का पालन एव प्रसार करने की कोशिश करे जिससे इस मुहल्ले मे भी स्वर्ग की स्थापना हो सके।

सहमति-सूचक हर्ष-ध्वनि के साथ प्रार्थना समाप्त हुई और इसके पहले कि उसे कोई दूसरी बात सूझे, मैंने आगे बढकर मिसेज राबिसन को नमस्कार किया और अपना हाथ, सहारे के लिए, बढा दिया। उसने गम्भीरता और उदारतापूर्वक मेरी बाँह का सहारा लिया। भीड़ छँट-कर दोनों तरफ़ होगई और बीच मे उसने रास्ता कर दिया, जिससे हम दोनो इस तरह निकलीं जैसे किसी बड़े गिर्जाघर से, ब्याह के बाद, पति-पत्नी निकलते हैं। मै उसे उसके घर ले गई। रास्ते में रात की शीतल वायु ने उसे और चेतना प्रदान की। विदा होने के लिए जब मै उसके साथ उसकी देहली पर खड़ी थी तब उसने कहा कि मुझे बड़ा पश्चात्ताप है और मैं तुम लोगों के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ। तबसे वह महिला किंगस्ले हाल के कट्टरतम समर्थकों में है।

० ० ० ०

लुसीटानिया (जहाज) के डूबने के बाद जर्मनों के विरुद्ध अकस्मात् आग भड़क उठी और दङ्गे शुरू होगये। एकाएक, न जाने कहाँ से, गुण्डों का एक दल निकला और बारी-बारी से पुराने जर्मन तथा आस्ट्रियन पड़ोसियों की नानबाई की दुकानों को तोड़-फोड़ डाला और लूट की सामग्री आपस में बाँट ली।

यह एक घृणाजनक दिवस था। आक्रमण अकस्मात् हुआ था और पुलिस इस मामले में कुछ न कर सकी। एक दूकान से एक अधेड जर्मन महिला भागने की कोशिश कर रही थी और जो लोग उसे घेरे हुए थे वे कभी उसका बटुआ छीनते, कभी उसका हैट तोड़ते, कभी अन्य प्रकार के निन्दनीय बर्ताव करते थे। पर ये कुल दो-तीन आदमी थे, इसलिए उनका ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करना और इस बीच हमारे किसी आदमी के साथ जर्मन स्त्री का वहाँ से निकल जाना बडा सरल था। ऐसा ही किया गया। अभीतक कोई पुलिस का आदमी हमारी सहायता करने नहीं आया था, यद्यपि मैं देख रही थी कि एक सिपाही नीबू चूसते हुए इधर-उधर चहल-कदमी कर रहा है। जब मामला निबट गया तो उसने देखा कि अपना रङ्ग जमाने का यह उचित अवसर है। वह आया और मेरा कंधा पकडकर बोला—"शान्ति भङ्ग करने की जिम्मेदारी तुम्हीपर है," और मुझे पकड़ ले गया।

° ° ° °

हमारे पडोस मे एक नाई—हज्जाम—रहता था। हम लोग प्रायः उसकी दूकान के बरामदे मे चाय पीते थे। यहाँ दीवार में एक आईना लगा था और यदि कोई ग्राहक कुछ खरीदने आता तो हमें मालूम हो जाता और हममें से कोई दौड़कर, हेयरपिन का पैकेट या वेसलीन की शीशी, मसलन जिस चीज की आवश्यकता होती, उसे दे आते। जिस युवक की यह दूकान थी, वह अकेला रहता था। उसकी बैठक की दीवारें तस्वीरों तथा बाइबिल, कवियों तथा उसके विशेष श्रद्धा-भाजन वीर लिंकन, केयरहार्डी, शेक्सपियर इत्यादि की (कागज पर लिखी)

सूक्तियों से भरी हुई थीं। इन कागजो पर कहीं धूल का एक कण भी नहीं दिखाई पड़ता था। वह मकान को खूब स्वच्छ रखता था। वह एक गृहस्थ धर्मोपदेशक (Evangelist) भी था और ग्राहकों को उनके व्यक्तिगत जीवन को सुन्दर बनाने के लिए यथोचित सलाह दिया करता था। ग्राहक चाहे दो ही पैसे की चीज ले, पर वह उस चीज़ को सदा एक ट्रैक्ट (पुस्तिका) में लपेट कर देता था। वह ऐसा प्रसन्न और हँसमुख तथा यथोचित उत्तर से सब को सन्तुष्ट रखनेवाला था और उसका मन इतना निर्मल एवं शान्त था तथा ससार के साथ उसका ऐसा शातिमय एवं सुखद सम्बन्ध था कि ग्राहक उसे चाहते थे। उसने अपने जीवन का कार्यक्रम बना लिया था और उसीके अनुसार चलता था। १६ वर्ष की अवस्था मे ही, जब पहली बार उसे ईसा का अनुसरण करने के आनन्द का अनुभव हुआ, उसने निश्चय किया था कि पॉच वर्ष तक न्यूजीलैंड जाकर खेती और साथ में प्रभु-सेवा करूँगा; उसके बाद लदन मे किसी गरीब मोहल्ले (स्लम एरिया) में रहकर पाल* की नाईं अपने हाथ से श्रम करके अपनी जीविका कमाऊगा। पर मेरा असली काम प्रभु की सेवा और उससे मिलनेवाले आनन्द का दूसरों से परिचय कराना होगा। इसके बाद पाँच वर्ष के लिए मैं भारत जाऊँगा और वहाँ भी अवैतनिक एवं सरल धर्म-कार्य करूँगा। उसे यह मालूम न था कि भारतवासी उससे हजामत बनवाने मे कोई आपत्ति करेंगे या नहीं। उसनेसोच लिया था कि यदि वे खुद हजामत न बनाने देगे तो मै उनकी सेवा का कोई दूसरा जरिया ढूँढ लूँगा और उन्हें ईसा का ज्ञान कराऊँगा।

---

* ईसा के प्रसिद्ध अनुयायी।

जब युद्ध आरंभ हुआ तो वह अपने इस जीवन-क्रम की दूसरी अवधि के मध्य मे था। जब अनिवार्य सैनिक सेवा का कानून (Conscription) जारी किया गया तब भी वह शान्त रहा। उसका काम प्रभु और अपने साथी प्राणियों की सेवा करना था। उन्ही बन्धुओं की हत्या करने के लिए युद्ध में जाने की वह कल्पना भी नही कर सकता था। इसका जो परिणाम होना था वही हुआ। न्याय-समिति (ट्रिब्यूनल) के सम्मुख उसका मुकदमा हुआ और उसके बाद वह जेल की एक कोटरी में डाल दिया गया। जब मैं उससे मिलने गई तो उसने केवल एक ही अनुरोध किया, और वह यह कि मुझे मेरा हिंदुस्तानी व्याकरण और कोश मिल जाय तो अच्छा हो। अभीतक अधिकारी उसके इस अनुरोध की पूर्ति करने से इन्कार करते रहे थे। उधर वह अपने सेवामय जीवन-क्रम की तीसरी अवधि के लिए तैयारी करना चाहता था। युद्ध का विरोध करनेवाले जितने लोगो से मैं जेल मे मिली उनमे से जेल की स्थिति के कारण होनेवाली मानसिक शिथिलता इस आदमी में सबसे अधिक दिखाई पडी। अक्सर देखा जाता है कि चद महीनों के जेल-जीवन के बाद, कैदी विचारो से ठीक-ठीक काम लेने की शक्ति खो बैठते हैं। बलात् मौन् रहने के कारण अपने भावों को व्यक्त करने का माद्दा उनमें नहीं रह जाता। वे बडी उत्सुकता के साथ कोई प्रश्न पूछना, जेल की किसी घटना का वर्णन करना अथवा किसी समस्या पर बहस करना शुरू करते हैं और एक-दो वाक्यों के बाद विचारों का सिलसिला टूट जाता हैं और उनके वाक्य अधूरे बेमतलब रह जाते हैं। इसमें आशा की बात इतनी ही है कि यह कमजोरी थोडे ही दिन रहती है। महायुद्ध का

अत हो जाने दे बाद जब यह नाई जेल से मुक्त हुआ तो उसे अपनी मनःस्थिति को दुरुस्त करने और पूर्व-निश्चित कार्यक्रम का अनुसरण करने मे सालभर लग गया ।

युद्ध की भयकरता बढ़ती गई। जेपलिन (एक प्रकार के जर्मन सैनिक वायुयान) हमारे मुहल्ले (बो) के ऊपर मॅडराने लगे। हम लोग पूर्वीतट और लदन तथा उनके विशेष लद्दय ईनफील्ड के छोटे शस्त्र बनानेवाले कारखाने के ठीक रास्ते मे पड़ते थे। इसके पहले कभी हम लोगों ने सांध्य-गगन की ओर इतने ध्यान से नही देखा था, न पहले कभी इतनी सावधानता से पूर्णिमा किस दिन पड़ेगी इसका पता लगाने के लिए पंचाग देखा था। प्रायः ब्राह्म मुहूर्त मे चेतावनी का घंटा सुनाई देता। मातायें तुरंत बिस्तर छोड़ देतीं, चिल्लाकर लड़कों को जगातीं और उन्हे कोट से ढककर तथा बच्चों को गोद मे लेकर 'बो' के गिरजा के दूसरी और बने 'सामान्य आवास (Common Lodging House) के गहरे, मज़बूत एव ठोस तहखानों में आश्रय पाने के लिए दौड़तीं। जहाँ हम लोग सैकड़ो की संख्या मे एकत्र होते और गन्दी जगह में सभी प्रकार के बच्चों और स्त्रियों को घण्टों आश्रय लेना पड़ता। सोते हुए बच्चे, टूटे-फूटे टेबुलो पर पक्तिबद्ध सुला दिये जाते और शिशुओं की दूसरी कतार उनके नीचे जमीन पर लगा दी जाती।

हमारा काम भजन गाना, कोरस बोलना, कहानियाँ कहना और लोगों से 'सोलो' † गवाना था। एक बार अपने साथ हमें हालैण्ड में 'डच अहिंसा-दल' के सस्थापक कार्नेलियस बोयके (Cornelius

---

† गीत या बाजा जो एक ही आदमी गाता या बजाता है।

Boeke) को भी ले जाने का मौका मिला। उन्होंने ऐसे मधुर एव मनहर ढग से वेला बजाया एव इतनी अच्छी तरह से बोले कि हम लोग बाहर फूटने वाले बमों के धडाको का सुनना भूल गये। †पॉच-पाँच छः-छः रातों तक लगातार, चेतावनी का घटा हमें अपने घरों से आकर यहॉ आश्रय लेने को बाध्य करता। पड़ोस की स्त्रियों के दिल तोड़ देने को यह काफी था पर उन्होंने अपनी प्रफुल्लता कायम रक्खी। यहॉतक कि वे इन बातों को लेकर परस्पर विनोद भी करती थीं।

० ० ०

धीरे-धीरे खाद्य-सामग्री की कमी पड़ती जारही थी। इसका मतलब असली थकान और कष्ट का आरम्भ था। स्त्रियॉ दुकानों के सामने पक्तिबद्ध, एक के पीछे एक, खड़ी रहतीं कि बारी आवे तो आलू, तेल इत्यादि लें।

यह जाडे का मौसम था और कड़ी सरदी पड रही थी। उस कडाके की सरदी में मातायें बच्चों को गोद में लेजाती थीं क्योंकि अब चीजों की खरीदारी चद मिनटों की बात नहीं थी वरन् उसमें तीन-तीन चार-चार घटे तक लग जाते थे। हमारी एक पड़ोसन को एक बार पक्ति में चार घटे तक खडा रहना पड़ा और जब राम-राम करके उस वेचारी की बारी आई और उसने जरूरी चीजों केलिए अपना झोला आगे फैलाया तब उसे मालूम हुआ कि सब चीजें खत्म हो गई हैं।

पर आपदाएँ यहीं तक न थीं। एक दिन जेप्पलिन से एक बम सामने ही 'ब्लैक स्वान' पर गिरा और उसमें कई व्यक्ति मारे गये।

---

† हवाई आक्रमणों के समय इन तहखानों में कितने ही बच्चे पैदा हुए थे।

दूसरा बम किंग्सले हाल पर गिरा; उसकी छत चूर-चूर होगई, परन्तु ईश्वर की कृपा से किसी आदमी को चोट न लगी। इस घटना का लोगों पर अच्छा ही असर हुआ। शरारती और बेबुनियाद बात फैलानेवालों के भाव बदल गये। अब हमारा साथ देने और हमारी सहायता करने में ही उनकी नामवरी थी। बम की दुर्घटना से यह स्पष्ट होगया था कि हम लोग जर्मनो से मिले हुए नहीं होसकते, क्योंकि ऐसा होता तो वे 'हाल' पर बम क्यों गिराते ? अब तो युद्ध-पीड़ित आदमियों मे हमारी गिनती होने लगी थी और हम लोग लोकप्रिय हो उठे।

घटना के दूसरे दिन प्रातःकाल जब पुलिस लोगों को एक-एक करके ध्वस को देखने की आज्ञा देरही थी तब एक आदमी ने कहा— "क्या ऐसे धार्मिक स्थान पर बम गिराने का काम बिलकुल बूढ़े कैसर-जैसा ही नही है ?"

० ० ० ०

पर दुर्दशा का अत यहींतक नहीं हुआ। इसके बाद दिन को भी आक्रमण होने लगे। ये पहले से भी बुरे और कष्टप्रद सिद्ध हुए। एक बार की बात है कि एक नाटक (नौटंकी) के टिकट हमारे पास आये और मैं अपने साथ बच्चों का एक प्रसन्न दल लेकर 'वेस्ट एण्ड' (लदन का धनी पश्चिमी भाग) गई। हम लोग चेयरिंग क्रास रोड (लदन के मुख्य रेल स्टेशन के सामने से जानेवाली सड़क) तक पहुँचे थे कि सुदूर आकाश में अत्यन्त सुंदर और प्रकाशमान चीज़ दिखाई पड़ी, जो बड़े रजत-पक्षियों-सी हमारी ओर उड़ती आ रही थी। हम

लोगों में तो कोई घायल नहीं हुआ, पर बाद मे हमारे एक स्थानीय स्कूल पर एक बम गिरा और फलतः पद्रह लडकियाँ-लड़के मारे गये ।

० ० ० ०

इतने कठिन और कष्टप्रद समय में भी पड़ोसियों ने अपनी शाति और धीरज को कायम रक्खा और यथाशक्ति घटनाओं पर उदार भाव से विचार करते रहे । एक दिन मैं, एक पडोसिन के साथ, उसके भोजनालय में बैठी बाते कर रही थी। मै ऐसे समय उसके घर पहुँची थी जब इस श्रमिक स्त्री को अपने निरतर श्रमपूर्ण कार्यक्रम के बीच दम मारने की जरा-सी फुर्सत मिली थी, अतः हम दोनों फुर्सत की इस क्षीण अवधि का आनद ले रही थीं । मजदूरी करनेवाले मर्द अभी घर न लौटे थे और बच्चे भी स्कूल में ही थे। हम दोनों शान्तिपूर्वक चाय और बिस्कुट का स्वाद ले रही थीं । कुछ देर चुप रहने के बाद मेरी मेज़बान बहन ने कहा— "बहन, अगर तुम जरा सहानुभूति से, जेपेलिन में बैठे इन आकाशचारी आदमियों का विचार करोगी तो मानना पड़ेगा कि हम उन्हे दोष नहीं दे सकतीं । उन बेचारों को भी, हमारे आदमियो की तरह, मजबूर होकर यह सब करना पड़ता है ।"

इसी प्रकार के एक दूसरे अवसर पर एक दूसरी स्त्री ने वैसे ही शान्त स्वर से कहा—"बहन, यह ठीक है कि जर्मन हमारे आदमियों की हत्या कर रहे हैं; पर यह भी तो सच है कि हमारे आदमी भी जितने अधिक जर्मनों को मार सकते हैं, मार रहे हैं और प्रत्येक जर्मन, जिसे हमारे आदमी मारते हैं, किसी गरीब माँ का दुलारा बेटा होता है !"

इस अनुभव के बाद से मैं बराबर आशावादी रही हूँ ।

निस्सन्देह यही वह शिला है जिसपर विश्वशान्ति का निर्माण किया जा सकता है। इस सज्जनता, युद्ध के तथ्यो के इस सच्चे स्थिति-दर्शन तथा इस सहिष्णुतापूर्वं सद्भाव और दूसरों की स्थिति एव विवशता को समझने की भावना के अलावा इसके लिए दूसरा कोई रास्ता नही है।

पिछले महीनों में मै ससार की यात्रा करती रही हूँ। मैंने इसी भावना का सर्वत्र अनुभव किया है। हमें इस दबी हुई भावना को विकसित करना होगा। यह अखबारो के कालमो मे व्यक्त नहीं होती। इसमें कोई 'समाचारत्त्व' नहीं है। आदमी, साधारण आदमी, काम करनेवाले आदमी, विवेकवान एव दूरदर्शी माता-पिता अभी तक जिह्वा-हीन—मूक—हैं। एक दूसरी घटना के द्वारा इनका चित्रांकण किया जा सकता है। बात उसी 'ब्रो', 'ब्रोटाल्फरोड' की है। एक मामूली मकान में एक दिन मैंने एक स्त्री को हाथ मे दैनिक पत्र लिये पाया। मुझे तारीख याद नहीं आती है, पर उस अखबार में सबसे ताज़ी खबर यह थी कि कल रात भर में कई हजार वर्ग मील भूमि छीनकर-विजय करके ब्रिटिश साम्राज्य में मिला ली गई है। मेरे अदर प्रवेश करते ही, उसने पत्र रख दिया और मेरा स्वागत किया और नाश्ते के लिए चाय बनाने में लग गई। गैस के चूल्हे पर चायपात्र रखने के लिए दियासलाई जलाती हुई, कुछ आत्म-निमग्न अवस्था में वह बोली—"मैं ताज़ा खबर पढ़ रही हूँ। मेरा विश्वास है कि इग्लैंड लोभी होगया है; क्या आप ऐसा नहीं समझती ?"

: ५ :

कुछ पथ-प्रदर्शक

युद्ध के कारण, स्वीजरलैण्ड के एक मामूली गाँव के स्कूल-मास्टर जान बूदराज (John Baudraz) को, जिसका उल्लेख प्रथम अध्याय में किया जा चुका है, दो या तीन सप्ताह के बजाय तीन महीने के लिए अपनी सैनिक टुकड़ी (रेजीमेंट) में सम्मिलित होने की आज्ञा मिली। स्वीजरलैण्ड महायुद्ध के भॅवर में नहीं पड़ा था। स्वीजरलैण्ड से लेने जैसा कुछ नहीं है। कोई भी राष्ट्र, चाहे कैसी भी विजय प्राप्त करले, इसके पहाड़ों एव घाटियों को जुदा नहीं कर सकता। किन्तु इतने पर भी इसकी सेना, अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ, तैयार रक्खी गई थी।

जान बूदराज को इतने लम्बे समय तक पाकेट मे बाइबिल को पड़े रखना अच्छा न लगा। उसके लिए यह असह्य हो उठा। वर्दी में रहते हुए बाइबिल न पढ़ने की उसकी पुरानी आदत शायद निभ जाती, परन्तु एक दिन अपनी प्रार्थना में उसे कोई आवाज-सी सुनाई पड़ी। उसने कहा कि यह आवाज ईसा की थी और उसने मुझे बाइबिल निकाल कर पढ़ने की आज्ञा की। तब उसको चेतना हुई कि मुझे स्थिति का मुकाबला करना चाहिए। उसने साप्ताहिक (Week-end) छुट्टी

ली, घर गया और अपनी पत्नी को बताया कि मुझे क्या करना है। उसने देखा कि पत्नी समझती है। छुट्टी के बाद वह अपनी सैनिक छावनी में लौटा; अपने अधिनायक (आफ़िसर कमाण्डिङ्ग) के पास गया; अपनी टोपी और कमरबन्द उतारी और राइफ़ल के साथ इन चीज़ों को उसके चरणों पर रख दिया और बोला कि मैंने जीसस (ईसा) की आवाज सुनी है और अब मैं सैनिक नहीं रह सकता।

कैप्टन ने क्षण-भर उसकी ओर देखा; फिर अपनी जेब-घड़ी निकाली, उसे देखा और बोला—"इस वक्त ९ बजने में ५ मिनट हैं। ९ बजते ही गार्ड तुमको कैदखाना लेजाने के लिए यहाँ आयगा। यदि तुम इन चीज़ों को धारण करके सैनिक नही बने रह सकते तो उसके साथ कैद मे जाना पड़ेगा।"

जान पाँच मिनट तक उस लम्बे जवान अफ़सर के सामने खड़ा रहा और उसके बाद हवालात भेज दिया गया। सैनिक अधिकारियों ने निर्णय किया कि 'आदमी निश्चय ही पागल है। क्योंकि उसके सैनिक सेवा से इन्कार करने का और क्या कारण हो सकता है? यह तो हो नहीं सकता कि वह कायर या डरपोक हो, क्योंकि युद्ध का कोई खतरा नहीं है और स्विस सेना तो कभी लड़ती नहीं। इसमे रहना तो एक आदर की बात है; इस भाग्यवान् देश मे सैनिकों को सम्मान और प्रशंसा का पात्र समझा जाता है। इसलिए अकारण जान का ऐसा करना अवश्य ही उसके पागल होने का प्रमाण है।' इस प्रकार के विचार के बाद जान बूदराज़ पागलखाने भेज दिया गया। परन्तु वह पागल तो था नहीं; उसके होश-हवास इतने दुरुस्त थे और उसकी शान्ति एवं प्रसन्नता

इतनी प्रकट थी कि महीने के अन्त में उसे पागलखाने के बाहर करना पड़ा, क्योंकि पागलखाने के अधिकारियों ने देखा कि अधिक समय तक यहाँ रखने से उसकी तो कोई हानि है नहीं, हाँ अपनी मूर्खता सिद्ध होगी। इसलिए वह फिर सैनिक अदालत (कोर्ट मार्शल) के सामने भेजा गया। लुजान के टाउनहाल मे अदालत बैठी। सारा हाल ऐसे आदमियों से भरा था जो मुकदमे की तफ़सील को देखने, सुनने और उसको हृदयङ्गम करने को उत्कण्ठित थे। जान ने अपनी बात सीधे-सादे ढङ्ग से सुना दी। स्वीज़रलैण्ड के एक प्राचीन सैनिक कुटुम्ब के सदस्य तथा सेना के पब्लिक प्रासीक्यूटर मेजर अर्नाल्ड सेरीसोल के अनुरोध पर उसे कैद की सजा दी गई। मेजर सेरीसोल के चचेरे भाई, लम्बे-तगड़े जवान पीरी सेरीसोल † ने, जिनके पिता सरकार के मन्त्री रह चुके थे और जो स्वय भी एक अच्छे इजीनियर थे, इस मुकदमे का विवरण सुना। वर्षों से उनके हृदय मे सघर्ष चल रहा था कि सैनिकता, आर्थिक शक्ति और एक सहायता-प्राप्त राजकीय चर्च के बीच समझौता कैसे हो सकता है और उसके फंदे से कैसे छूटा जा सकता है। जब उन्होंने इस मुकदमे की कथा सुनी तो उनके मन में बैठ गया कि जान बूदराज ने रास्ता दिखा दिया है और स्वीजरलैंड के युवकों को उसके इस सच्चे मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। थोडे ही समय बाद लोगों ने पीरी सेरीसोल को भी, जान की तरह, सैनिक सेवा अस्वीकार करने के

---

† बिहार भूकम्प के बाद के निर्माण-कार्य में इन्होंने बड़ी सहायता की और अभीतक (२७ मई, १९३७) इसी सिलसिले में बिहार में हैं।

अपराध में, अदालत के सामने खड़े हुए पाया। समाचारपत्रों ने इस मुकदमे के विवरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

जेल मे बैठे-बैठे पीरी सेरीसोल ने भविष्य के कार्य की योजना बनाई। वह स्वभावतः कर्मठ व्यक्ति हैं। अतः केवल लड़ने से इन्कार कर देने से ही उन्हे सतोष न हुआ। उन्होने सोचा–'एक सैनिक जो सेवा करता है उससे अधिक उत्तम, अधिक स्थायी तथा गुटों, समझौतों, सधि-पत्रों एवं राजनैतिक दलबदियों के वातावरण से मुक्त स्वास्थ्यप्रद एवं सुखवर्द्धक, जीवनदायी एव शान्तिप्रद सेवा जबतक हम न कर सकें तबतक केवल नकारात्मक प्रवृत्ति व्यर्थ–सी हैं।'

सेना में परस्पर भ्रातृत्व का जो अद्‍भुत भाव होता है उसको वह समझते थे। वह यह भी जानते थे कि सेना में सैनिक जिस आनन्द का अनुभव करते हैं, वह कोई उनके युद्ध करने के अन्दर निहित नहीं हैं वरन् एकसाथ खतरे में पड़ने, साथ-साथ कठनाइयां एव मुसीबतें झेलने तथा एक-दूसरे के लिए और एक ही उद्देश्य के लिए एक प्रकार की रहस्यमय वफादारी निभाने में है। इसलिए पीरी ने एक नये ही ढङ्ग की सेना संगठित करने का निश्चय किया। इस सेना का वर्णन अगले (छठे) अध्याय में किया जायगा।

० ० ० ०

वेलाधारी डच कार्नेलियस बोयके को विवश होकर इंग्लैण्ड छोड़ना पड़ा, क्योंकि युद्ध के लिए सज्जित एवं संगठित एक राष्ट्र की इस विकट परिस्थिति में इसपर कौन विश्वास करता कि विदेशी, और फिर युद्ध से अलग एव उदासीन रहने वाले एक देश का निवासी, केवल

सच्चे प्रेम एव श्रद्धा के वशीभूत होकर अवैतनिक रूप से ईसाई भावनाओं का प्रचार कर रहा है ? क्राइस्ट के प्रति ऐसी भक्ति की बात का अधिकारियों के दिमाग मे घुसना कठिन है। इस श्रद्धा का उनकी पिन लगाने एव पच (छेद) करके फाइलों की सूची में डाल देने की भाषा में अनुवाद कैसे किया जा सकता है ? इसलिए बेचारा, अपनी अंग्रेज पत्नी के साथ, हालैण्ड लौट गया और वहाँ अपना साहसिक सेवा-कार्य आरम्भ कर दिया। बहुत शीघ्र दोनो (पति-पत्नी) ने अपने पास समान विचार के कितने ही लोगों को एकत्र कर लिया और किसानों, मजूरों एव सुशिक्षितों सबसे मित्रता बढानी शुरू की। उन्होंने बलुई जगली जमीन के एक टुकडे को साफ किया और (ऊरेश्ट की सीमा पर) लाल, नीले और हरे रग मे रगा हुआ एक बड़ा ही सुदर 'भ्रातृत्व-भवन' (ब्रदरहुड हाउस) निर्माण किया।

कार्नेलियस ने भ्रातृत्व के भावों के प्रचारार्थ सडकों के मोडों पर व्याख्यान देना शुरू किया। जब कुछ भीड़ एकत्र होजाती तब वह लोगों से शकाये निवारण करने एव प्रश्न पूछने के लिए कहता और स्थिति पर सर्वसम्भव दृष्टियों से विचार करता। किन्तु तबतक हालैण्ड में लोगों को वाणी की स्वतत्रता का अधिकार प्राप्त न था, इसलिए अधिकारियों की ओर से उसे सभायें न करने की चेतावनी दी गई और जब उसने उनकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया तो गिरफ्तार करके पुलिस अदालत के सामने पेश किया गया और उसे जेल की सजा मिली। पर इस प्रकार के उत्पीड़न से उसके दिल में चमकती सत्याग्रह की ज्योति कैसे बुझ सकती थी ? जिस दिन वह जेल से छूटा उसी दिन

उसी पहले स्थान पर जाकर उसने दूसरी सभा आरम्भ की। बार-बार इसी कार्यक्रम पर अमल किया गया। क्योंकि बिना सतत प्रयत्न, सघर्ष और कष्ट-सहन के कोई श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न नहीं होता। इसका परिणाम यह हुआ कि अधिकारी अन्त में थक गये और उन्होंने उसके भाषणों पर ध्यान ही न देने का ढग इख्तियार किया। इस प्रकार सत्य की विजय हुई।

जब महायुद्ध समाप्त हुआ और सधि होगई तब अहिंसावादी हम सब लोग, जो भावनाओं में एक होते हुए भी बहुत दिनो से राष्ट्रीय सीमाओं एव बधनो के कारण एक—दूसरे से बिछुड़े हुए थे, पॉच वर्ष की लम्बी अवधि के बाद, इसी अहिंसा-दल के 'भ्रातृत्व—भवन' (Brotherhood House) मे एकत्र हुए। वेलजियम, फ्रास, जर्मनी, आस्ट्रिया, स्वीडन, डेनमार्क, नार्वे, भारत, अमेरिका और इग्लैण्ड इत्यादि विभिन्न देशों एव जातियो के भाई यहॉ आमने-सामने, वृक्षों के नीचे लगे हुए लम्बे टेबुलों पर, साथ-साथ खाना खाने बैठे। यहीं 'अन्तर्राष्ट्रीय मैत्रीवर्द्धक भ्रातृसघ' (International Fellowship of Reconciliation) ‡ की स्थापना हुई और तब से बराबर वर्ष में दो-तीन बार उसका अधिवेशन होता रहता है।

---

‡ इस अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व सघ का केंद्रीय कार्यालय समय—समय पर लंदन, आस्ट्रिया और फ्रांस में रहता है। इस समय इसके मन्त्री एक फरासीसी श्री ऑरी रोजर (Henri Roser), और उनके सहायक अग्रेज श्री राबर्ट डेनियल हाग हैं। पता—Rue de Provence, Paris IX, France इस विषय में लिलियन स्टीवेसन—लिखित 'टुवर्ड्स ए क्रिश्चयन इण्टरनेशनल' (उपर्युक्त अथवा १७, रेड लायन स्क्वायर, लदन के पते पर प्राप्य) पुस्तक भी देखिए।

'हुलहाउस' शिकागो (अमेरिका) की मिस जेन आदम्स ने, अतलात (अटलाटिक) महासागर के उस पार, अमेरिका में, 'महिला शाति-आदोलन' चलाया। यूरोप के प्रत्येक देश की कतिपय सर्वोत्तम चरितवाली महिलाओ ने उनके इस सत्कार्य में योग दिया। ब्रिटेन की प्रधान प्रतिनिधि मिसेज (श्रीमती) स्वानविक थी। ये महिलायें प्रायः सभी देशो की सरकारों के प्राधनों से मिलीं और उनसे यह अनुभव करने की अपील की कि यह युद्ध आत्म-सहारक है और चाहे विजयी कोई हो पर विजेता एव पराजित दोनो को, समान रूप से, लम्बी अवधि तक कष्ट भोगना पडेगा और ससार के सभी राष्ट्रों के निवासियो की सामान्य-जीवन—चर्या वर्षों के लिए त्रस्त एव छिन्न-भिन्न होजायगी। इसके अलावा युद्ध में अनिवार्यतः हमारे सामान्य मानव स्वभाव की सभी गर्हित एवं निकृष्ट प्रवृत्तियों को उत्तेजना मिलेगी और युद्ध को जारी रखने से मानवीय शुभेच्छा एव निर्मलता के मूल के ही नष्ट होजाने का खतरा है।

० ० ० ०

इस वात का पता लगाने के लिए हमारे पास कोई विश्वसनीय साधन नहीं हैं कि इन अपीलों, प्रार्थनाओं एव अनुरोधों का विभिन्न राष्ट्रों की सरकारों के प्रधानों पर क्या असर पड़ा, किन्तु इस प्रयत्न से एक दूसरा शुभ परिणाम यह निकल आया कि स्त्रियों की शाति-वर्द्धन की आकाक्षा ने 'शाति एव स्वतन्त्रतावर्द्धक महिला अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ' Women's International league for peace and Freeddom†

† The womens' International League, 55, Gower Street, London

का रूप धारण किया। यह संस्था आज प्रायः सभी स्वाभिमानी देशों में उत्साहपूर्वक काम कर रही है।

° ° ° °

"अपने शत्रुओं को प्रेम करो।

"जो तुम्हे शाप दे उनकी मङ्गल-कामना करो।

"जो तुम्हारे प्रति द्वेषपूर्वक आचरण करे उनके लिए प्रार्थना करो।

"-भलाई से बुराई को विजय करो।"

ये क्राइस्ट (ईसा) के प्रवचन हैं। क्या उसके बताये जीवन के नियमों का पालन करना सभी के लिए कठिन नही है ? इस प्रश्न के उत्तर में मुसलमान कहते हैं–'हा, ये नियम कठिन हैं। 'और इस अन्तर के कारण ही अपने पथ-प्रदर्शक को हमारे मार्ग-दर्शक से अच्छा एव बुद्धिमान मानते हैं। मुसलमान कहते हैं कि मुहम्मद ने हमें ऐसे नियम बताये जिनका हम पालन कर सकते हैं, पर ईसा के नियमो का कोई पालन नहीं करता। इतनाही नहीं, ईसाई स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि उनका पालन करना असम्भव है। 'कैसे दोषपूर्ण कानून हैं ! कैसा उदासीन वह नियम-प्रणेता है। आह यह जीसस क्राइस्ट कितना असफल सिद्ध हुआ है ! इस प्रकार वे तर्क करते और अपने निश्चयको प्रकट करतेहैं।

क्या कभी ईसा के उपदेशो पर अमल हुआ है ? "पिता, उन्हे क्षमा कर; वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।" यह क्रास ही था जिसने प्रेम और क्षमा की प्रबल शक्ति का प्रदर्शन किया।* अपने प्रभु

---

*The atonement and Non-Resistance, by William E. Wilson. 1/-Friends' Book shop, Euston Road, London

(ईसा) से प्रभावित स्टीफेन जब साल (Saul) तथा अन्य हत्यारों के हाथ से कत्ल किया गया तब गिरते हुए बोला—"प्रभु, इस पाप का आरोप 'इनपर न करना।" घृणा का इस प्रकार सामना करने का ही यह परिणाम हुआ कि पीड़ाकारी साल एकदम बदल गया और बाद में लोगों ने उसे विशाल हृदय एव उदार पाल के रूप में देखा।

एक कार्निश ग्राम में एक खुली प्रार्थना-सभा हो रही थी। जब प्रार्थना पूरी हो चुकी तो धार्मिक नेता से पूछा गया कि "क्या हम लोग जर्मनों के लिए भी प्रार्थना नहीं कर सकते हैं?" यह केवल तार्किक प्रश्न न था। अपने शत्रुओं को प्यार करना और उनके लिए प्रार्थना करना कोई आसान काम नहीं है। फिर यदि शत्रु हजारों मील दूर हों तो यह हो भी सकता है, पर जब शत्रु बिलकुल नजदीक पड़ोस मे हों तब तो यह अत्यन्त दुष्कर है। प्रार्थना गाँव की एक सडक पर हुई थी। उसके सामने ही कार्निश समुद्र-तट था, जहाँ आकाश और अतलात (अटलांटिक) महासागर एक-दूसरे को आलिङ्गन किये हुए-से प्रतीत होते हैं। क्षितिज के ऊपर एक बड़ा जहाज दिखाई पड रहा था, पर ग्रामवासियों ने देखा कि वह अकस्मात् गायब होगया है पर उस विस्तृत नील-प्रवाह में वही रङ्ग है, वही सौन्दर्य है; वह जरा भी कम नहीं हुआ है। ग्रीष्म-दिवस की व्यापक सरल शान्ति ज्यों-की-त्यों है, परन्तु कितने ही मकान तहस-नहस होगये हैं। जर्मन पनडुब्बियाँ (Submarines) अपना काम बड़ी होशियारी से कर रही थीं।

प्रार्थना करानेवाले पुरोहित ने कहा कि 'मेरी समझ से इस गॉव में शत्रुओं के लिए प्रार्थना करना मूर्खतापूर्ण होगा, पर जिस

लड़की ने उसके सामने जाने और प्रश्न पूछने का साहस किया था, फिर उसने पूछा—"ऐसा क्यों ?"

उसे जवाब मिला—"यदि तुम इसका यत्न करोगी तो तुम्हारी हड्डी-पसली कुछ न बचेगी।"

उस लड़की को भी खुली सभाओं का कुछ अनुभव था, इसलिए उसने पादरी की इस बात पर एतराज किया। पुरोहित चिढ़ गया और उसने अपनी बात फिर दोहराई।

पर जान पड़ता है लड़की बड़ी नटखट थी, क्योंकि उसने अपना तर्क बदलकर कहा—"सम्भव है, ऐसा ही हो; पर जब पाल ‡ को कुछ अप्रिय बातें कहनी थीं तब वह मौन नही रहा। उसने हड्डी-पसली टूटने का खतरा उठाकर भी उन्हे कहा, पर उसे कुछ न हुआ।"

पादरी इतना झल्ला गया था कि उसकी पत्नी को इस अवसर पर आकर उसे अपने साथ ले जाना पड़ा; पर जाते-जाते भी वह हाथ के इशारे से तथा मुँह से विरोध प्रकट करता ही गया।

° ° ° °

पर सभी मिनिस्टर ऐसे न थे । कितने ही मिनिस्टरो एवं चर्च के सदस्यों की प्रार्थना के सम्बन्ध में दूसरे ही प्रकार की अनुभूति थी। इन लोगों ने अनुभव किया कि प्रार्थना ही एक ऐसा राज्य है जहाँ कोई बाहरी शक्ति हस्तक्षेप नही कर सकती। इस बीसवीं शताब्दी में प्रभु के प्रति मनुष्य की प्रार्थनाओं को कोई भी साम्राज्य-शक्ति अपनी इच्छानुकूल

---

‡ ईसा का एक प्रधान अनुयायी और ईसाई धर्म का एक मुख्य संत।

दबा नहीं सकती। यहाँतक कि सैनिक अधिकारी भी, जो अपनी अदूर-दर्शिता के लिए प्रसिद्ध होते हैं, स्वीकार कर चुके थे कि विभिन्न देशों के ईसाइयों को, जो स्टाकहाल्म में एकत्र होकर सामूहिक प्रार्थना करना चाहते थे, पासपोर्ट देने से इन्कार नहीं किया जायगा। समग्र यूरोप मे इस प्रकार का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन करने के प्रयत्न किये जा रहे थे। स्वीडन के विशप सोडरब्लाम इस सम्मेलन के सयोजक थे। परन्तु अन्त में, महीनो की लिखा-पढ़ी के बाद, लोगों को पासपोर्ट देने से इन्कार कर दिया गया और हम सबको अपने ही घरों पर रुकना पड़ा। कौन कह सकता है, पर सभव है इस प्रकार प्रभु ने अधिक पूर्ण एव ध्यानमग्न प्रार्थना का अवसर हमे दिया हो। क्योंकि प्रार्थना तो प्रभु से कामना-पूर्ति की भिक्षा माँगने का नाम नहीं है, वह तो प्रभु के सामने स्थिर और शान्त मन के केंद्रीकरण अथवा निमज्जन का नाम है, जिस-से प्रार्थी के अन्तर मे स्वत· ईश्वरीय विवेक, ईश्वरीय शक्ति और ईश्व-रीय धैर्य आशिक रूप मे प्रकट होता है।

हमें ईश्वर की भाँति सोचने का अभ्यास डालना चाहिए, तभी हम मानव प्रकृति के महत्व एव मर्यादा के अनुकूल श्रेष्ठ कार्य करने की आशा कर सकते हैं।

अकेले इग्लैंड में ही लगभग पद्रह हजार आदमी सैनिक सेवा से इन्कार करने के कारण सरकारी अधिकारियों के सामने उपस्थित किये गये और भी कितने ही लोगों ने ऐसा रुख इख्तियार किया था पर, किसी-न-किसी कारण-वश वे अधिकारियों के सामने नहीं लाये गये इसलिए सरकारी सूची में उनकी गिनती नहीं की गई। यह न तो संभव है

और न वांछनीय ही है कि इसका विश्लेषण किया जाय कि कितने तो धार्मिक विश्वास के कारण इसमें आये थे और कितने अन्य कारणो से इस निश्चय पर पहुँचे थे।

० ० ० ०

महायुद्ध के समय यूरोप के दूसरे किसी देश मे कोई सगठित युद्ध-विरोधी आन्दोलन नही किया गया, इसलिए यूरोप के अन्य देशों के उस समय के युद्ध-विरोधियों के सम्बन्ध मे कोई ऑकडे प्राप्त नही हैं। श्री डबल्यू० जे० चेम्बरलेन ने अपनी पुस्तक 'शाति के लिए युद्ध' (Fighting for Peace) में लिखा है–"यह मालूम है कि जर्मनी, आस्ट्रिया, हांगरी, रूस, बोहेमिया, अमेरिका, यहातक कि फ्रांस में भी वहुतेरे आदमियों ने युद्ध में भाग लेने से इन्कार किया था और ब्रिटिश युद्ध- विरोधियों की भॉति ही वे भी दडित हुए थे। हगरी में, नाजरीनों की एक वड़ी संख्या थी जिन्होंने सेना में काम करने से इन्कार कर दिया था। ये वेचारे, सब-के-सब, गोलियों से भून दिये गये थे। बोहेमिया में भी युवक जेको (Czechs) द्वारा सैनिक सेवा का काफी विरोध किया गया और वहाँ भी जिन्होने लड़ने से इन्कार किया उनको गोली मार दी गई।"

बहुत जल्द यह बात स्पष्ट होगई कि पूर्ण शारीरिक और मानसिक निःशस्त्रीकरण (अहिंसा) अपरिग्रह की ओर लेजाता है। अहिंसा के साधक को, किसी जगह या कुटुम्ब मे सिर्फ जन्म लेने के कारण मिली हुई सुविधाओं तथा धन-सम्पत्ति को छोड़कर दरिद्रनारायण की सेवा में निमग्न होना पड़ता है। शताब्दियों पूर्व ईसा तथा उनके धर्म

ने हमे शिक्षा दी थी—"जब तुम्हारे ही भाई जीवन की आवश्यक वस्तुओं से रहित हैं तब यदि तुम आवश्यकता से अधिक, फालतू, चीजें रखते हो तो तुम वस्तुत. दूसरों की चीज पर कब्जा किये हुए हो और इसलिए चोरी कर रहे हो।" पहली शताब्दी से ही अपनी सुविधाओं का त्याग क्राइस्ट के अनेक भक्तों का साधारण जीवन-क्रम रहा है। त्याग ही सबसे सच्ची सम्पत्ति है, यह बात उन अगणित प्राणियों, मानवता के उन अज्ञात सेवकों के जीवन मे बार-बार प्रदर्शित और प्रमाणित हो चुकी हैं जिन्होंने यश और प्रदर्शन के वातावरण से दूर रहकर चिकित्सा-लयों, दीन-दुखिया जनों की झोंपड़ियों, दूरस्थ गाँवों एवं प्रयोगशालाओं में केवल अपने पवित्र मानसिक सतोषको लिए हुए ही जीवन बिता दिया है।

० ० ० ०

कतिपय अहिंसावादी व्यक्तियों के मन में यह बात अब दिन-दिन स्पष्ट होती जारही थी कि हमारे पास सम्पत्ति जितनी ही कम होगी, सेना समर्थित पुलिस की हिंसक शक्ति पर हम उतना ही कम निर्भर करेंगे। सम्पत्ति की वृद्धि के कारण ही उसकी रक्षा के लिए पुलिस और बाद में पुलिस की सहायता के लिए सेना की आवश्यकता होती है। इसलिये पुलिस एवं सेना की हिंसा से समाज को छुड़ाने के लिए भी अपरिग्रह की, त्याग की, आवश्यकता है।

इसलिए ऐसे कुछ साधकों ने, अपनी सुविधाओं का त्याग कर, गरीबी को स्वेच्छा से अपना लिया। और इस सिद्धान्त की व्यावहारिकता के प्रयोग भी आरंभ किये कि यदि हम समाजकी सेवा करते हैं और केवल अनिवर्यत. आवश्यक चीजों को लेकर ही जीवन निर्वाह करते हैं तो

अपनी चीजें, अपने वस्त्र, अपनी सामग्री को अरक्षित, बिना ताला बद किये, खुले आम निर्भय एवं निश्चिन्त होकर छोड़ सकते हैं या नहीं। क्योंकि पास-पड़ोस के अपराधी मनोवृत्ति वाले लोग ('क्रिमिनल्स') भी यह तो चाहते ही हैं कि हम उनके बीच सेवा करते रहे।

इन प्रयोगों के, व्यवहार में, सदैव आशानुकूल परिणाम तो नहीं निकले, परन्तु कई बार ऐसी मनोरंजक परिस्थितियाँ पैदा हुईं तथा ऐसी घटनायें हुईं जिनका वर्णन आगे अवश्य करना पड़ेगा।

० ० ० ०

समारे सदस्यों मे से एक वेल्शनिवासी श्री जार्ज डेवीस † ने जेल से बाहर आने के बाद अपने सम्पूर्ण वैभव एवं अधिकरोंका त्याग कर दिया, जिन्हे उनका कुटुम्ब एक युग से भोगता चला आरहा था। उसने एक गॉव में अपना डेरा डाल दिया और गॉवों में घूम-घूमकर किसानों एवं श्रमिकों से परिचय एवं मित्रता करने लगा। उसने उन ग्रामवासियो से उनकी सरल एवं सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार-बुद्धि (कामन-सेस) को ग्रहण किया। ज्यो-ज्यों समय बीतता गया, उसकी शाति-प्रियता की प्रसिद्धि चारों ओर फैलती गई। उसने अहिंसा के लिए निरतर जो परिश्रम एवं महान् कार्य किया था उसके लिए नहीं, वरन् सलिए कि ग्रामवासियों एवं एक ही कुटुम्ब के विभिन्न सदस्यों में होने-वाले कटु झगड़ों की तह तक पैठकर वह उनकी जड़ को पकड़ता था।

---

† देखिए जार्ज डेवीस–लिखित दो पुस्तकें 'Direct Action, और 'The Politics of Grace' The Epworth Press' फ्रेण्ड्स बुक शाप, यूस्टन रोड लदन से प्राप्त।

औद्योगिक झगड़ों मे भी उनको श्रमिकों का मामला मालिकों के सामने रखने के लिए बराबर बुलाया जाने लगा। खानों मे काम करनेवाले मजूर और खानो के मालिक दोनों ने ही उससे बार-बार प्रार्थना की कि वह उनके बीच ही स्थायीरूप से बस जाय। वह सदा मनुष्य की प्रकृति की तह मे पैठकर उसे देखता था, इसलिए उसे वहाँ कोई सद्गुण, कोई अच्छाई मिल ही जाती थी। वह कभी न भूलता था कि वहाँ भी प्रभु का, ईश्वर का, वास है।

उसके साहसपूर्ण कार्यों की कहानी बाइबिल के एक नवीन अध्याय की भाँति मालूम पड़ती है, पर उसे कहने का यह स्थान नहीं है। यहाँ तो सिर्फ उसकी आयर्लैण्ड-यात्रा का जिक्र कर देना काफी होगा। यह यात्रा उसने उस समय की जब उत्तर और दक्षिण, प्रोटेस्टेण्ट और कैथलिक[*] के बीच का झगड़ा इतना बढ़ गया था कि शांति की कोई सभावना न थी। पर जार्ज डेवीस ने दोनों पक्षोंके प्रमुख व्यक्तियों से भेंट की और उन्हें, ईश्वर के नाम पर, शांति का एक ही संदेश सुनाया।

एक बार एक जगह उसे यह जवाब मिला—"आपकी बात ठीक है। मैं जानता हूँ, आप ठीक कहते हैं। मैं चाहता हूँ कि आपके बताये रास्ते पर चल सकता तो अच्छा होता। किन्तु दुर्भाग्य-वश मैं वैसा नहीं कर सकता। मैं क्राइस्टों के राष्ट्र का प्रतिनिधि नहीं हूँ।"

राजनीतिज्ञ को दुःखपूर्वक विदा होना पड़ा, क्योंकि जन-मत में पूर्णतः जाग्रत क्रिश्चियन उदार भावना न थी। इस प्रश्न को समझने-

---

[*]जैसे हिन्दुओं मे सनातनी और आर्यसमाजी हैं वैसे ही ईसाइयों में कैथलिक एवं प्रोटेस्टेण्ट हैं।

वाले जागरूक सावधान लोग न तो पर्याप्त संख्या में थे, न संगठित रूप में। प्रायः धार्मिक जन राजनीति से दूर भागते हैं और मदिरा बनानेवालों, बैंकरों तथा शस्त्रास्त्र के महाव्यापारियों के पुरस्कार-एजेण्टों के हाथ में यह क्षेत्र उनके नाजायज फायदा उठाने के लिए खुला छोड़ देते हैं।

० ० ० ०

१९१७ ई० में लार्ड लैंसडौन ने शांति की बात भी न चलाई। जनता को इस सम्बन्ध में बहुत ही कम खबरें मिलती थीं, पर हमने सुना कि जो शर्तें सुझाई गई थीं वे दोनों पक्षों के लिए उचित थीं; उनसे किसी पक्ष में नाराजी या बदले की भावना को उत्तेजना नही मिलती थी। पता नहीं इस प्रयत्न में सफलता क्यों नहीं हुई, पर लार्ड रिडेल की एक नव-प्रकाशित जीवनी को देखने से इसपर कुछ प्रकाश पड़ता है। इसमें लिखा है कि यह प्रश्न उन लोगों के सामने आया था जो उस समय हमारे भविष्य के कर्ता-धर्ता थे पर सर वेसिल जोहराफ़ युद्ध जारी रखने के पक्ष में थे। ‡

लार्ड लैंसडोन के प्रयत्नों को कोई प्रबल रूप प्राप्त न हो सका, क्योंकि जन-साधारण को इस बात का कुछ पता न था कि अन्दर क्या होरहा है। इतने पर भी जो कुछ मालूम हुआ उसके बलपर, मताधिकार-आन्दोलन की नेत्री श्री मती सिलविया पैकहर्स्ट ने, जो 'ओल्ड

---

‡पेरिस-स्थित तात्कालिक ब्रिटिश राजदूत लार्ड बर्टी ने अपनी २५ जून १९१७ की डायरी में, इस सम्बन्ध में, सूचना की थी—"जोहराफ़ पूर्णतः युद्ध जारी रखने के पक्ष में हैं।" देखिए परिशिष्ट ४।

फरबो' के श्रमिकों के बीच सेवा का जीवन व्यतीत करती थीं, सरकार का ध्यान शांति के इस सुअवसर की ओर आकृष्ट करने के लिए एक जुलूस एवं प्रदर्शन का संगठन किया। किन्तु यह घटना एक स्थानीय प्रदर्शन के रूप में ही रह गई, यद्यपि इसमें प्रधान सेनापति सर जान फ्रेंच की बहन श्रीमती डेस्पार्ड, 'टाम ब्राउस स्कूलडेज' नामक प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक जज ह्यूजेज की पुत्री मेरी ह्यूजेज, कुमारी मेरियन एलिस (अब लेडी पारमूर), 'शिशु-उत्पीडन निवारक संघ' ('सोसायटी फार दि प्रिवेंशन आफ क्रूअल्टी टु चिल्ड्रेन') के जन्मदाता की बेटी रोजा वाघ हाबहाउस जैसी सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित स्त्रियाँ सम्मिलित थीं। यह अल्पसंख्यक जुलूस देखने में अवश्य ही हास्यास्पद लगा होगा, पर हम लोगों ने अपना काम किया। जुलूस विक्टोरिया पार्क, जहाँ सभा होने को थी, पहुंच गया तो अधिकारियों ने बड़ी आसानी से सभा को छिन्न-भिन्न कर दिया। उपनिवेशों से आये हुए चंद सैनिकों को उन्होंने इशारा कर दिया कि ये लोग जर्मनों के समर्थक हैं। उन सैनिकों को हम लोगों के बीच घोड़े दौड़ाने एवं हंटर फटकारने का अच्छा मौका हाथ आया और सभा समाप्त होगई।

मुझे उस दिन की घटनायें अच्छी तरह याद हैं कि उस धक्का-मुक्की में अकस्मात् अकेली पड़जाने, वर्दीधारी सैनिकों के इधर-उधर दौड़ने, उनके 'मारो-मारो', 'जरा इनको मजा चखा देना' इत्यादि शब्दों को सुनकर मेरे मन में क्या-क्या भाव उत्पन्न हुए थे। बाद में मैंने देखा कि श्रीमती डेस्पार्ड को गुण्डे स्त्री-पुरुषों की एक भीड़ ने घेर लिया है। ये लोग हमारे सम्बन्ध में फैलाई गई झूठी अफवाहों से

पागल हो रहे थे। कभी घूंसे तानते, कभी प्राण लेने की धमकी तथा गालियाँ देते थे। इन लोगो के बीच वह बेचारी शांति- भाव से खडी थी। उसने उनके द्वारा किये जानेवाले अपमान का कुछ उत्तर न दिया। सिर्फ रह-रहकर अपने इस विश्वास को दोहराती थी-"तुम हमारे टुकड़े-टुकड़े कर सकते हो, पर मेरी कोई हानि नही कर सकते।"

महायुद्ध से पहले ईसा के एक अनुयायी अफ्रीका के एक गाव में बस गये थे। उन्होंने देखा कि खून का बदला तो वहाँ के सामाजिक एवं धार्मिक रिवाजो का एक हिस्सा ही बन गया है। अतीतकाल मे यदि किसीने किसीकी हत्या करदी थी तो उसके वंशवालों से पुश्त-दरपुश्त बदला लेने की चेष्टा की जाती है। जैसे-जैसे अवसर मिला, उसने इन लोगो को समझाया कि न्याय की इस हानिकर प्रणाली, खून का मूल्य खून से चुकाने की इस प्रथा की अपेक्षा प्रेम और क्षमा का मार्ग कहीं अच्छा है। क्षमाशीलता और अहिसा से पूर्ण अपने जीवन में उसने इसका क्रियात्मक प्रमाण एवं उदाहरण उन लोगो के सामने उपस्थित किया। उसकी सतत शिक्षा तथा अपने जीवन में उन शिक्षाओं के व्यवहार का यह परिणाम हुआ कि कतिपय हबशियों ने स्वयं ही प्रतिहिंसा का त्याग करके क्षमाशीलता को ग्रहण कर लिया। एक दिन, प्रार्थनास्थल पर, यह अद्भुत् दृश्य दिखाई दिया कि क़त्ल किये गये सरदार का पुत्र और स्वय अपना अपराध स्वीकार करनेवाला हत्याकारी दोनों, पास पास, प्रभु के ध्यान में नतमस्तक हैं।

इस प्रकार अफ्रीका ने एक बड़े ही महत्वपूर्ण सत्य को स्वीकार किया।

इसके बाद युद्ध आरम्भ हुआ और काले महाद्वीप के अनेक मूल निवासी (हब्शी) फरासीसी सेना में भरती किये गये तथा उन्हें ईसाइयों के मारने के कार्य मे मित्र-राष्ट्रों की सहायता करने के लिए भेजा गया। भरती से बचने के लिए कुछ तो अपने घर, कुटुम्ब और चौपायों को छोड़कर ब्रिटिश सीमा में चले गये, किन्तु वहाँ भी सुरक्षित न रहे। युद्ध के सकट-काल के बहाने ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें फरासीसियों के सुपुर्द कर दिया और फरासीसी अधिकारियों ने उन्हे यूरोप के युद्ध-क्षेत्र में भेज दिया। सधि होने के बाद वे जर्मन मित्र-राष्ट्रों की रक्षक सेना [Army of ccupation] मे शामिल कर लिये गये।

शेली के शब्दों में हम पूछ सकते हैं—

"Christ, was this thy passion,
To foreknow the deed of Christian men ?"

: ६ :

संधि के बाद

जिस दिन संधि होकर शाति-स्थापना हुई, उसके दूसरे दिन लंदन के एक दैनिक पत्र ने अपने प्रत्येक पृष्ठ पर बार्डर देकर बड़े-बड़े अक्षरों में निम्नलिखित तीन शब्द प्रकाशित किये:—

killing has stopped !

['क़त्ल बद होगया']

छोटी सड़कों एवं गलियों के मकानों में रहनेवाली स्त्रियों ने, अपनी खुशी प्रकट करने के लिए, मॅगनी माँगे हुए लम्बे-लम्बे टेबुल सड़कों पर लगाकर बीच सड़क पर अपने कुटुम्बों को भोजन कराया। इसके पहले ऐसा दृश्य कभी नही देखा गया था।

हमारे कुछ सैनिक युद्ध-भूमि से हटाकर कोलोन (Cologne) में, विजयी शक्तियों की रक्षक-सेना (Army of occupation) में भेज दिये गये थे। उनको संधि एवं शाति होजाने पर बड़ी खुशी हुई। वे जर्मनों और विशेषतया जर्मन बच्चोंसे परिचय और मित्रता करने लगे। ब्रिटेन के श्रमियों को बच्चे, फूल, पशु और संगीत ये चार चीजें बड़ी प्यारी हैं। परन्तु उन्हें यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि ये जर्मन बच्चे दुर्बल और पीले पड़ गये हैं और उनके सूखे हुए चेहरों पर दुःख

की छाया है।पता लगाने पर उनको मालूम हुआ कि देश में खाद्य-पदार्थों की कमी होजाने के कारण बहुत दिनों से उनको पर्याप्त पोषण नही मिला है । यद्यपि इस घेरे (blackode) और बाहर से खाद्य-पदार्थ जर्मनी में न आने देने के लिए वे नहीं जलसेना जिम्मेदार थी, फिर भी वे यह कैसे भुला सकते थे कि हम सब एक ही सेना के अंग हैं ? उन सैनिकों को इन बातों से बड़ा दु:ख हुआ और उन्होंने यह निश्चय किया कि अपने हिस्से के भोजन में से थोड़ा-थोड़ा निकालकर इन सब बच्चों को खिलाना चाहिए। फलतः उस नगर (कोलोन) मे यह दृश्य नित्य दिखाई पडने लगा कि टामी (अंग्रेजी सैनिक) लोग जर्मन बच्चों को जगह-जगह पंक्तिबद्ध बैठाकर खिला रहे हैं। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा, बाद में, भीड़ के बहुत बढ़ जाने के कारण, अधिकारियों-द्वारा इसे बंद करा दिया गया। परन्तु ब्रिटिश सैनिक कोई दब्बू प्राणी नही है; वह अपना नया कल्याणकर कार्य क्यों छोड़ देता ? बच्चों से कहा गया है कि वे सड़कों पर नहीं दूसरी जगह आवे और और सडकों पर खिलाने की जगह बच्चों को बैठकों के पिछवाड़े, जहाँ भीड़ नहीं हो सकती थी, लेजाकर खिलाया जाने लगा।

एक दिन मै बोटाल्फ रोड से होकर कहीं जा रही थी। रास्ते मे एक श्रीमती स्मिथ से भेट हुई। उसके हाथ मे उसके सैनिक पुत्र का कोलोन से आया हुआ पत्र था। उसने मुझे पुकारकर कहा—"बहन, देखो मेरा डिक क्या लिखता है—'प्यारी माँ, यहाँकी स्थिति बड़ी दु:खदायी है। बेचारे बच्चे भूखे हैं और बड़े दुर्बल दिखाई पड़ते हैं। हम उन्हे थोडा खिलाते हैं, पर यह पर्याप्त नहीं है। क्या देश मे तुम लोग इसके लिए कुछ नहीं कर सकते ?'

इस पत्र से उन सैनिकों के दिल की व्यथा मालूम पड़ती है। परन्तु उधर जहा यह हालत, थी, तहाँ अब लन्दन की दुकानो मे खाद्य-पदार्थ पर्याप्त मात्रा में आने लगे थे। अब तो फ्राइक चाकलेट क्रीम भी प्राप्त था। जिसके पास पैसा हो वह अब विना कूपन या प्रमाणपत्र के मक्खन खरीद सकता था। धनवान लोग यथेच्छ क्रीम प्राप्त कर सकते थे। 'बो' के लोंगो को यह बात अत्यन्त लज्जाजनक प्रतीत हुई कि जब अपने देश में यह सब होरहा है तब जर्मनी मे खाद्य-पदार्थों के आयात पर रोकथाम चली ही जा रही है। इस नीति के फलस्वरूप, पर्याप्त पोषण न मिलने के कारण, मध्य-यूरोप मे फैलने-वाली बीमारियो के समाचार भी आने लगे।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री एच० डबल्यू० नेविंसन ने इन स्थानों को देखने के बाद लौटकर हमें बताया कि "एक आस्ट्रियन अस्पताल मे जब मै गया तो उसके शिशु–विभाग के करुण दृश्यों के सामने देर तक खड़ा न रह सका।" हम सब जानते थे कि श्री नेविसन एक बड़े परिव्राजक हैं; प्रायः यात्रा करते रहते हैं और दुनिया के कितने ही कठिन भागो की उन्होंने यात्रा की है। हमें याद था कि अफ्रीका मे जब गुलामो पर, हबशियों पर, गोरे आक्रमण करके, उनको मार-मार-कर उनकी दुर्दशा कर रहे थे, तब भी नेविंसन अफ्रीका में गये थे। उस समय उनके मार्ग में बड़ी कठिनाइया खड़ी की गईं, पर प्रत्येक बीभत्स दृश्य, प्रत्येक निर्दय उत्पीड़न देखे विना उन्होंने वहा से लौटना पसन्द न किया, क्योंकि वह सच्ची घटनाओं को जानकर यूरोप के जन-मत को उस अत्याचार के विरुद्ध जाग्रत करना चाहते थे। ऐसे–

ऐसे निर्दयतापूर्ण दृश्यों को बारम्बार देखे हुए साहसी नेविसन भी उन बच्चों की दुर्दशा का करुण दृश्य अच्छी तरह न देख सके। वह प्रत्येक बच्चे के पास जाना और उसकी तबियत के बारे में उससे पूछताछ करना चाहते थे। पर उन्होंने कहा-'हर बिस्तरे के पास खड़ा होकर प्रत्येक बच्चे से निर्दयता की वही भयानक कथाये बार-बार सुनने का साहस मुझे न हो सका। यह मेरे बर्दाश्त के बाहर था। जब मैं पास जाता तो प्रत्येक बच्चा अपनी बडी-बड़ी चमकीली आखों से मेरी ओर देखता। उनकी इन आखों और पतले गालों में उनके दुःख की कहानी लिखी हुई थी। वे मेरी ओर उसी आशा और उत्कण्ठा से देखते थे, जैसे चिडियों के बच्चे अपने माताओं के खाद्य-पदार्थ लेकर आने पर चोंच खोलकर उनकी ओर देखते हैं। पर मेरे पास तो उनके लिए भोजन न था। एक प्रसूति-ग्रह (मेटरनिटी होम) मे दो महीने के अन्दर में कुल सौ बच्चे पैदा हुए जिनमे अट्ठानवे दूध के अभाव में मर गये; बेचारी दुर्बल माताओं की छातीमे दूध न था। "हाय ! यह कैसी करुण बात थी।

परन्तु इस तरह की खबरे अंग्रेजी दैनिक पत्रों मे शायद ही कभी छपती थीं। जनता को इन बातोंकी कोई खबर न थी। इसलिए हम लोगों ने इसी बात का आन्दोलन किया कि लन्दन के पत्र-सम्पादकों से मिलकर उनसे सच्ची बातें छापने की प्रार्थना करनी चाहिए। हम लोग उनसे मिले, पादरियों और नगर-सभा (टाउन कौंसिल) के सदस्यों से भी भेंट की गई। पर हम लोगों को कई स्थानो पर विचित्र जवाब मिले। किसी सम्पादक ने कहा—"ऐसी बाते लोकप्रिय नहीं होंगी।" किसीने कहा— "यह सत्य नहीं होसकता, अन्यथा इसकी खबर हमें अबतक अवश्य

मिल चुकी होगी।" किसीने कहा—"अच्छा हुआ; वे इसी योग्य थे।' ये भावनाएं शांति-स्थापन के बाद पैदा हुए बच्चों के बारे मे थी।

जब हम लोगो ने यह बात सुझाई कि लोगो को छः-छः महीने एक-एक साल के लिए इन बच्चों को अपने कुटम्ब में रखना चाहिए तो एक आदमी ने जवाब दिया कि "घर मे एक राक्षस को रखना हमारे बच्चो के प्रति अनुचित होगा।" हाय! साढ़े चार वर्ष के अन्दर अखबारो द्वारा फैलाई गई झूठी खबरो ने कुटम्बो के इन दयालु पिताओं के हृदय मे कितना ज़हर भर दिया और उन्हे कहाँ लेजा पटका।

० ० ० ०

'बो' निवासियोंने प्रधान मन्त्री को इस आशय का एक पत्र भेजा कि 'हम अपने अनुभव से भूख की पीड़ा को जानते हैं इस लिए हम और हमारे बच्चे यह नही चाहते कि दुनिया के किसी भाग मे कोई भी भूखा रहे।—इससे अच्छा तो यही होगा कि यों, धीरे-धीरे मारने* तिल-तिल कर के भूख की आग मे जलाने की जगह इन बच्चो को बम गिराकर एक दम खत्म कर दिया जाय। ईश्वर के नाम पर खाद्य द्रव्यों की इस रोक को उठा लीजिए।'

उन्होंने पत्र खुद अपने ही हाथों लेजाकर प्रधान मन्त्री को देने का निश्चय किया। उनका कहना था कि यदि समाचर पत्र जर्मन बन्धुओं की असली स्थिति से जनता को आगाह नहीं करते तो हमी इस

---

*इसके कारण शरीर की कतिपय हड्डियां भीतर-ही-भीतर नरम होकर टेढ़ी पड़ जाती हैं जिसके कारण बाद मे लड़कियो को प्रसव-काल में बड़ा कष्ट होता है और जान का खतरा भी रहता है।

के लिए कोशिश करेंगे। और अपने शरीर कों जीता-जागता समाचार-पत्र बना डालेगे' इस निश्चय को हम लोगों ने शीघ्र कार्यान्वित किया। दुःख प्रदर्शक वस्त्र पहने हुए एक के पीछे एक पक्ति बनाकर हम लोग वाहर निकली। हमने सुन्दर बडे-बडे अक्षरों में लिखे हुये पोस्टर तैयार कर लिए थे और उन्हे दफ्तियो पर चिपका कर लकड़ी की लम्बी तीलियों में बॉध लिया था जिसमे सुभीते के साथ राह चलतू लोग उन वाक्यों को पढ सके।

इस प्रकार हम नगण्य व्यक्तियो का यह छोटासा दल बाहर निकला। एक मॉ को अपनी दो छोटी वचियो को साथ लाना पड़ा। इन बच्चियो की हाथगाड़ी (पेराम्बुलेटर) के दोनों ओर हमने लकड़ी में बडे ऊॅचे पोस्टरों पर लिखा, 'बो' के बचों का यह सदेश लगा दिया था—"हम नहीं चाहते कि कहीं भी बच्चे भूखे रहें।" सबसे पीछे जो पोस्टर था उसपर ये शब्द लिखे हुए थे —"तुम्हारे स्वर्गस्थ पिता (प्रभु) की यह इच्छा नहीं है कि इन बच्चो मे एक भी नष्ट हो।" इस जलूस ने अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। यद्यपि पार्लामेंट की बैठक हो रही थी अतः उसकी एक मील की सीमा में किसी भी जुलूस का लेजाना गैर-कानूनी था परन्तु किसी पुलिस सिपाही का साहस न हुआ कि इन शॉत, अनुभवी तथा परिश्रमी माताओं को रोके। जब जुलूस सेंट स्टिफेंस (जहॉ पार्लामेंट है) पहुॅचा तो इन महिलाओं ने सतोष की सॉस ली और एक के ऊपर एक सब पोस्टर वेस्ट मिनिस्टर हाल की पक्की, पुरानी दीवारों के सहारे जमाकर रख दिये और पार्लामेंट की लौबी' (बरामदों) में बैठ कर सुस्ताने लगीं।

यह घटना संधि पत्रों पर हस्ताक्षर होने के चार महीने पहले की है। इसके तथा अन्य कारणों के फलःस्वरूप ही बाद में 'शिशु-रक्षण कोष' ('सेव दि चिल्ड्रेन फड) *का जन्म हुआ। इस विश्वव्यापी सस्था द्वारा प्रकाशित 'ससार के बच्चों का घोषण-पत्र'† सच्ची शाँति स्थापित करने तथा लोगों का ध्यान अन्य प्रकार के सोच विचार से हटा कर मानव मात्र के लिए हितकर इस कसौटी की ओर आकर्षित करने में बड़ा सहायक हो सकता है। वह कसौटी, जिस पर प्रत्येक बात कसी जानी चाहिए, यह है कि 'अमुक कार्य संसार के बच्चों के सुख और कल्याण को बढ़ाने वाला है या उनके लिए हानिकर है?'

० ० ० ०

जुलाई १९१९ ई० मे शाति पत्र पर हस्ताक्षर हुए और उसके बाद वाले रविवार को 'अहिंसा-दल' के तत्वावधान मे, हाइड पार्क में एक प्रार्थना-सभा हुई। वक्ता का हृदय वेदना और व्यथा से भरा था। उसने इतने महत्वपूर्ण कार्य मे पहले कभी भाग न लिया था। उसे मालूम पड़ रहा था, जैसे मैं बीमार हूँ। वह अपनी आखें ऊपर न उठा सकती थी और अपने पाँव के पास की सूखी घास वाली भूमि की ओर देख रही थी तथा भक्ति-विह्वल हृदय से प्रार्थना कर रही थी कि मै परीक्षा मे खरी सिद्ध होऊँ तथा सत्य प्रकट होकर मुझे आत्मसात् करले।

भीड़ काफी थी और उस में सैनिकों का भी एक दल था। जब प्रार्थना आरभ हुई तो उपर्युक्त वक्ता स्त्री का ध्यान इन सैनिकों

*'सेव दि चिल्ड्रेन फण्ड' ४० गोर्डन स्क्वायर, लंदन। †देखिए परिशिष्ट ५

पर था और उसके मन में इस बात की प्रबल इच्छा हुई कि 'इन के मन के कोमल भावों के चारों ओर जो बड़ा स्तर जम गया है और जो उनके युद्ध की भीषणता एव भद्दापन को अनुभव करने में बाधक है उसे भेदकर मैं उनकी मनुष्यता को, दिल को स्पर्श कर सकूँ।' जब वह बोली तो दिल से बोली। उसके प्रवचन के बीच में, उससे प्रभावित हो, एक सैनिक ने अपने अन्य सैनिक बन्धुओं से कहा कि "यह लड़की विवेक पूर्ण बात कह रही है ।"

फ्रास की ध्वस्त सीमा के उजड़े हुए दयार में एक ग्राम बड़ी बुरी हालत में पड़ा हुआ था। जर्मन तोपों के कारण उसकी यह दशा हुई थी। पीरी सेरीसोलके नेतृत्वमें सगठित एक स्वय सेवक दल ने वहाँ जाकर टूटे-फूटे घर खड़ा करने, सड़कों की मरम्मत करने तथा गृह-हीनों के लिए सुरक्षित मकान बनवाने के कार्य मे ग्रामवासियों की बड़ी सहायता की। इस दल में जर्मन, स्विस, अमेरिकन और अग्रेज शामिल थे। जमन भाई की घटना तो बड़ी शिक्षाप्रद है। जब अपने भाई, जो लडाई पर सैनिक बन कर गया था, के मारे जाने की खबर उसने सुनी तो उसने उसी समय प्रतिज्ञा की कि ज्योही मुझे अवसर मिलेगा, मैं फ्रास की कुछ न कुछ सेवा अवश्य करूँगा। प्रतिहिंसा, बदला की प्राचीन पद्धति के विरुद्ध यह कैसा अपूर्व भाव था।

१९२० के साल से ही प्रति वर्ष, गरमी के दिनों में, यह 'अन्तर्राष्ट्रीय स्वय सेवक दल' स्थान-स्थान पर काम करने जाता था। ऐसा काम शुष्क और बड़े परिश्रम का होता है। इसमें कोई मजदूरी नहीं मिलती; फिर इसे स्वय अपनी इच्छा से प्रसन्नता-पूर्वक और

ईमानदारी के साथ करना पड़ता है। यह स्वय-सेवक दल इस कसौटी पर, इस आग में तप कर, खरा सोना सिद्ध हुआ। चाहे बर्फीली नदियो की बाढ़ से क्षतिग्रस्त गॉव हो, या जमीन खिसकने वा चट्टानों के गिरने से नष्ट हुआ राजमार्ग अथवा भूमिखण्ड हो, मतलब किसी प्रकार का कष्ट हो, यह अन्तर्राष्ट्रीय सेवा दल अपनी प्राण-शक्ति, अपनी सहानुभूति, अपनी सेवा भावना एवं श्रम-शक्ति को लेकर वहाँ पहुँच जाता था।

दक्षिण वेल्स की रोंड्डा घाटी के कई भागों के निवासी बड़े कष्ट में थे। खनिज उद्योग की दशा इतनी बुरी हो गई थी कि वे वर्षों से लगातार बेकार पड़े हुए थे। शहर और कस्बे दिवालिया हो रहे थे। फिर निकट भविष्य मे स्थिति सुधर जायगी, इसकी भी कोई विशेष आशा न थी। एक ऐसी सतति बढ़ रही थी जिसने कभी न जाना कि नियमित जीविका क्या चीज होती है। लोगो के हृदय में अविश्वास और निराशा घर कर चुकी थी। युवकों के लिए किसी तरह समय काटने के सिवा कोई काम न रह गया था। वे बैठ कर हसरत भरी आँखों से उन भाग्यवानों की ओर देखते थे जिनके हाथ मे कुछ काम था। वे इस बात को महसूस करते थे कि काम का, जीविका-निर्वाह के उपयुक्त साधनों का जो अकाल पड़ गया है। इसमें हमारा कोई दोष, कोई अपराध नही है। परन्तु अपनी बेकारी का अनुभव बहुत जल्द आत्म-सम्मान को भी शिथिल कर देता है। फिर जो आदमी बेकार होता है उसके साथ घर में तथा बाहर लोगो का जो व्यवहार होता है उसके कारण वह धीरे-धीरे अपने को निकम्मा और घटिया समझने लगता है। वह अनुभव करने लगता है कि मै न तो कुटुम्ब को कुछ कमा कर दे

रहा हूँ न ससार के कार्य मे ही कुछ सहायता कर रहा हूँ। मेरी कोई पूछ नहीं, कोई गिनती नहीं। कोई मुझे नहीं चाहता।

इस उपेक्षित भूमिखण्ड के बीच 'अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल' (Service Volontaire Internationale) का पदार्पण हुआ। उसने पहले बेकार लोगो को एकत्र किया और उनसे इस बात पर सलाह की कि उनकी सबसे बडी आवश्यकता क्या है। पहले तो लोगो ने इन्हें सन्देहकी दृष्टिसे देखा, उन्होने समझा कि शायद न्याय विहीन दान का यह भी कोई पाखण्ड है। इसलिए स्थानीय लोग चुप-चाप बैठे सब कुछ देखते और सुनते रहे। पर इस अवसर पर अफवाहों ने सहायता की। बच्चों के लिए क्रीड़ा-भूमि बनाने, वृद्धो के धूप खाने के लिए बाग लगाने, शनिवार की रात्रि को सगीत का आनन्द लेने के लिए एक बैंड स्टैण्ड बनवाने और खेलने के लिए एक मैदान तैयार करने की ये क्या बाते सुनी जारही हैं ? पर ये सब बनेगे कहाँ ? जमीन तो बिना रुपये के मिल नहीं सकती और इन नवागन्तुकों, स्वयंसेवकों के पास रुपया तो है नहीं । फिर कैसे काम चलेगा ? लोग यह बातें सोचने लगे। धीरे-धीरे लोग सभाओं में शामिल होने लगे तथा बात-चीत एवं विचार-विनिमय मे रस भी लेने लगे। इस बात-चीत में लोगों को सूझी कि क्यों न हम लोग स्थानीय अधिकारियों के पास जाकर निवेदन करे कि गाव की उबड़-खावड़ जमीन हमें इस कामके लिए मिल जाय तो हम लोग मुफ्त बिना मजूरी लिए उसे पाट कर चौरस एवं साफ करके ठीक कर लेगे। आखिर वह जमीन व्यर्थ पड़ी हैं और इतनी बुरी अवस्था मे तथा इतनी उबड़ खाबड़ है कि उसका यों भी कोइ दाम नहीं

उठ सकता' यही किया गया और कुछ दिनों तक चेष्टा करने पर इसमें सफलता भी हुई। फिर क्या था, स्वयंसेवकों, विदेशियों तथा स्थानीय आदमियों ने मिलकर कठोर परिश्रम करना आरंभ किया और मूल योजना के अनुसार सब चीजें तैयार होगईं।

० ० ० ०

शांति-पत्र पर हस्ताक्षर होने के साथ ही, जर्मन मजूर संघ के सदस्य एकत्र हुए। उन्होंने असलियत को पहचाना। आपस में विचार किया, स्थिति का अध्ययन किया और योजनायें बनाईं। इसके बाद उन्होने फ्रांस के मजूरों के पास एक सुविचारपूर्ण योजना भेजी और लिखा कि हम अपने कुछ सर्वोत्तम आदमियो को फ्रास भेजना चाहते हैं जो वहाँ जाकर हमारे देशबधुओं-द्वारा ध्वस्त किये गये नगरों के निर्माण में सहायता करेंगे तथा जो निर्माण—सामग्री हम दे सकेंगे वह भी देंगे। यदि फरासीसी श्रमिक हमारे साथ मिलकर काम करना पसंद करेंगे तो हम उनकी सहायता एवं सहयोग का स्वागत करेंगे, क्योंकि इस प्रकार का सहयोग मानवता का एक सुन्दर प्रतीक होगा और उस अवस्था का एक चित्र और आदर्श उपस्थित करेगा जब धूर्त राजनीतिज्ञों के कारण छिडे युद्ध-द्वारा हुई अपार हानि की पूर्ति के लिए प्रत्येक देश की जनता स्वयं अपने हाथ मे शासन एवं प्रबन्ध का कार्य लेलेगी।

अपनी स्वाभाविक सुघड़ता के साथ जर्मनों ने योजना की प्रत्येक बात निश्चित की थी। फरासीसी मजूर इस प्रस्ताव को पढ़कर बड़े खुश हुए। योजनाये, नकशे तथा तखमीने छपवाये गये और बड़ी उत्कंठा के साथ उनका अध्ययन किया गया।

परन्तु जब बडे-बडे ठेकेदारों, मकान का सामान बेचनेवाले सौदागरों, बैंकरों तथा फौलाद के व्यापारियों को यह बात मालूम हुई तो वे चौंके। उत्तर फ्रांस के पुनर्निर्माण की विस्तृत योजनायें इन व्यापारियों ने बनाई थीं जिनसे उनको बहुत बड़ा फायदा होनेवाला था। बड़ी-बड़ी कम्पनियों के इन मालिकों ने अपने प्रभाव से जर्मन मजूरों के उपर्युक्त प्रस्ताव के सम्बन्ध में आनेवाली खबरों को दबा दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सरकारी तौर पर वह एकदम अस्वीकृत कर दिया गया।

० ० ० ०

मध्यम श्रेणी के बहुत-से लोग जो युद्धकाल मे ब्रिटिश टामियों की वीरता और साहस का बखान कर-करके लोगों के जोश को उभाड़ रहे थे, युद्ध खत्म होजाने के बाद जब सैनिक लौटकर फिर अपने मजूर-संघ की कार्रवाइयों में लग गये तो उनके विषय में फिर वही अपनी पुरानी सम्मतियाँ दोहराने लगे। युद्ध के कारण अभीतक अहिंसावादियों अथवा युद्ध-विरोधियों के सम्बन्ध में जो बातें कही जाती थीं वे अब इन सैनिकों के सम्बन्ध में कही जाने लगीं। क्लब वाले कहते—"यदि मेरा बस चले तो मै इन्हे गोली मार दूँ।" समय बिताने के लिए सम्पन्न एव निठल्ले पुरुषों द्वारा इन 'भूतपूर्व वीर' श्रमिकों की सुस्ती, झुठाइयों तथा पापों पर गपोडे एव चर्चायें होने लगीं।

० ० ० ०

प्रोफेसर सॉडी तथा ६ अन्य युवक वैज्ञानिकों ने अपनी सारी शक्ति, ज्ञान और साधन युद्ध-कार्य के लिए सरकार की भेंट कर दिये

थे। अब उन्होंने युद्ध-कार्य से अपनेको बिलकुल अलग कर लेने का
निश्चय किया। उन्होंने सरकार को लिखा कि अब भी हम, भविष्य के
लिए, अपना सारा समय देनें को तैयार हैं, पर अब अपनी सेवा के लिए
हम यह शर्त रक्खेगे कि इसके द्वारा, सब मिलाकर, मानव-जाति के
स्वास्थ्य और सुख में वृद्धि, न कि ह्रास, हो।

० ० ० ०

'अनिवार्य सैनिक सेवा' के नियम के अनुसार भरती किये गये
युवक सैनिकों के लिए स्वीडन में भी यह कानून बन गया कि वे लड़ाकू
सेना अथवा विधायक कार्यों के लिए सगठित 'राष्ट्रीय दल' इन दोनों मे
से चाहे जिसमे अपनी इच्छानुसार भरती होसकते हैं। उनके लिए
कोई मजबूरी न रहेगी।

० ० ० ०

'मेरी' का 'ब्रो' में आगमन हुआ। वह आस्ट्रिया से इतनी दूर
आई थी, बच्चों को यह सब अत्यन्त आश्चर्य-जनक प्रतीत होरहा था।
ये बच्चे ही उनके भोजन-प्रबध के लिए एक पेस (एक आना) प्रति
सप्ताह देते थे। एक भाग्यवान कुटुम्ब को तीन बार उनका आतिथ्य
करने का अवसर मिला। 'मैत्री-वर्द्धक सघ' ('फेलोशिप ऑफ़ रिकन्सि-
लियेशन') के प्रयत्न से भूतपूर्व शत्रुओं—जर्मनो—के हजारों बच्चों को
देश (इग्लैंड) के विभिन्न भागों मे, अग्रेज कुटुम्बों ने अपना लिया। इन
कुटुम्बों के युवक लड़ाई में जाकर फिर न लौटे थे, वहीं उन्होंने वीर-
गति पाई थी। इसलिए दुःख और व्यथा का जो वातावरण उनमे

था उसको दूर कर इन कुटुम्बों में स्नेह और मधुरता की धारा बहाने में (जर्मन बच्चो को अपनाने के) इस उपाय ने बड़ा काम किया।

० ० ० ०

शान्ति वादिनी एवलीन शार्प एक दिन लंदन के एक बड़े जेल मे व्याख्यान दे रही थीं तब उन्होंने देखा कि कैदियो के बीच श्रीयुक्त होरेशिया बाटमर्ली भी बैठे हैं। उन्हे याद आया कि एक समय, युद्ध-काल में, जब वह स्वय कैदी एव उपेक्षित थीं तब मि० बाटमली उनके सिद्धान्तों के विरुद्ध बोलने एव जर्मनो के प्रति घृणा एवं द्वेष को जगानेवाले व्याख्यान देने के लिए बड़े लोकप्रिय थे और उन्हें व्याख्यानों के लिए बड़ी-बड़ी फीस दी जाती थी। आज कैदियों के बीच उन्हे बैठे देखकर उनके मन मे आया कि मैंने इन्हे गलत समझा था।

० ० ० ०

एक बूढ़ी पेंशनर श्रीमती वानलू बोटाल्फ रोड के पास रहती थीं। जून मे गाँवो में जाकर सैर-सपाटे का एक कार्यक्रम कुछ लोगों ने बनाया था। उसके लिए, श्रीमती वानलू ने भी प्रति सप्ताह मार्च के महीने से ही अपने हिस्से का चदा थोड़ा-थोड़ा करके जमा करना शुरू किया था।

एक दिन वह मुझसे रास्ते में मिलीं और बोलीं—"कैसा सुन्दर कार्यक्रम रहेगा, बहन!" फिर कहा—"मै तो सीधे जगल के किसी शात भाग में चली जाया करती हूँ। मेरे पास एक जोड़ी अच्छे जूते हैं और रास्ता चलने का मुझे अच्छा अभ्यास है। मैं एकात वनस्थली मे वृक्षों के नीचे बैठना पसंद करती हूँ। साथ में एक शाल रखती हूँ और उसे घास पर बिछा लेती हूँ जिससे कपड़े न खराब हों। मोटरों, रेलगाड़ियों

तथा अन्य प्रकार के शोरगुल वहाँतक नहीं पहुँच सकते। तब मै पक्षियों का सगीत सुनती हूँ, अपने सिर पर छाया करनेवाली हरी टहनियों को देखती हूँ और शुद्ध वायु का आनंद लेती हूँ।"

पर जब जून का महीना आया तो हमें मध्ययूरोप से लोगो की पीड़ा और भूख के नये समाचार प्राप्त हुए। उनकी सहायता के लिए सामग्री एवं धन एकत्र करने के उद्देश्य से प्रत्येक रविवार की प्रार्थना के बाद हम लोगों ने दरवाज़े के दोनों ओर दो झोले लेकर खड़ा होना शुरू किया, ताकि जाने वाले पुरुष-स्त्रियां जो कुछ देना चाहे उनमें डालते जाये।

जब जून में निश्चित किया हुआ वह दिन आया जिस दिन श्रीमती वानलू तथा उनके अन्य साथी सैर के लिए जानेवाले थे तब लोगों से भरी गाड़ियाँ अपनी घण्टियो से टन-टन करती ग्रामों की ओर रवाना हुई। लगभग ११ बजे, जब मैं किसी काम से कहीं जा रही थी, मुझे श्रीमती वानलू मिलीं। उनको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह इतने दिनों से इस सैर के लिए तैयारी कर रही थीं। मैंने उनकी ओर इतनी कड़ी दृष्टि से देखा कि वह सफाई देने के लिए रुक गई और बोलीं—"प्यारी बेटी! मैंने इस दिन के लिए जो कुछ जमा कराया था वह बाद में मुझे निकाल लेना पड़ा। इसलिए मैं न जासकी। अब मैं अपना दिन 'ग्रोव पार्क' में व्यतीत करने के लिए जा रही हूँ।"

मैं जानती थी कि ग्रोव पार्क कैसी जगह है। यह कंकरीली एवं बलुई जमीन का एक आयताकार टुकड़ा है जिसके चारों ओर काँटेदार तार और फूलों के पौधे लगे हुए हैं। यहाँ बच्चे क्रिकेट खेलते और

आपस,मे लड़ते हैं। इसके एक छोर पर पॉच कीडों से भरे हुए अधमरे वृक्ष खडे हैं जिनमे से एक के चारों ओर भद्दी-सी लकड़ी की बेंच लगी हुई है। यह कोई एक सुन्दर या स्वाथ्यप्रद स्थान नहीं है। इसलिए उनकी बात सुनकर मुझे दु ख हुआ और मैंने कहा—"आपको रुपये की आवश्यकता थी तो आपने मुझसे क्यों नहीं कहा ? चाहे कुछ होजाता, मै आपको इ : सैर मे जाने से वचित न होने देती।"

वह बोली—"नही वेटी, मुझे स्वय अपने लिए रुपये की जरूरत नहीं थी। यूरोप से आये आस्ट्रियन बच्चो की दुर्दशा से भरे उस करुण पत्र के कारण उनकी सेवा मे अर्पित करने के उद्देश्य से ही मैंने रुपये लौटा लिये थे। और फिर तुम्हे इसका विश्वास दिलाती हूँ कि ग्रोव-पार्क मे भी मैं उतने ही आनद के साथ दिन बिताऊँगी।"

यह कहकर वह तेजी से चली गई। मैंने देखा कि इस महिला में माता का कैसा हृदय है ! मैंने निश्चय किया कि दूसरे साल इनको सैर मे लेजाने के लिए किसी को साथ कर दूँगी। पर दूसरे साल तो उनकी मृत्यु ही होगई।

० ० ० ०

परन्तु उनकी भावना, उनकी स्पिरिट, दूसरों के बीच काम करती रही। उनकी मृत्यु के एक-दो वर्ष बाद रूस मे भयंकर अकाल पड़ा। एक दिन शिशु-भवन (Children's House) के दरवाजे पर छः वर्ष की एक लडकी नें थपकी दी। मैंने जब दरवाजा खोला तो उसने मुझे एक छोटा-सा पार्सल दिया और कहा—"इसे रूस में किसी छोटी लडकी के पास भेज दीजिए।"

उस पार्सल में बादामी कागज से लिपटी एक सुन्दर स्वच्छ धुली 'सडे फ्राक' (जिसे लड़कियाँ रविवार को पहनती हैं) तह की हुई रक्खी थी। मैंने इस नन्ही बालिका की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि "मेरे पास एक दूसरी फ्राक है और माँ कहती हैं कि मुझे दो की कोई जरूरत नही।"

० ० ० ०

'मैत्रीवर्द्धक सघ ('फेलोशिप ऑफ़ रिकन्सिलियेशन') एक अहिंसावादी सस्था थी, जिसके द्वारा हम बहुत-से लोग काम कर रहे थे। पर अब एक ऐसा लोकप्रिय आन्दोलन चलाने की आवश्यकता अनुभव हुई जिसकी सदस्यता के नियम कुछ सरल हों और धर्म, तत्त्वज्ञान, शिक्षण, दण्डविधान-सम्बन्धी सुधार जैसे गंभीर उद्देश्य और आदर्श उसमें न हो। इसलिए कुछ सदस्य एक स्थान पर एकत्र हुए और उन्होंने 'अब और युद्ध नहीं' के आन्दोलन (The no more war Movement) को जन्म दिया।

धीरे-धीरे जन-साधारण में से अधिकाधिक लोग इस बात को अनुभव करने लगे कि हमारे ऊपर एक नवीन सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था को खड़ा करने की जिम्मेदारी है और हम में से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से भी इसके लिए काफ़ी परिश्रम करना पड़ेगा। उन्होंने यह भी देखा कि जबतक हम स्वयं इस सम्बन्ध में कुछ रचनात्मक, ठोस कार्य न करें तबतक सिर्फ़ स्वदेशी या विदेशी सरकारों की कड़ी आलोचना करने अथवा प्रस्ताव पास करने या व्यग-पूर्ण भाषण देने से कुछ न होगा।

इसलिए उन्होंने विश्व-नागरिकता (world citizenship) के प्रश्न की ओर ध्यान दिया। 'सब देशों के निवासी भाई-भाई हैं तथा किसी सरकार की आधीनता मे रहने या किसी देश में बसने से यह मानवीय आधार टूट नहीं सकता, यह इस आन्दोलन का उद्देश्य था। "उन्होंने निश्चय किया कि यद्यपि हमारी समस्याये बड़ी कठिन हैं पर हम कठिनाइयों का मुकाबला करेंगे और अपने अनुभव दूसरों को बतायेंगे। कम-से-कम हम अपने स्थान पर जनमत को जाग्रत कर देंगे और धीरे-धीरे अपना कदम बढ़ाते जायेंगे--इतना बढायेंगे कि संसार के किसी देश का कोई मनुष्य हमारे क्षेत्र के बाहर न रहेगा। हमें अपने साहस एव स्वतत्र वृत्ति को दिन-दिन बढाना होगा। हम किसी अवस्था में सत्य को न छोड़ेंगे। हमें ऐसे स्थानों पर भी सच्ची बातें कहनी चाहिएँ जहाँ उन्हें कहने मे कठिनाई या खतरा हो।"

° ° ° °

धर्मपुस्तक (Old Testament) का एमोस एक गडरिया था जो अपना अधिकाश समय चुपचाप अपने गाँव मे एकात चरागाह पर काम करने मे व्यतीत करता था। अपनी भेड़ों का ऊन बेचने के लिए कभी-कभी वह राजधानी में जाता था। वहाँ उसने जो घृणित बाते देखीं, उन्हें अपने शान्त ग्रामीण स्थल पर लौटकर भी वह भूल न सका। वह सोचता—क्षोभ, अहकार और झूठे पादरियों के बहकावे में पड़कर मनुष्य मनुष्य पर कितना अत्याचार कर रहा है।

जब वह दूसरी बार समारिया गया तो उसके मन मे ये भाव प्रबल होरहे थे। वह शाही अदालत में घुस गया और जोर से बोला—"तुम

नष्ट होजाओ—तुम जो गरीबों को चाँदी के टुकड़ों के लिए, जिनको आवश्यकता है उन्हे एक जोड़ा जूते के लिए, नगण्य चीजो के लिए वेच देते हो, तुम जो हाथीदॉत की गाड़ियो पर चलते हो, घड़ो शराव पी जाते हो और जिनकी जिह्वा भेड़ों के नन्हे कोमल बच्चोंके खून और मांस से सनी है। तुम निर्दोष, दीन-हीन लोगो के मुण्डों के ऊपर चढ कर, धूल के लिए, तुच्छ वस्तुओं के लिए हांफ रहे हो।"*

हृदय की तह से निकलनेवाले इन भावमय शब्दों को सुनकर अधिकारी चकित होगये, पर उन्होंने बाधा न डाली। परन्तु एमोस के ओठों से निकलती हुई सत्य की धारा को रोकने के लिए अदालती-पादरी (Court priest)) तेज़ी से सामने आया और बोला—"ओ पैगम्बर, यहॉसे तशरीफ लेजा। यहॉ इस तरह की बाते न कर। क्या तू नहीं जानता कि यह बादशाह की अदालत है, बादशाह का चर्च है ? फिर देश तेरे ऐसे शब्द सुनने मे समर्थ नही है।"

इस प्रकार सत्यवादी धनिको एव प्रतिष्ठितों के दल से बाहर कर दिया गया और ये धन एव सत्ता के पुतले फिर उस मुसाहब पादरी के निर्जीव धर्मवचनों को सुनने के लिए रह गये जिसने परिस्थिति को सम्हालने के लिए 'शाति, शांति कहा जबकि वहां शान्ति का नाम न था।

---

* "Woe tc you who sell the poor for silver and needy for a pair of shoes, who loll on ivory coaches' drinking wine by bucketfulls and eating the tenderst lands out of the flock. You pant after the dust on the head of the innocent pour !"

एमोस स्वस्थ मन से अपने गाव को लौट-गया। उसके हृदय में शान्ति थी, क्योंकि उसने अपना सदेश सुना दिया था।

सच्चा सदेश सुनाने से अधिक तृप्तिकारी दूसरी बात नहीं है, क्योंकि इसके स्वागत की अपने ऊपर जिम्मेदारी नहीं है। इसमें मनुष्य अपनी सीमा से ऊपर उठ जाता है। यह ईश्वर का कार्य है। तुमको तो इतना ही करना पडता है कि जिसे तुम सत्य जानते हो उसे दूसरों तक पहुँचा दो। अत्यन्त नम्रता और दीनतापूर्वक यह कार्य करना पड़ता है। हा, सदेश वाहक के हृदयमें बलवती आशा होती है कि सन्देश सुना जायगा। पर यदि उस समय इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो भी वह जानता है कि यह व्यर्थ न जायगा। उसके भीतर का सत्य एक-न-एक दिन उपहासकर्त्ता के मन में अवश्य प्रकट होगा। शायद उस समय जब हम चिंतित या निराशाजनक अवस्था में हों, जब एक समय उसके चारों ओर रहनेवाली प्रशसकों की भीड़ न रह गई हो; जब वह राज्य की शानदार मर्यादा, साम्राज्य के वैभव और सम्पत्ति के अन्ध अहकार से रिक्त होगया हो।

:७:

सीधा मोर्चा

लार्ड पासनबी, जिन्होंने लड़कपन मे महारानी विक्टोरिया के महलो में काम किया था, अपना बहुत-सा समय और शक्ति इस कार्य मे लगा रहे थे कि जनता गुप्त कूटनीतिज्ञता के प्रभाव से मुक्त होकर अन्तर्राष्ट्रीय बुद्धि से, समस्त ससार के कल्याण की भावना से, युद्ध के प्रश्न पर विचार करे। उधर लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके बड़े-बड़े व्यापारियों के एजेण्ट जनता मे अविश्वास और भय फैला रहे थे और यह सब इसलिए कि फौलाद, अस्त्र-शस्त्र तथा रासायनिक वस्तुये बनानेवाले बड़े-बड़े कारखानो को ज्यादा फायदा उठाने का मौका मिले--क्योंकि युद्ध की दशा मे ही यह सभव था। इधर प्रत्येक देश में थोड़े-बहुत ऐसे आदमी बचे थे, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई थी, जिनमे शुभाकाक्षायें थीं और जिनपर कुत्सित प्रचार का कोई असर नहीं हुआ था। इन लोगों को भी कुछ व्यावहारिक कार्य करने की आवश्यकता थी। लार्ड पानसनबी ने ब्रिटिश जनता से अपील की कि वह स्पष्ट रूप से अपना मत प्रकट करदे। उन्होंने कहा—"हमारा कर्तव्य है कि हम अधिकारियों के मन में, इस सम्बन्ध मे, कोई सदेह और द्विधा न रहने दे। इसलिए हमें मिलकर सरकार के

पास एक आवेदनपत्र ('मेमोरण्डम') इस आशय का भेजना चाहिए कि हम लोग, जिनके हस्ताक्षर नीचे हैं, किसी दशा में सम्राट् की सशस्त्र सेना में भरती न होंगे और न किसी भावी युद्ध में किसी प्रकार की सहायता करेंगे।" लार्ड पासनवी के प्रयत्न के फल-स्वरूप एक बहुत बड़ा खरीता--आवेदनपत्र—सरकार के पास भेजा गया। इसपर हजारों आदमियों ने हस्ताक्षर किये थे।

० ० ० ०

इंग्लैण्ड और अमेरिका में जगह-जगह ('दि टेरेबुल मीक*नामक) एक नाटक खेला गया। इस में कुल तीन पात्र थे—एक शीन-काफ बघारनेवाला सैनिक, आक्सफर्ड के उच्चारण मे बोलनेवाला एक अफसर और एक किसान औरत जिसका लड़का अभी मार दिया गया है। दृश्य एक निर्जन पहाड़ी की चोटी का था। इस नाटक में युद्ध की बुराइयाँ प्रकाशित की गई थीं। इसका भी लोगों के मन पर अच्छा प्रभाव पडा।

० ० ० ०

पर इन प्रयत्नों के विरुद्ध समाचारपत्र तो जनता में निरतर जहर फैला रहे थे। एक दिन शाम को, लदन के समाचारपत्रों में, निम्नलिखित भय फैलाने वालेशीर्षक थे :—

"नवीन वैज्ञानिक खोज।"

"मृत्यु-किरण का आविष्कार।"

---

* The Terrible Meek by Raun kennedy Harper & Bros, Newyork

"युवक वैज्ञानिक का रहस्य।"

"इसके सामने कोई चीज़ टिक नहीं सकती।"

"प्राणघातक आविष्कार।"

"विदेशी शक्ति सबसे ज्यादा रुपया दे रही है।"

"कहीं सरकार की विश्वासघातपूर्ण असावधानी के कारण युवक वैज्ञानिक का यह नवीन अस्त्र ब्रिटेन के हाथ से निकल न जाय।"

कई दिनों तक लोगों मे गहरी उत्तेजना फैली रही। युवक वैज्ञानिक की खूब चर्चा हुई। कारखाने में काम करनेवाली एक लड़की, एक दिन, अपने काम पर से, सीधे मेरे पास आई। मैं इस सुन्दर, कोमल बाल वाली नटखट लड़की को पहले से ही जानती थी। इस का नाम 'एमी मार्टिमर' था और यह 'बड़ा दिन' (क्रिसमस) के नाटकों में प्रायः माता का अभिनय करने के लिए चुनी जाती थी।

उसने पूछा—"आपने मृत्यु-किरण के सम्बन्ध में फैली सब बातों को सुना है?"

मैंने उत्तर दिया—"हां।"

"आप देख ही रही हैं कि सब आपस मे इसलिए झगड़ रहे हैं कि कौन-सा देश इसे खरीद पाता है।"

मैंने उससे कहा कि मैंने ज्यादा बारीकी के साथ सब खबरों को नहीं पढ़ा है।

उसने कहा—"अच्छा, मै जाकर उस युवक वैज्ञानिक से मिलना चाहती हूं।"

मैंने अनुभव किया कि वह, अथवा कोई भी युवक, इस लड़की से मिलकर खुश होगा, पर मै चुप रही।

उसने कहा–"मै उससे कहना चाहती हूँ कि चाहे कितना ही रुपया मिल रहा हो, पर आपको अपना आविष्कार फ्रांस, इगलैंड अथवा अन्य किसी देश के हाथ नहीं वेचना चाहिए।"

मैंने उससे अनुरोध किया–" हा, अवश्य जाओ।"

जब वह इतना बुद्धिमान है तो उसे कैंसर, यक्ष्मा अथवा पागलपन की वीमारियों से लोगों को मुक्त करने में अपने दिमाग का उपयोग करना चाहिए।"

"निस्सन्देह ।"

"परन्तु मै नहीं जानती कि वह कहाँ रहता है अथवा उसका आफिस कहाँ है?"

"मैंने कहा–"इसके लिए चिन्ता मत करो। मै समाचारपत्रों से उसका पता तुम्हें मँगा दूँगी।"

"उसने कहा–"आपको तो मेरे साथ चलना ही पडेगा।"

साथ जाने के इस प्रस्ताव के लिए मुझे अपने मन मे कोई स्फूर्ति नहीं जान पड़ी।

मैंने कहा–"अज्ञात लोगों के निजी कार्यालयों तक पहुंचने में मैं पटु नहीं हूँ।"

उसने विश्वासपूर्वक कहा–"मैं वह सब करलूँगी। आपको तो उससे सिर्फ बातें करनी पड़ेगी।"

मैंने चिढ़कर कहा–"युवती, यह तुम्हारा काम है।"

"अच्छा ! हम दोनों मिलकर इस काम को पूरा करेंगी।,,

दूसरे दिन सुबह ग्यारह बजे के पहले ही क्लर्कों, कुलियों तथा लिफ़्ट-मैनों* के बीच से रास्ता बनाती, मुझे साथ लिये, एमी हनोवर स्कायर के ऊपर की मजिलवाले एक आफि‍स मे पहुँची। वैज्ञानिक से भेंट करने की आज्ञा लेली थी। इस आफिस के बीच चश्मा लगाये हुए एक युवक बैठा था, जिसके चेहरे पर चिन्ता की रेखाये थी। उसे बहुत से आदमी घेरे हुए थे। जब हम लोग पहुँची तो उन सबने हमारा स्वागत किया और हमें तर्क एवं विवाद मे डालने की चेष्टा करने लगे। किन्तु एमी ने दूसरी ओर ध्यान न दिया और केवल उस युवक वैज्ञानिक की ओर देखती हुई उसने अपनी बात कहदी। वैज्ञानिक ने आगे की तरफ सिर झुकाकर बड़े ध्यान से उसके प्रत्येक शब्द को सुना। जब एमी की बात खत्म होगई, तब उसने सिर उठाया और बोला—"पर तुम जानती हो, मुझे अपनी जीविका के लिए रुपये तो चाहिए।"

"आप हमारे-जैसे बो, के दीन निवासियो के लिए कितना बड़ा काम कर सकते हैं लोगों के प्राण लेने की जगह इस प्रश्न पर आप ज़रा सोचिए" एमी ने विश्वास दिलाते हुए कहा।

"परन्तु मेरी जीविका का क्या हो ?" उसने फिर जोर देकर कहा।

---

*लिफ्टमैन बड़े-बड़े नगरों में जहा स्थान की कमी के कारण अनेक मजिलो के मकान होते हैं, नीचे से ऊपर या ऊपर से नीचे जाने के लिए बिजली का झूला चला करता है। इसे लिफ्ट कहते हैं। जो आदमी इसे ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर बिजली के सहारे चलाता है उसे लिफ़्टमैन कहते हैं।

दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। एमी की आखे चमक उठी और वह बोली—"ओह! आप वो को नहीं जानते हैं? यदि आप वहाँ रहने के लिए आजाये तो हममें से कोई आपको भूखा न रहने देगा।"

जब हम विदा हुई तो वह हमें दरवाजे तक पहुँचाने आया और उसने एमी को आने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा—"मै आपकी बात नही भूलूँगा।"

० ० ० ०

जब सैण्ट जेम्स पैलेस मे 'नौ सेना-सम्मेलन' (नैवल कान्फ्रेंस) का आरम्भ हुआ तब भी हम लोगों ने पहले को भाँति जीवित अखबारों का जुलूस निकाला। यह जुलूस लदन तथा पिकेडली की अनेक सड़कों से गुजरा। हम लोगों के हाथो मे लकड़ियो के लगे हुए बडे-बडे पोस्टर थे। इन पोस्टरो पर एक ओर लड़ाकू जहाजो पर खर्च होनेवाली अपार धनराशि के ऑकड़े थे और दूसरी ओर उसके मुकाबले में शिक्षा स्वास्थ्य तथा रहाइश (हाउसिंग) के लिए खर्च होनेवाली तुच्छ रकमों के ऑकडे थे। इसके अलावा हम लोगों ने एक आवेदनपत्र (मेमोरेण्डम) भी तैयार किया था। पृथ्वी के कोने-कोने से परामश एवं विचार करने के लिए एकत्र हुए 'नौसेना-सम्मेलन' के सदस्यों तक यह आवेदन पत्र पहुँचाने का काम जुलूस की एक श्रमिक महिला को सौंपा गया था। वह अन्दर गई और शायद पहली बार एक राजमहल के भीतर होने का सतोष उसने प्राप्त किया, पर इससे भी अधिक सतोष उसे इस बात से हुआ कि सम्मेलन के अधिकारियों ने विश्वास दिलाया कि इस आवेदन पत्र की कापियाँ तैयार कराके सब सदस्यों को बॉटदी जायेंगी।

"बहुत दिन हुए जब यूरोप में यह पुकार, सुनाई पड़ी थी—'यह ईश्वर की इच्छा है।' हजारों आदमी 'क्रास' के उस झण्डे-तले एकत्र होगये और उसके साथ रहकर कष्ट एव आपदाये झेली, लड़े और मरे—इसलिए कि उनके प्रभु की समाधि पर उनके अनुयायियों का अधिकार हो।

"आज फिर वही पुकार सुनाई पड़ रही है—'ईश्वर की इच्छा है।' (Dues Vult) एक बार फिर वही झडा उठाया गया है; किन्तु यह पुकार युद्ध के लिए नही शाति के लिए है, समाधि पर अधिकार करने के लिए नही वरन् शाति के देवता को मुक्त करने के लिए है। यह हमसे इस प्रकार का यत्न करने को कहती है जिससे आज जो यूरोप बेकारी से पोड़ित एव असंतुष्ट है और जहाँ अनिश्चितता, भय एव संदेह का राज्य है, वहाँ शांति हो।

"जब हमारे प्रभु (ईसा) ने इस पृथ्वी पर घूमकर उपदेश किया तो वे सामान्य लोग ही थे जिन्होंने उनके उपदेशों को ध्यान से प्रसन्नतापूर्वक सुना। आज भी वही इसे सुनेगे।"

"इस उद्देश्य की पूर्ति एव प्रचार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री सघ (इएटरनेशनल फेलोशिप ऑफ़ रिकसिलियेशन) ने निःशास्त्रीकरण एवं विश्व-शाति के हितार्थ 'यूरोपियन युवक शाति दल' का सगठन किया। यह दल फरवरी एवं मार्च १६३२ ई० मे यूरोप के अनेक प्रदेशों में घूमा। इसमे बड़ी सफलता मिली। स्थानीय आवश्यकताओं एवं सुविधाओं के अनुसार इसके सदेश के रूप में किंचित परिवर्तन करना पड़ता था, परन्तु सबका उद्देश्य यही था कि लोग दूसरे राष्ट्रों को ठीक-ठीक समझे।

इसमें नैतिक निःशस्त्रीकरण (moral disarmament) पर जोर दिया गया और लोगों से अनुरोध किया गया कि वे तथ्यों को, घटनाओं को, जिस रूप मे वे हैं उसी रूप मे देखे पर साथ ही मनमें श्रद्धा रक्खे--वह श्रद्धा जो पहाड़ों को भी हिला सकती है--और इस श्रद्धा से पारस्परिक सेवा एव सहायता के भाव पर आश्रित समाज की रचना करे। जगह-जगह सभाओंमे तथा अन्यत्र युद्ध की भावना निर्मूल करने तथा प्रस्ताव की अन्य बातों के सम्बन्ध में बहस एव विचार किया गया। जन-साधारण मे हमारा जो विश्वास था वह इस आन्दोलनसे बढ गया तथा यह अनुभव पुष्ट होगया कि साधारण जनता दिल से शान्ति चाहती है, युद्ध नहीं। अनेक कस्बों और गाँवों तथा बड़े-बडे नगरो में सहयोग का, निःशस्त्रीकरण का, शान्ति का, परस्पर सेवा और सहायता का सदेश सुनाया गया।

"यूरोप की तरुणाई इस सदेश को सुनने और उसका अनुसरण करने को तैयार है। वह काम करने, सेवा करने और बलिदान करने को तैयार है। वह निस्सार युद्ध और निर्जीव शान्ति दोनो की समान रूप से उपेक्षा करती है। हिचकिचाहट एव सन्देहों से भरी कूटनीतिज्ञों की शान्ति पगु है, अतः युवको के उत्कण्ठित हृदय को सन्तुष्ट करने मे असमर्थ है। यदि हमने यही धीमी गति जारी रक्खी तो युवक हृदय उसी पुरानी युद्ध-प्रणाली की चकाचौंध मे खिच जायगा और उसे यह बात भूल जायगी कि इस प्रकार की विजय दूसरे शत-शत युवकों की मृत्यु और विनाश की कीमत पर खरीदी जाती है। इसीलिए युवकों से ही इस मामले में अपील की गई और उन्होंने हिंसा के विरुद्ध इस धर्म-युद्ध की यात्रा का सन्देश दूर तक फैलाया।

"इस 'क्रूसेड'—इस धर्मयुद्ध यात्रा—मे ऊपर-ऊपर कोई चमत्कारपूर्ण बात नहीं है। यह किसी सेना की नहीं, एक विचार, एक 'आइडिया' की यात्रा थी। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियो-द्वारा इस विचार का जगह-जगह प्रचार हुआ। कहीं फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेज, वेलजियन, डच व्याख्याताओं का एक अन्तर्राष्ट्रीय दल इस काम मे लगा हुआ है; कहीं आस-पास के गॉवो एव कस्बो के लोग सभाओ मे इसका सन्देश सुनने को एकत्र हुए हैं। कहीं एक युवक दल थककर विश्राम के लिए घर लौट आता है तब तुरन्त दूसरा दल उसकी जगह ले लेता है। जो भी दल हो, जो भी स्थान हो, सन्देश वही है। इस प्रकार लोगो को शाति का सन्देश सुनाते दल, अन्त में, २ अप्रैल को जेनेवा पहुँचता है और पचास हज़ार आदमियों तक शान्ति की पुकार पहुँचती है।

"पर इस यात्रा की समाप्ति तो वस्तुतः उसका आरम्भ मात्र है। हम लोगों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि इस अरम्भ को कैसे कायम रक्खा और बढाया तथा गहरा बनाया जा सकता है ? ज्यों-ज्यां इस विचार का प्रचार बढ़ेगा, इसका विरोध भी होगा, पर उसके लिए हम तैयार हैं। क्या इस कहानी के पाठक इसके आगे का अध्याय लिखने का अवसर शीघ्र लाने के कार्य मे हमारी सहायता करेंगे ?

"और जो कुछ हुआ वह निश्चय ही एक साहस का काम था। आज जब संसार को नवीन सन्तानो को राष्ट्रीयता के झण्डे के नीचे खडा किया जा रहा है, जब चारों ओर राजनैतिक असंतोष और अशाति का वातावरण है, और जब उत्साही शाति-प्रचारकों मे भी निराशा घर कर रही है, तब यूरोप के युवको से शाति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए

धर्मयात्रा की पुकार करना साहस नहीं तो क्या है ? एक ऐसे आन्दोलन के लिए, जिसकी शक्ति उसकी सख्या मे नहीं वरन् उसकी धारणा, उसके विश्वास एव त्याग मे है, युवकों को सार्वजनिक सभाओ मे निमत्रित करना बड़ा भारी साहस है । भला नेता अगुआ लोग तो इसका स्वागत करले ! कहीं हमारी दशा अफसरों या सैनिकों से रहित दल की तरह तो नहीं होगी ? ये विचार यात्रा आरम्भ होने से पहले हमारे मन मे आरहे थे ।

"फिर आर्थिक दृष्टि से तो यह शुद्ध साहस का ही कार्य था । प्रचार के लिए, विदेशी व्याख्याताओं के यात्रा-व्यय के लिए, रुपये कहाँ से आयेंगे ? फिर इतना रुपया भी कहाँ था ? दूसरी फरवरी यानी नि:शस्त्री करण सम्मेलन के उद्घाटन-दिवस को धर्मयात्रा शुरू होनेवाली थी और २० दिसम्बर तक हमें इस बात का निश्चयपूर्वक पता नहीं था कि इस आन्दोलन के प्रेमी और सहायक विभिन्न देशों मे. कतिपय आर्थिक जिम्मेदारियाँ लेने को तैयार हैं । तीसरी जनवरी को कहीं कोलोन (Cologne) मे एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति की बैठक हुई, जिसमे यह निश्चय हुआ कि हालैण्ड, बेलजियम, फ्रास जर्मनी तथा स्वीजरलैण्ड के बीच से गुजरनेवाले तीन या चार मुख्य रास्तों से यह यात्रा की जाय और ईस्टर मे जेनेवा में एक बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन हो। अब कुल तीन सप्ताह का समय रह गया था और इस बीच लगभग डेढ़ सौ स्थानों पर होनेवाली सभाओं की तैयारी और प्रबंध करने के लिए योग्य साथी कार्यकर्ताओं को ढूँढना था, विभिन्न देशों से ऐसे व्याख्याताओं को ढूँढ निकालना था जिनको इस विषय का ठीक-ठीक ज्ञान हो और जिनका भाषा एवं वाणी पर अधिकार हो। फिर उनको

ढूँढना ही नहीं था, ढूँढकर ठीक समय, ठीक स्थान पर पहुँचाना भी था। यात्रा आरभ करने के पहले घूमकर यह भी देखना था कि तैयारी ठीक है या नहीं और तदनुकूल समाचारपत्रों को सूचनाये भेजनी थीं। ऐसी हालत में यह सब साहस नहीं तो क्या था? खैर, हमें डा० विल्हेलम सोल्ज-करबे (Dr Wilhelm Solzbachar) के रूप में एक बहुत अच्छे संगठनकर्ता मिल गये। इन्होंने व्याख्यानो द्वारा भी बड़ी सेवा की।

"अत में तीन सप्ताह की कड़ी तैयारी के बाद फ्रास, हालैण्ड तथा जर्मनी में एकसाथ ही यह धर्मयुद्ध-यात्रा का काम आरभ किया गया। तबसे लगभग १२० से भी ज्यादा स्थानों पर सभाये की गईं और लगभग पचास हजार आदमियों तक सदेश पहुँचाया गया। ४५ विदेशी व्याख्याताओ का विनिमय और उपयोग किया गया। विभिन्न भाषाओं मे छापकर एक लाख से भी अधिक पुस्तिकायें बाँटी गईं। कार्यक्रम ठीक-ठीक पूरा हुआ और ठीक समय पर हम लोग जेनेवा पहुँचे और हमने अपना प्रार्थनापत्र (Petition) निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन के अध्यक्ष के पास तक पहुँचा दिया। पर इस यात्रा का जो इससे भी महत्वपूर्ण परिणाम हुआ वह यह था कि बिना किसी विशेष तैयारी और प्रयत्न के, अपने-आप, शाति का कार्य करने के लिए महायुद्ध-सीमा के दोनो ओर कार्यकर्ताओ का एक बड़ा दल निकल आया जिससे यूरोप के शांति-आदोलन के अग्रणी होने की आशा की जा सकती है।" *

---

* ये उद्धृतांश 'अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री सघ' (International Fellowship of Reconciliation) की आज्ञा से उसके द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका 'एक्रास यूरोप' (Across Europe, by Lilian Stevenson) से दिये गये हैं।

इस यात्रा मे भाग लेनेवाले कार्यकर्ताओं मे वह युवक जर्मन रासायनिक भी था जिसका जिक्र दूसरे अध्याय मे किया जा चुका है। उसके मुख पर अभीतक उन दुःखद स्मृतियों की छाया थी, किन्तु वह ऐसा व्याख्याता था कि अत्यन्त अशात समूह को भी अपनी वाणी से काबू मे कर लेता था। लोग मत्र-मुग्ध की भॉति उसका व्याख्यान सुनते थे। कभी-कभी वह घण्टो तक बोलता था। एक दिन उसे मालूम पड़ा कि हम उस नगर के पास आ पहुँचे है जिसपर, महायुद्ध-काल में, उसकी सैनिक टुकडी ने आक्रमण किया था और उस सिलसिले मे मनुष्यता के नाम को लज्जित करनेवाले अनेक काम किये थे। उस नगर में उसने बडे ही भरे हृदय के साथ प्रवेश किया। जब सभा-भवन पूरी तरह भर गया और उसके बोलने की बारी आई तो उसने सबके सामने अपना दिल खोल दिया। "किस प्रकार इसी स्थान पर महीनो तक अपनी सेना के 'गैस'-पीडित सैनिको की सेवा मे मै लगा रहा और उन दिनो मेरे हृदय मे किस तरह प्रतिपक्षी के दु खों एव पीड़ाओ की कल्पना से एक तूफान मचा रहता, किस प्रकार मै सोचा करता कि प्रतिपक्ष के कष्टों के लिए मै भी जिम्मेदार हूँ, क्योंकि मेरी सेवा का लाभ उठाकर हमारे दल के रोगी सैनिक अच्छे होकर फिर मारने-काटने के लिए युद्ध-क्षेत्र मे जाते हैं। इसी समय मैने निश्चय किया था कि यदि मौका मिला तो मै नगर मे जाकर आप लोगों से अपने अपराधों के लिए क्षमा की भीख मॉगूँगा। उस समय वह इच्छा पूरी न हो सकी। आज शाति-आदोलन ने वह दिन दिखाया कि मै आपके बीच खडा हूँ और आपकी क्षमा चाहता हूँ।"—इस आशय के वाक्य उसने कहे।

जब उसका व्याख्यान समाप्त हुआ तो हाल के पिछले भाग में कुछ हलचल दिखाई पड़ी। शीघ्र ही वहाँ से दो आदमी उठे। ये युद्ध मे घायल हुए दो भूतपूर्व सैनिक अफसर थे। सभा के बीच के रास्ते को पार कर वे इस व्याख्याता—इस भूतपूर्व जर्मन अफ़सर के पास आये और उससे हाथ मिलाया। फिर उनमें से एक स्पष्ट स्वर मे बोला, "युद्ध-भूमि में ऐसी ही अशाति मेरे मन मे भी चल रही थी। मुझे अपने से सदा असतोष रहता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मै व्याख्याता नही हूँ और हृदय मे जिस सूनेपन, जिस पीड़ा का अनुभव मैंने किया उसे आजतक मै अच्छी तरह किसीपर प्रकट न कर सका। आज, यह व्याख्यान सुनने के पहले तक, मुझे जैसे अनुभव हुए थे, उनका वर्णन किसी के मुँह से मैंने नही सुना था। आज मैं कहता हूँ कि जर्मन अफसर (व्याख्याता) ने जो कुछ अपने विषय मे कहा है वही मुझपर भी लागू होता है। इससे तो यही प्रकट होता है कि फ्रेन्च, जर्मन और अंग्रेज, हम सब लोग तत्त्वतः एक ही हैं। भेदभाव बनावटी है।"*

० ० ० ०

इस आंदोलन में मनहूसियत नहीं थी। इसमें शामिल होनेवालो के हृदय में वह आनन्द था जो प्रत्येक अच्छे काम मे आत्मा के रम जाने से प्राप्त होता है। यात्री दल के युवक हँसते, नाचते, कूदते और गाते हुए चलते थे और जो कुछ आपड़े उसीको आनन्द का साधन बना लेते थे। कहीं अलाव पर सो रहे हैं; कहीं लम्बे रास्ते मे चलते

---

* युवक शाति-आंदोलन (Youth Peace Campa[illegible]) के बारे मे और हाल जानने के लिए देखिए परिशिष्ट नं० ६।

चलते नाचने लगते हैं। इनमें कोई-कोई तो ऐसे थे जिन्होंने जीवन में कभी किसी सार्वजनिक सभा मे व्याख्यान भी न दिया था, यद्यपि कस्बे का डौंडी पीटनेवाला 'अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्याता' के रूप मे उनकी घोषणा करता और कभी बोलने का अभ्यास न होने हर भी बाज-बाज बहुत अच्छा बोले। एक ने असफल अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (नि.शस्त्रीकरण-सम्मेलन) पर टीका करते हुए कहा—यह "निःशस्त्रीकरण सम्मेलन उस सम्मेलन के समान है जिसका उद्देश्य तो निरामिष आहार (शाक-भोज) का प्रचार करना हो किन्तु जिसके प्रतिनिधि कसाई अथवा उसके सहकारी हों।"

श्री आर्थर हेडरसन * से इन लोगों ने कहा--"हमे आशा है कि अभीतक आपको जिस दुर्भाग्य का अनुभव करना पडा है उससे भविष्य में आपको अच्छा अनुभव होगा, किन्तु यदि आप सब लोग असफल रहे, जैसी कि सभावना है, तो हमको कोई विशेष निराशा न होगी। बूढे आदमी चाहे जो करे, हम युवक इस चीज को, इस शाति की भावना को, स्वय आगे बढाने के लिए कुछ उठा न रक्खेगे।" श्री हेडरसन को इन उत्साह-वर्द्धक शब्दों को सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

० ० ० ०

---

* श्री हेडरसन इग्लैण्ड की मजदूर पार्टी के एक महान नेता थे। निःशास्त्रीकरण-सम्मेलन में यह आरम्भ से ही विशेष दिलचस्पी लेते रहे और बाद मे उसके अध्यक्ष भी हुए। यह मजदूर-सरकार के समय ब्रिटेन के परराष्ट्र-सचिव भी थे। अपनी सचाई के लिए यह प्रसिद्ध थे और इन्हे शाति का नोबेल-पुरस्कार भी मिला था। गत वर्ष इनकी मृत्यु हो गई है।

जब मनुष्य की ईश्वर में श्रद्धा और अपने कार्य मे दृढ़ आस्था होती है तब अपनेआप उसमे एक प्रकार की निश्चिंतता और निर्भयता का जन्म होता है। अफ्रीका की एक घटना है। एक धर्मोपदेशक को ज्वर आगया। उस समय वह उस देश के एक ऐसे भाग से गुजर रहा था जहाँ आदमी का माँस खानेवाली जगली जातियाँ रहती हैं। ज्वर आने से उसे वही रुकना पडा। उसे ऐसे रास्ते से घूमकर जाना था जिसमे यह प्रदेश न पड़ता पर सम्भवतः वह ऐसी अवस्था मे था जब किसी जगह चुपचाप पड़ा रहने के सिवा कुछ अच्छा नही लगता है।

उस प्रदेश के सरदार को जब मालूम हुआ तो वह आया और अपने सकेत-द्वारा उसे अपनी सीमा से बाहर चले जाने को कहा। सरदार को भय था कि वहाँ रहने पर उसकी जगली प्रजा कहीं आगन्तुक पर आक्रमण करके उसे मार न डाले। इसलिए वह उसे होशियार करने आया था। उपदेशक को उसकी भाव-भगी और सकेतो से मालूम हो गया कि यहाँ रहने मे भय है; परन्तु उसकी तबीयत इतनी खराब हो रही थी कि सरदार से बात करते समय भी वह ज्यादा देर तक खड़ा न रह सका, चट्टान के एक टुकड़े पर बैठ गया और उसकी ओर देखता भी रहा। जंगली सरदार के चहरे पर उसके कथन की सचाई इतनी स्पष्टता से प्रकट हो रही थी कि धर्मोपदेशक खिलखिलाकर हँस पड़ा। एक बार हँसी जो आई तो मानों सोता फूट पड़ा; अट्टहास रुकता ही न था। जैसे आँधी मे वृक्ष हिलता है वैसे ही वह हँसी में बेबस होकर झूम रहा था। सरदार ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा!

ऐसे खतरे के वक्त यह हँसता है ! जब प्राण-भय उपस्थित है तब यह खिलखिला रहा है ! यह—यह तो कोई अजीब आदमी है ! सनकी ! वह हँसी के शिकार उस धर्मोपदेशक की ओर कुछ देर तो इस दृष्टि से देखता रहा, जो कह रही थी कि जो कुछ तुम ़ ़ ़ ़ हो वह ठीक नहीं है, पर अंत में उसपर उपदेशक की अवस्था एव निर्भयता का कुछ ऐसा असर हुआ कि हँसी की छूत उसे भी लग गई और वह भी खिलखिला पड़ा।

उसके बाद उसने रोगी (उपदेशक) को सहारा दिया। वह उसे अपने सेवकों के द्वारा सुरक्षित स्थान पर लेगया, वहाँ उसकी सेवा-सुश्रूषा का प्रबन्ध कर दिया और तबतक उसकी देखभाल करता रहा जबतक कि वह रोग-मुक्त होकर चला नहीं गया !

:८:

बीज का गुप्त विकास

फौलाद तथा जहाजों के बड़े-बड़े व्यापारी सदा युद्ध-वृत्ति को जाग्रत किया करते हैं। यही नहीं, वे किसी ऐसे प्रयत्न का सफल होते नहीं देख सकते जिससे युद्ध की सम्भावना का अन्त होरहा हो। वे सदा जातियों और राष्ट्रों को लड़ाने के फेर में रहते हैं। इसीमे उनका लाभ है।

ऐसे ही स्वार्थी व्यापारियो के एक गुट ने विलियम बी० शीरर नाम के एक आदमी को इस कार्य के लिए नियुक्त किया कि वह वाशिंगटन के नौसेना-सम्मेलन (Naval Conference) मे शरीक होकर विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों मे (जो नौसेना घटाने के प्रस्ताव पर विचार करने को एकत्र हुए थे) परस्पर अविश्वास और सदेह के बीज बोदे। उसका मुख्य काम ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र को मिलजुलकर कार्य करने से विरत करना था। उसको अपने षड्यंत्रो मे सफलता मिली। व्यापारियो के गुट ने, बदले मे, उसकी मुट्ठी खूब गरम की, परन्तु उसके कथनानुसार जितनी रकम की उसे आशा दिलाई गई थी उतनी न दी गई। आशानूकूल रकम न मिलने से वह नाराज़ होगया और उसने अदालत में मुक़दमा चलाया। जब मुक़दमे के सिलसिले में सब बातें

प्रकट हुई तो जनता दंग रह गई। यदि मुकदमा न चलता और शीरर को काफी रकम मिल गई होती तो सारी बातें छिपी रहती और जनता न जान सकती कि परदे के भीतर-भीतर इन स्वार्थ-लोलुप व्यापारियों के कैसे-कैसे हथकण्डे चला करते हैं।

इस मुकदमे के विवरण तथा अन्य घटनाओं को लेकर एक संस्था (Union of Democratic Control) ने 'दि सीक्रेट इण्टर-नेशनल' नाम की एक महत्वपूर्ण पुस्तिका प्रकाशित की है। उससे लेकर यहाँ कुछ अवतरण दिये जाते हैं।

'शीरर केस'

शस्त्रास्त्रों का व्यापार करनेवाली कम्पनियाँ जेनेवा में निःशस्त्री-करण-सम्मेलन को असफल बनाने के अर्थ चतुर प्रचारकों की खूब मुट्ठी गरम किया करती है।

श्री शीरर एक अमेरिकन प्रचारक (Publicist) थे। इनका जीवन बड़ा घटनापूर्ण और बहुरंगी था। कभी इन्होंने किसी जलसेना के पक्ष में सिनेट के सदस्यों को प्रभावित किया, कभी 'रात्रि गोष्ठियों' ('नाइट क्लबों') तथा नाटक-मंडलियों की स्थापना में भाग लिया। १६२६ ई० में शीरर ने अमेरिका की जहाज बनानेवाली सबसे बड़ी कम्पनियों (बेथलहम शिप बिल्डिंग कार्पोरेशन, न्यूपोर्ट न्यूज-शिप बिल्डिंग एण्ड ड्राई डाक कम्पनी तथा अमेरिकन ब्राउन बो वेरी कार्पोरेशन) पर २,५५,६५५ डालर के लिए दावा किया। उसका कहना था कि '१६२७ के जेनेवा नौसेना-सम्मेलन में निःशस्त्रीकरण को असफल करने के लिए मुझे इन कम्पनियों ने नियुक्त किया था। मैंने सफलता-

पूर्वक इनका काम किया। मुझे केवल ५१,२३० डालर दिये गये हैं। पर मैने न केवल निःशस्त्रीकरण के निश्चय को असफल किया वरन् प्रभाव डालकर इन कम्पनियों को लड़ाकू जहाजों के आर्डर भी दिलवाये। यदि सम्मेलन सफल होगया होता तो ये जहाज आज अटलांटिक महासागर में न दिखाई देते। इसलिए मुझे बतौर इनाम २,५५,६५५ डालर और मिलने चाहिएँ।'

सितम्बर १९२९ में राष्ट्रपति हूवर ने एटर्नीजेनरल को इस मामले की जाँच करने की आज्ञा दी। तब बेथलहम शिपबिल्डिंग कार्पोरेशन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री युगीन ग्रेस ने राष्ट्रपति को इस मामले का खुलासा करते हुए लिखा कि 'मैने और मेरी कम्पनी की सहकारी कम्पनी बेथलहम स्टील कार्पोरेशन के सचालक-मण्डल के सभापति श्री सी० एम० स्वार्ज (C M Schwartz) ने श्री शीरर को 'निरीक्षक' (Observer) के रूप में नियुक्त किया था और इस कार्य के लिए २५,००० डालर फीस तय हुई थी।'

इस 'निरीक्षक' (Observer) शीरर के क्या-क्या काम थे इसका वर्णन एक दूसरी पुस्तक* में किया गया है। इस पुस्तक मे सम्पूर्ण शीरर केस का विश्लेषण किया गया है। उसके आधार पर चन्द बातें यहाँ दी जाती हैं:—

१ जेनेवा-सम्मेलन मे 'निरीक्षक' के रूप में उपस्थिति। पता नहीं श्री शीरर एव इन कम्पनियों के बीच जो 'जबानी कंट्रैक्ट' हुआ था

*The Navy Defence or Portent, by Charles A Beard (Harper Bros).

और जिसके अनुसार इस आदमी को भाडे पर रक्खा गया था, उसकी शर्तें क्या थीं। पर इतना तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ब्रिटेन के विरुद्ध इसने जोर-शोर से प्रचार किया है, निःशस्त्रीकरण को असफल बनाने मे जी तोड़ परिश्रम किया है, नौसेना के अफसरो एव अमेरिकन सवाददाताओं को बड़ी-बडी दावतें दी हैं और स्वय उसके कथनानुसार 'सैनिक एव व्यापारिक दोनो प्रकार के जहाजो के उद्योग' को बढ़ाने का प्रयत्न किया है। इसके अलावा शाति-आदोलन के अमेरिकन नेताओं को बदनाम करनेवाला साहित्य इसने दूर-दूर तक वितरण किया है और 'न्यूयार्क टाइम्स' इत्यादि अमेरिका के प्रसिद्ध समाचार-पत्रों द्वारा, समाचारो की आड़ मे, अपने पक्ष मे खूब प्रचार कराया है।

२ काग्रेस * के सामने पेश सैनिक एव व्यापारिक जहाजी बिलों के पक्ष मे प्रचार करने के लिए वाशिंगटन मे एक 'लाबी' ‡ चलाना और उसके द्वारा बनने वाले इन कानूनों पर प्रभाव डालना।

३ अखबारों, पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के लिए राजनैतिक लेख तैयार कराना।

४ देशप्रेम-प्रचारक सभाओ तथा अन्य नागरिक सस्थाओ मे व्याख्यान कराना।

---

* सयुक्तराष्ट्र अमेरिका की पार्लमेण्ट।

‡ पार्लमेंटों एव व्यवस्थापक सभाओं मे जो बरामदे होते हैं एव जिनमें सदस्य तथा अन्य लोग बिलों तथा अन्य महत्वपूर्ण राजनैतिक विषयों पर चर्चा करते हैं उसे 'लाबी' कहते हैं। यहा अर्थ विवाद, चर्चा एव अध्ययन के स्थान से है।

५ विशेषज्ञों तथा अन्य कार्यकर्ताओं की नियुक्ति इन 'विशेषज्ञों' की करतूतो का पता नही।

६. अमेरिकन लीजियन, व्यापार-संघों तथा इसी प्रकार की अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं एवं संगठनों के समाने व्याख्यान।

यदि श्री शीरर ने लोभ में पड़कर यह मुकदमा न चलाया होता तो जन-साधारण को कभी पता न चलता कि शस्त्रास्त्रों की बिक्री बढ़ाने के लिए शस्त्रों के बडे-बड़े व्यापारी कैसे-कैसे हथकण्डे रचते हैं। निःशस्त्रीकरण की असफलता के कारण जिन शत-शत आदमियो को कष्ट भोगना पड़ता है तथा युद्ध-भूमि में प्राण देने पड़ते है वे तो इन हथकण्डों को न समझनेवाले जन-साधारण से आते हैं। यहाँ यह मनोरजक बात ध्यान मे रखनेलायक है कि १९३२ के निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन के समय भी श्री शीरर जेनेवा में दिखाई पड़े थे।*

० ० ० ०

लंदन के जन-साधारण में मटिल्डा रीड † की जीवन-कथा का भी खूब प्रचार हुआ। इसके कारण, 'हिसा की शांति हिंसा से नही हो

---

* ब्रिटेन मे भी इसी प्रकार का एक केस हुआ था। उसकी जानकारी के लिए देखिए परिशिष्ट ७।

† 'अन्तर्राष्ट्रीय मैत्रीवर्द्धक संघ' (International fellowship of Reconciliation) की एक स्थापक ('ओरीजनल') सदस्या। अधिक जानकारी के लिए 'मटिल्डा रीड' (Matilda Wrede) नामक पुस्तक पढ़िए। मिलने का पताः—Friend Book Shop Euston Road, London

सकती', इस विश्वास को और बल मिला। मटिल्डा का जन्म फिनलैंड में हुआ था। उसके पिता जेल के गवर्नर थे, इसलिए जेल के आगन मे ही उसका बालपन बीता। इसके कारण वह कैदियों की भलाई के कामों मे दिलचस्पी लेने लगी। उसने कोठरियों (सेलो) मे रहनेवाले कैदियों की देखभाल करना अपना कर्तव्य बना लिया था और उनके दुःख-के लिए, अपने दिल मे, अपनेको जिम्मेदार समझने लगी थी। वह एक-एक कैदी से परिचित थी, और इस सहानुभूति एव सेवा का ऐसा असर हुआ कि सब उसको मानने लगे। डाक्टर, वार्डर और अपराधी सब—सम्पूर्ण जेलवासी---उसपर एकसमान विश्वास रखते और उसकी बात मानते थे। यहाँतक कि जब कोई झगड़ा खड़ा होता तो लोगों को शात करने के लिए उसे ही बुलाया जाता। गुस्से से पागल होरहे अपराधी जब अपनी कोठियों को बन्द कर लेते और पास आनेवाले को मार डालने की धमकी देते थे, जब उनकी आँखो में खून नाचता होता था, तब भी यह दुबली-पतली लडकी उनके किवाड़ों को शाति से थपथपाती और अपने लिए किवाड़ खुलवा लेती। खूनी-से-खूनी आदमी भी उसके सामने अपनेको अशक्त अनुभव करता था। अकेली, बिना किसी प्रकार के भय या चिन्ता के वह उन लोगों के बीच बैठी हुई उनको समझाती, शात करती। उसने उनमे अपराध की, पशुता की, वृत्तियों की जगह आशा और आत्म-गौरव का भाव जगा दिया। सारे जीवन में उसके मित्र और साथी जेल से छूटे हुए लोग ही थे। उन्हीं-मे काम करते-करते उसने अपना जीवन बिता दिया।

० ० ० ०

इसी प्रकार स्वीजरलैण्ड में पीरी सेरी सोल इत्यादि ने अनिवार्य सैनिक सेवा के विरुद्ध लगातार १२ वर्ष तक कठोर परिश्रम करके जन-मत तैयार किया और व्यवस्थापक सभा के एक-चौथाई सदस्यों को इस बात पर राजी किया कि वे अनिवार्य सैनिक सेवा की जगह राष्ट्र के विधायक कार्यक्रम में सहायता एवं सेवा लेने के बिल का समर्थन करेंगे।

० ० ० ०

हर साल जून-जुलाई के महीने में, प्रायः शनिवार के दिन, हेण्डन के वायुमान स्टेशन (एयर ड्रोम) पर अंग्रेजी शाही वायु-सेना (ब्रिटिश रायल एयर फोर्स) का विराट प्रदर्शन होता था और लगभग ढाई-तीन लाख आदमी उसे देखने को जमा होते थे। साल में सैर का शायद यह सबसे लोकप्रिय दिवस होता था। मनोरंजन और सैर का सस्ता प्रोग्राम था। एक शिलिंग (उस समय लगभग १२ आने) सारे दिन का तमाशा। फिर बारीक कटी हुई मुलायम दूब का दूर तक विस्तृत हरा मैदान, जिसपर स्थान-स्थान पर एक-एक कुटुम्ब के लोग आराम से बैठ सकते थे और सब अपनी-अपनी रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार समय बिताते थे। पुत्र और पति नई-नई मशीनों को देखते तो मातायें एवं स्त्रियाँ नरम दूब पर बैठकर पढ़तीं, बुनाई करतीं और घर से लाया हुआ भोजन परखकर सब मजे से खाते। बच्चों के लिए तो सभी जगह आनन्द की, कुतूहल की सामग्री होती थी। कहीं बैंड है, कहीं रजत् गुब्बारे नीलाकाश में उड़ते हैं, कहीं पसीने से तर आदमी 'लाउड-स्पीकरों' से सूचनायें पढ़ते हैं। यह सब बच्चों के लिए तमाशे और आनन्द की सामग्री थी। इस भीड़ में अच्छे स्वभाव के लोग होते थे

जो किसीका बुरा नहीं चाहते, पर अधिकाश के मन में इस बात का कोई भाव या विचार ही नही उठता था कि इन सुन्दर चमकते हुए हवाई जहाजों के व्यवस्थित प्रदर्शन के पीछे क्या बात छिपी हुई है! कार्य-क्रम इस तरह रक्खा जाता था कि हरेक बात निर्दोष और स्वच्छ मालूम होती। छुट्टी और सैल के दिन लन्दनवासी किसी बात को तह तक जाने की विशेष चेष्टा नहीं करते। उन दिन वे हलके दिल से, आनन्द के साथ, समय काटना पसन्द करते हैं। फिर सम्पूर्ण कार्यक्रम के बीच केवल अन्तिम भाग ही ऐसा होता था जिनमें प्रदर्शन का गूढ एव व्यावहारिक उद्देश्य छिपा था। यह दृश्य तब दिखाया जाता था जब लोग घर लौटने की तैयारी करते होते थे। इसमे वह बात दिखाई जाती थी कि दुनिया के एक सुदूर एव वेपहचाने भाग मे विद्रोह को शान्त करने, जबर्दस्ती कैद किये आदमियों को छुडाने या अत्याचार का दमन करने का काम शाही वायु-सेना (आर० ए० एफ०--रायल एयर-फोर्स) किस तरह करती है। वे ऐमे ही अवसरों पर वे सब काम करते हैं जिनके लिए उनपर इतना रुपया खर्च किया जाता है। वे बम गिराकर गाँव-के-गॉव नष्ट कर देते हैं; या किले और अपराधी की झोंपड़ी को तहस-नहस कर डालते हैं। यद्यपि इन दृश्यों में मुश्किल से ५ मिनट का समय लगता होगा; पर जब दर्शक देखते हैं कि एक कृत्रिम तैल-कूप गगनचुम्बी लपटों और ऊँची धूम्रजटाओं के साथ भभक उठता है अथवा सारा गाँव उजड़ गया है पर उस ध्वंस में यूरोपियन ईसाइयों का गिरजाघर खड़ा है, तो उनकी दिलचस्पी उधर बहुत बढ जाती है।

दस-बारह वर्ष पहले एक भूतपूर्व सत्याग्रही कैदी रोज़ा हाबहाउस का ध्यान ऐसे ही एक प्रदर्शन की ओर गया जो प्राचीन काल में रोमन राजा लोग अपने तथा लोगों के मनोरंजन के लिए कराते थे। इनमें पहलवान एक-दूसरे से लड़ते और अपने प्रतिद्वद्वी को कत्ल कर डालते थे। मनोरजन का ऐसा पाशविक रूप देखकर ईश्वर में श्रद्धा रखनेवाले एक व्यक्ति को बड़ा दुःख हुआ। उसने इस प्रश्न पर काफ़ी विचार किया; किन्तु उसके हृदय का दुःख बढ़ता ही गया और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रभु ने मानव-प्रकृति को आनन्द ग्रहण करने की जो शक्ति प्रदान की है उसका यह बिलकुल ही उलटा प्रयोग है। उसने इसके विरुद्ध आवाज उठाने की ठानी। वह स्वयं तमाशे के स्थान पर गया, अपनी जगह पर बैठ गया और भगवान के चरणों में आत्मार्पण करके उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। जब अखाड़े में मानवी रक्त की धारा वह चली और पचास हजार दर्शकों की हर्षध्वनि से आकाश गूँज गया, तो अपनी जगह पर खड़े होकर उसने लोगों से अपील की कि ज़रा सोचें कि यह क्या हो रहा है, और ऐसे पाशविक खेल को बन्द करदें। पर उस नशे में उसकी कौन सुनता? लोगों ने उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। पर अन्तःकरण में बात चुभ गई थी। उसके शब्दों ने हृदयों को बेचैन कर दिया; उसके विचार फैल गये। फलतः वह खेल आगे के लिए बन्द होगया।

रोजा ने जब इसपर विचार किया तो वह इस निश्चय पर पहुँची कि हेण्डन का यह वायुयानों का वार्षिक प्रदर्शन लोगों में इस प्रकार की अमानुषिक वृत्तियों को जाग्रत करता है जो दूसरों के विनाश के दृश्य

देखकर तृप्त होती हैं। इसलिए रोजा स्वय हेएडन गई और ईसा के नाम पर उसने लोगों की सद्भावनाओं को जाग्रत करने की चेष्टा की। एक युवक अफसर उसे मैदान से बाहर कर देने के लिए आया और उसने रास्ते में स्वीकार किया कि 'मेरी राय भी तुमसे मिलती-जुलती है' किन्तु 'क्या किया जाय ? शाही वायुसेना का जीवन मुझे अनुकूल पड़ता है और अपने कुटुम्ब का पोषण करने की इसके सिवाय दूसरी सुविधा मेरे पास नही है।'

परन्तु रोजा के इस एकान्त प्रयास का असर दूसरे आदमियों पर भी हुआ और एक विचार के बहुतेरे लोगों ने एकत्र होकर अगले वर्ष के प्रदर्शन के लए कार्यक्रम बनाना शुरू कर दिया। एक शिशु-शाला (Nursury School) की सचालिका ने बताया कि प्रदर्शन के कुछ दिन पहले मेरे नन्हे बच्चों ने, जिनकी आयु ३-४ वर्ष की है, आकाश में उड़ते हुए हवाई जहाजों को देखा था। सभवतः ये जहाज हेएडन जा रहे थे। वे तब-तक इन जहाजो को देखते रहे जबतक कि सब उनकी निगाह से ओझल नहीं होगये। तब सबसे बडा बच्चा दूसरों से बोला—"बड़ा होने पर मैं भी ऐसा ही बनूँगा। हवा में से मै तुम सबपर बम गिराऊँगा।" नन्हे-नन्हे बच्चों के मन पर इन प्रदर्शनो का कैसा विषैला प्रभाव होता है, यह बात इस उदाहरण से बहुत स्पष्ट होजाती है।

प्रति वर्ष लदन की म्युनिसिपल शालाओं के चुने हुए विद्यार्थियों को हेएडन मे मुफ्त में खेल दिखाया जाता था। सार्वजनिक प्रदर्शन के एक दिन पहले उनके सामने खेल का रिहर्सल किया जाता था। यह सब किसलिए ? उनमें युद्ध की मनोवृत्ति जाग्रत करने के लिए या अविवेकपूर्ण

दयालुता के कारण ? जो भी हो, पर स्थानीय अधिकारियों के पास अनेक अभिभावकों ने इस पद्धति का विरोध करते हुए पत्र भेजने शुरू किये कि बालकों के मन पर ऐसे प्रदर्शनों का बड़ा बुरा एवं विषैला प्रभाव पड़ता है इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए।

जब किसी देश के हवाई जहाज़ कहीं बम गिराते हैं तो पीड़ितों के कण्ठ से जो करुण हाहाकार एव आर्त्तनाद उठता है उसका ब्रौडकास्ट रेकार्ड दोनों दिन के प्रदर्शनों में नही सुनाया जाता था; क्योंकि ऐसा करने का उलटा असर होता और दर्शकों की सहानुभूति पीड़ितों के पक्ष में होती। पाँच–छः वर्ष पहले जब शघाई पर बम गिराये गये थे तो कुछ उत्साही व्यक्तियो ने उस समय के आर्त्तनाद का रेडियो रेकार्ड बनाया था। इसके सुनने से मालूम होता है कि पीड़ित माताओं एवं बच्चों की करुण चीत्कारसे किस प्रकार वातावरण कम्पित होता है। वातावरण को ऐसे हाहाकार से पूर्ण करने में सहायक होना मानव प्रकृति की श्रेष्ठ मर्यादा का अपमान करना एव विनाश करना है। ईश्वर इसे कभी पसन्द नहीं करेगा।

लाखों वर्ष से शुद्ध वायु प्राणिमात्र के लिए ईश्वर की एक श्रेष्ठ देन रही है। पर आज ऐसा समय आया है कि हमारे अहकारमय परिश्रम ने इसे विजय कर लिया है और अब हम इसे एक अभिशाप तथा मारक भय एव विनाशकारी पीड़ा का एक साधन बना देने पर तुले हुए हैं! हाय!

इसलिए, रोजा के उदाहरण से अनुप्राणित हों, इंग्लैण्ड के प्रत्येक भाग से आ-आकर लोग हर साल हेण्डन में एकत्र होने लगे।

इनके साथ परचे, नोटिस, पोस्टर सब कुछ होते थे। इनमें अध्यापक, बेकार, पादरी, भूतपूर्व अफ़सर, मजूर स्त्रियाँ और कारखाने के श्रिमक-सभी तरह के लोग होते थे। वे प्रदर्शिनी के प्रवेश-द्वार के बाहर घूम-घूमकर प्रचार करते और भीतर जाकर भी दर्शकों से अपील करते कि क्या ऐसे भयानक और अमनुष्कि कार्यों में सहायता देना ईसा के प्रेम-धर्म में विश्वास रखनेवाले (ईसाइयों) के लिए उचित है ? जब खेल खत्म होजाता और लोग घर को लौटते तो भीड़ इतनी ज्यादा होती थी कि कोई तेजी से चल न सकता था। कछुए की चाल से यह भीड़ स्टेशन की ओर बढ़ती थी। तब ये लोग लोगों को अपने परचे तथा नोटिस बाँटते थे। कुछ दीवारों पर या स्टूल पर खडे होजाते और व्याख्यान देने लगते थे। लोग जगह-जगह खड़े होकर बडे चाव से व्याख्यान सुनते। कहीं कोई भूतपूर्व सैनिक खड़ा होजाता और युद्ध करके युद्ध को नष्ट करने के कार्य में प्राण गँवानेवाले अपने मृत साथियों के नाम पर लोगों से अपील करता। वह युवकों से कहता—भाई, इस प्रश्न पर अच्छी तरह विचार करो। अभी जो खेल तुम देखकर आये हो, युद्ध कोई वैसी मनोरंजक और आसान बात नहीं है। इसके बाद वह अपने अनुभवों का वर्णन करता और युद्ध की भयानकता का नकशा लोगों की आँखों के सामने खड़ा कर देता। वह कहता—"हम लोग इंग्लैण्ड की राष्ट्रीय आय का लगभग ७५ प्रतिशत भावी युद्धों की तैयारी के लिए खर्च कर रहे हैं। क्या आप चाहते हैं कि शस्त्रालयों के भागीदार—शस्त्रों का व्यापार करनेवाले—दिन-दिन धनी हों और श्रमिक, मेहनत करके रोटी कमानेवाले, दिन-दिन ग़रीब होते जायँ?"

एक सभ्य बंगाली सज्जन, जो भारतीय सिविल सर्विस मे मजिस्ट्रेट थे, अपनी पत्नी के साथ, गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए इग्लैण्ड आये हुए थे। वह भी हेण्डन पहुँचे। जब उन्होंने वहाँकी अपार भीड़ और ऊपर से बम गिरानेवाले हवाई जहाजों की करतूत देखी तो बड़े निराश हुए। वह सज्जन बोले--"हम लोग पश्चिम के इन आदमियों को कभी न समझ सकेंगे।" बाद मे उन्होंने 'अहिंसा'-दल के आदमियों का कार्य देखा जो कड़ी धूप मे अपने-अपने ढंग से, बड़ी लगन के साथ, लोगों में युद्ध के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। यह सब देखकर उनकी पत्नी ने कहा—"हाँ, यह देखो। कम-से-कम इनमें कुछ ऐसे भी हैं जो इस विषय में हमारी ही तरह महसूस करते हैं!"

इस तरह हेण्डन जाकर युद्ध के विरुद्ध अपने भाव प्रकट करना और यथाशक्ति उन भावों का प्रचार करना, अब सामान्य बात होगई है। जब एक पतला-दुबला बेकार श्रमिक अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए लोगों के सामने खड़ा होकर अपील करता है कि आप लोग इस प्रदर्शन को उस दृष्टि से देखे जिससे हमारे प्रभु देखते हैं, तो लोगों को लज्जा-सी मालूम होती है और लोगों के दिल में सचमुच एक धक्का-सा लगता है।

° ° ° °

अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध-प्रतिरोधी संघ (दि वार रेसिस्टर्स इण्टरनेशनल),* जिसके अध्यक्ष लार्ड पानसनबी हैं, समग्र यूरोप के अहिंसावादी

---

*'युद्ध के विरोधियों का घोषणा-पत्र' (The War-Resisters Declaration) परिशिष्ट ८ में देखिए।

लोगों से ससर्ग रखता है। इसकी ओर से 'वार रेसिस्टर' नाम की एक तिमाही पत्रिका भी निकलती है। इसके फरवरी १९३४ के अक से निम्नलिखित उद्धृताश नीचे दिये जाते हैं:—

फ्रांस में

फ्रास में युद्ध-विरोधियों (Refractaires) की एक बडी सख्या है, जिसके महत्व की ओर लोगो ने ध्यान नहीं दिया है। मैं उन लोगो की बात कहता हूँ जो देश के सैनिक कानूनों के अनुकूल नहीं हैं।

कुछ वर्ष पहले सिनेट ट्रिब्यूनल के सामने पार्लमेण्ट के एक सदस्य ने बताया था कि सेना में काम करने योग्य (२० से ५० वर्ष के बीच की उम्रवाले) कम-से-कम १,३२,००० फरासीसी ऐसे हैं जिन्होंने अनिवार्य सैनिक सेवा के कानून के आगे अपना सिर नहीं झुकाया। तबसे हम लोगों ने यह जानने के लिए बडा प्रयत्न किया कि अब यह सख्या कितनी बढ गई है, पर सैनिक अधिकारियों ने, जो आज फ्रास मे इतने प्रबल हैं जितने कभी नहीं थे, हमारे पार्लमेण्ट के मित्रो को किसी प्रकार की सूचना देने से इन्कार कर दिया। फिर भी इतना तो निश्चित है कि यह सख्या पहले से बढ गई है और दिन-दिन बढती जाती है।

लटविया में

लटविया में भी काम होरहा है, पर लटवियन अधिकारी कहते हैं कि 'जब सारा ससार युद्ध के लिए तैयारी कर रहा है तब यहाँ युद्ध के विरुद्ध प्रचार करना मानों सरकार की जड को ही नष्ट कर देना है।' इस-लिए शाति-प्रचारक साहित्य पर कड़ा सेसर है और कुछ दिनो पहले 'अब युद्ध नहीं (No more War)नामक एक पुस्तक भी जब्त करली गई है

'लटविया में युद्ध-विरोधी प्रचार करना सदा ही एक कठिन कार्य रहा है; किन्तु हमारे सदस्यो का अनुभव है कि अब वह दिन-दिन और कठिन होता जारहा है। फिर भी वे निराश या निरुत्साह नही हैं और सैनिक सेवा से इन्कार करने के कारण एक के जेल जाने का समाचार हमें मिला है। इस भाई का नाम जेनिस माइकेलसस (Janis mikalsons) है। यह २२ वर्ष के एक नवयुवक हैं जिनके साथ लगभग एक वर्ष से हम लोगो का सम्बन्ध हुआ है। कुछ सप्ताह पहले के एक पत्र में वह लिखते हैं.—

मेरा वक्त नजदीक आरहा है। मै नही कह सकता कि क्या होगा; पर मै सचाई का त्याग नही करूँगा। मुझे जेल का तथा उसके कष्टों का, चाहे अवधि कुछ भी हो, भय नहीं है। मुझे केवल अपनी पत्नी तथा बच्चे की, जो कुछ ही महीनो का है, चिन्ता है।"

"जब समय आया और माइकेलसस को सैनिक सेवा के लिए तलब किया गया तो उसने रीगा के सैनिक अधिकारियो के पास नकारात्मक उत्तर लिख भेजा। इस पत्र में उसने अपने अन्तःकरण के विश्वास तथा युद्ध एव सैनिक सेवा सम्बन्धी अपने निश्चय की बात स्पष्ट रूप में लिखदी थी और अपनी इन्कारी के कारण भी बता दिये थे। परन्तु विश्वास एव सचाई के बावजूद, जिसे स्वय अधिकारी स्वीकार करते हैं, उसे गिरफ्तार कर लिया गया और वह इस समय जेल मे पड़ा हुआ अपने मुकदमे की बाट देख रहा है। यहाँ यह भी बता देना जरूरी है कि इस भाई को राष्ट्रपति (प्रेसिडेण्ट) की ओर से चेतावनी मिली थी कि 'यदि तुमने अपना ढग न बदला तो स्वदेश-हित के अपराध में

तुम्हें कड़ा दण्ड दिया जायगा और उस दण्ड मे किसी प्रकार की कमी न की जायगी।' इसके उत्तर में उसने लिखा—"मेरी सैनिक सेवा की इन्कारी पर आपकी चेतावनी मिली; परन्तु मैं यह कहने को विवश हूँ कि अपने निर्णय में किसी प्रकार का परिवर्तन मैं नहीं कर सकता। मैंने पहले जो कुछ कहा है उसपर अटल हूँ। मैं अपने अन्त.करण और गूढ विश्वास के अनुसार काम कर रहा हूँ। घृणा से घृणा फैलती है, प्रेम से ही घृणा का अन्त किया जा सकता है। क्या अपने अन्तःकरण की आवाज के अनुसार काम करने से मैं समाज के लिए खतरे की चीज बन जाऊँगा ? मेरा तो उलटा यह विश्वास है कि यदि मैंने अपने अन्तःकरण की आज्ञा के अनुसार काम न किया तो अवश्य समाज के लिए खतरनाक होजाऊँगा। मैं असत्य के सामने अपनेको अपमानित नहीं कर सकता। मैं पाखडी क्यों बनूँ ? पाखण्ड तथा इस प्रकार के प्रत्येक दुर्गुण का विरोध किया जाना चाहिए। आज प्रत्येक आदमी युद्ध को बुरा कहता है, फिर भी सेना के नाम भेजे अपने सदेश में युद्ध-सचिव कहते हैं—'शाति के समय थोड़ी-सी सैनिक शिक्षा, उस अवमर के लिए एक प्रकार की तैयारी है जिसके लिए सेना का अस्तित्व है।' मैं इस प्रकार के विचारों के साथ समझौता नहीं कर सकता।

जेनिस माइकेलसस रीगा में ८ अक्तूबर १९३३ को गिरफ्तार हुआ था।

युद्ध विरोधी ज़ेक

जाबलोन (Jablonec nIn) का निवासी फर्डीनेण्ड डीट्रिच (Ferdinand Dıttrıch) जेकोस्लोवेकिया का एक नागरिक है। वह

जर्मन जाति ('नेशनलिटी') का है। उसके दो पुत्र हैं। 'रिज़र्व' (आवश्यकता पड़ने पर सैनिक सेवा के लिए बुलाये जानेवाले दल) का एक सदस्य होने के कारण कोसिक (Kosice) की सैनिक तैयारियों में उसे भाग लेना पड़ा था, पर बाद मे उसने इस विषय पर गहराई के साथ विचार किया और उसमें महत्वपूर्ण धार्मिक एवं नैतिक परिवर्तन हुए। उसने समझ लिया कि युद्ध और धर्म विरोधी बातें हैं। फल-स्वरूप दूसरी बार अवसर आने पर उसने सैनिक ड्रिल इत्यादि में भाग लेने से इन्कार करदिया और साफ़-साफ़ कह दिया कि ईसा की शिक्षा ऐसी खूनी जमायत में भाग लेने के सर्वथा विरुद्ध है। वह गिरफ़्तार कर लिया गया और सैनिक न्यायालय से उसे छः महीने की सजा हुई। सज़ा की एक शर्त यह भी थी कि यदि इसका मत न बदला तो वह ३ वर्ष तक बढ़ाई जा सकेगी। किन्तु डीट्रिच ने घोषित किया कि किसी प्रकार की जेल-यातना मुझे अपने निश्चय से हटा नहीं सकती।

:९:

अन्त या आरम्भ ?

युद्ध-ऋण का प्रश्न वड़ा जटिल होगया। जितना ऋण था, उसे चुकाना ऋणी देशों की शक्ति के वाहर था। इग्लैण्ड की एक वड़ी जहाजी कम्पनी के उपाध्यक्ष ने, जो वैंक ऑफ इग्लैण्ड की सचालक-समिति मे भी थे, घोषणा की कि यदि हम लोगो ने ईसा की शिक्षा के अनुसार काम किया होता और अपने ऋणियों को विना कुछ लिये अवसे वहुत पहले उऋण कर दिया होता तो वहुत ही अच्छी वात होती।

° ° ° °

मार्क कोनोली (Mark Connolly) ने 'ग्रीन पास्चर्स' (हरा चारागाह) नामक एक अत्यन्त सुदर नाटक लिखा। यह न्यूयार्क थियेटर में अभिनीत हुआ और वर्षों तक नित्य खेला जाता रहा। इसके पात्र सव नीग्रो हैं। दृश्य-पर दृश्य आकर आदम, पैट्रियार्क्स, मूसा, होशी इत्यादि के चरित्रों में प्रकाशित ईश्वर और मनुष्य के सम्वन्ध को हमारे सामने रखते हैं। युवक नाटककार ने हेसड्रेल नामक एक नये चरित की सृष्टि की है। यद्यपि हेसड्रेल नाटककार की अपनी सृष्टि है, फिर भी उसके साथ एक पैगम्वर की सद्‌विभूति लगी हुई है। एक वार जानकर हम उसे कभी नहीं भूल सकते। यद्यपि इतिहास में उसका अस्तित्व नहीं है, फिर भी वह जीवित है—सत्य है। वह ईश्वरत्व की

होशी-प्रतिपादित धारणा का चित्रण करता है। प्रत्येक पाठक को यह भावपूर्ण नाटक अवश्य पढ़ना और उसे अपने जीवन में बद्धमूल करना चाहिए।

० ० ० ०

आक्सफर्ड इंग्लैंड का विद्या-केंद्र है। यहाँके छात्रों का इंग्लैण्ड के निर्माण में बड़ा भाग रहा है। वहाँ इन छात्रो की एक जबरदस्त सभा (आक्सफर्ड यूनियन सोसायटी) है। इस सभा के समक्ष उसके कुछ सदस्यो ने ९ फरवरी १९३३ की बैठक में यह प्रस्ताव पेश किया—"यह सघ किसी भी अवस्था में अपने सम्राट् या देश के लिए युद्ध नही करेगा।" प्रस्ताव बड़े वाद-विवाद के पश्चात् १५३ के विरुद्ध २७५ वोटों से पास होगया।

अन्य विश्वविद्यालयों ने भी आक्सफर्ड के उदाहरण से शिक्षा ली और एक या दो को छोड़ कर सबने इसी प्रकार के प्रस्ताव पास किये। ये एक या दो, जहाँ प्रस्ताव पास न हो सके, शस्त्र बनानेवाले शक्तिमान कारखानों के नजदीक थे।*

० ० ० ०

बाइबिल की सनातन प्रामाणिकता का खडन-मडन छोड़कर लोग जरा और आगे बढ़े। लोगो ने शेरो की गुफा में डेनियल की कथा की ऐतिहासिकता पर झगड़ना छोड़ दिया।

अब लोगों ने यह महसूस करना शुरू किया कि भय को विजय करलेना ही हमारी रक्षा है एवं ईश्वर की सर्वव्यापकता के अनुभव में ही

*ठीक—ठीक संख्या जानने के लिए देखिए परिशिष्ट ९।

शक्ति है और यदि हम उचित कीमत चुकावें तथा उपयुक्त यम-नियम एव अभ्यास के द्वारा ईश्वर की सर्वव्यापकता के इस अनुभव को अपना अन्तः करण में मूर्तिमान करलें तो डेनियल की-सी शक्ति हमें भी प्राप्त होसकती है।

सन्त तेरसा ने जब अनाथालय स्थापित करने का विचार किया तो उसके पास सिर्फ एक इकन्नी (पेनी) थी। लोगों ने जब उसका विचार सुना तो इस दुस्साहस एव महत्त्वाकाक्षा की हँसी उड़ाने लगे। तब उसने उत्तर दिया—"हॉ, अपनी इकन्नी से तेरसा कुछ नहीं कर सकती, परन्तु ईश्वर और इकन्नी दोनों के साथ ऐसा कोई काम नहीं है जिसे तेरसा नहीं कर सकती।"

इस वाक्य में लोगों का विश्वास बढने लगा कि "जो ईश्वर के साथ है उसका बहुमत है।"*

० ० ० ०

यह बात बार-बार प्रमाणित होगई कि किस प्रकार आज का आदर्शवादी कल प्रतिक्रियावादी होजाता है; और अपने अन्य बधुओं पर हुकूमत या अधिकार करने की स्थिति में होना कितना खतरनाक है तथा प्रमाद का विष किस प्रकार धीरे-धीरे हमारी नाड़ियों में—रक्त मे, भिदकर हमें अन्धा, बहरा और हमारी आध्यात्मिक प्रकृति को पगु बना देता है, जिससे अन्त में हमे आत्म-वचना के शिकार होते हैं।

जार्ज एल० ई० डेवीज ने हमे बताना शुरू किया कि हम कितने गिर गये हैं, किस प्रकार हमें दूसरों की निन्दा में रस आता है किन्तु

---

* "One with God is in a majority" हमारे यहाँ के 'यतो धर्मस्ततो जयः' से यह सिद्धान्त मिलता है।

जब वही काम हम स्वय करते हैं 'तो उसके लिए हमे जरा भी खेद नहीं होता। हम कितने अनुदार होगये हैं; जरा-जरा से मत-भेदों पर लडने के लिए तैयार होजाते हैं। अक्सर होता यह है कि सड़क की मोड़पर व्याख्यान देनेवाला अपने व्याख्यान मे धनवानो के अत्याचार का बडे जोश-खरोश के साथ वर्णन करता है, परन्तु वही घर जाकर अपनी पत्नी के साथ अत्याचारी का अभिनय करने लगता है। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार संयम और अभ्यास से हम असली शाति के निर्माता बन सकते हैं।

मुँह से ही डेवीज ने यह शिक्षा नहीं दी, वरन् अपने जीवन से, अपने कार्यों से भी उसे प्रकट किया। एक दिन की बात है कि उन्होंने बाइसिकिल उठाई और उसपर चढ़कर चल दिये। उन्हे कहीं जाना न था और न उनको मालूम था कि मै कहॉ जारहा हूँ या कहाँ जाना चाहिए। कोई अज्ञात प्रेरणा उन्हे आगे खींचे लिये जाती थी। उनका अन्तःकरण बस इतना अनुभव कर रहा था कि ईश्वर को मुझसे कोई समन्वय का, मैत्री-वर्द्धन का, प्रेम का काम कराना है। बस, इसके अलावा उनको कुछ मालूम न था। सारी स्थिति हास्यास्पद मालूम पड़ रही थी! इसपर रास्ते मे ही पानी भी बरसने लगा। अन्त मे 'मेनाई स्ट्रेट्स' (Menai Straits) नामक स्थान पर पहुँचे। आगे जाने की प्रेरणा का फिर भी अन्त न हुआ। इसलिए नाव से जल-पथ पार किया और 'एंगिलसी' द्वीप में पहुँचे। इस द्वीप मे उनका किसीसे व्यक्तिगत परिचय न था केवल एक आदमी ऐसा था जो उनके एक मित्र का मित्र था और उसने इनके बारे में सुन रक्खा था। वह व्यक्ति किसी

मजदूर सघ (ट्रेड यूनियन) का स्थानीय मन्त्री था। डेवीज ने उसके घर का पता मालूम किया और जाकर उसके दरवाजे पर थपथपाया। तबतक उन्हे यह पता न था कि यदि मकानवाले ने पूछा कि भई क्यों आये हो तो उसका क्या जवाब होगा ? दरवाजा खुला और खोलनेवाले से इन्होंने दो-चार अस्पष्ट शब्द कहे। क्या कहे, यह भी मालूम न था, पर खोलनेवाला इतनी जल्दी मे था कि उसने आगन्तुक की घबराहट की ओर लक्ष्य न किया। वह अपने ही विचारो एव चिन्ताओं मे डूबा हुआ था। उसके चेहरे पर थकान और दुःख के चिन्ह थे। उसने आगन्तुक से नम्रतापूर्वक कहा कि 'इस समय बैठक होरही है, जिसमे सारे देश से प्रतिनिधि आये हुए हैं और महत्वपूर्ण बातों पर विचार हो रहा है; अन्यथा मै अवश्य घर मे स्थान देता।'

अब जार्ज डेवीज को मालूम हुआ कि क्यों मै यहाँ हूँ और इधर आनेकी प्रेरणा मन मे क्यो हुई ? उन्होंने कहा—"क्या आप समझते हैं कि सभा की समाप्ति के पूर्व मैं प्रतिनिधियो के सामने बोल सकता हूँ ?"

उस दुःखित व्यक्ति ने कहा—"मै उन लोगों से अनुरोध करूँगा।" और दरवाजे के सामने बैठने का प्रबन्ध करके चला गया।

बडी देर तक जार्ज डेवीज को यहाँ बैठना पड़ा। पर वहाँसे भी उन्हे अन्दर से क्रोधभरी, निराशाभरी और उत्तेजक आवाजें सुनाई पड़ रही थीं। डेवीज को इस सघ-यूनियन—की कुछ जानकारी थी। वह जानते थे कि इस यूनियन ने अच्छा काम किया है, पर अब गलतफहमी के कारण इसका अस्तित्व खतरे मे है। उनको समझते देर न लगी कि मेरा सदेश क्या होगा ?

अन्त में जब उन्हे अन्दर बुलाया गया तो वातावरण बड़ा शिथिल था और लोगों के चेहरे रूखे और कड़े होरहे थे। उन्होंने बोलना शुरू किया और अपने अनुभवो के आधार पर बताया कि शान्ति किन बातों पर निर्भर करती है। उन्होंने उस सच्ची शान्ति की व्याख्या की जिसका मतलब केवल युद्ध का अभाव ही नहीं है वरन् जिस शान्ति के कारण जीवन जीवन है, उसमें सुख और स्वाद है। यह शान्ति अपने और दूसरों के—अर्थात् अपने और पड़ोसियों, शत्रुओं, कुटुम्ब तथा ईश्वर के परस्पर प्रेमपूर्व एव समुचित सम्बन्ध से ही प्राप्त होसकती है। यह शान्ति सदा सहिष्णुता के ऊपर, हम भी सुखी, दूसरा भी सुखी, कुछ हम दे, कुछ ले, इस भाव पर निर्भर करती है। विशेषतः ईश्वर के साथ तो ऐसा ही चल सकता है। आज तक हम इस ग़लत विचार में थे कि केवल भजन गाने और प्रार्थना करने का ही नाम धर्म है।

ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, लोगो की दिलचस्पी बढ़ती गई; उनकी शिथिलता दूर होने लगी और वे आराम के साथ कुर्सियों पर डट गये। उनके चेहरों पर जो रूखापन था वह धीरे-धीरे दूर होने लगा; संकोच, चिढ और सारी कटुता, जो ग़लतफहमी पर गलत दृष्टिकोण से वाद-विवाद करने के कारण पैदा हुई थी, प्रेम-रस मे भिने शब्दो की धारा में बह गई। अन्त में जब डेवीज़ ने व्याख्यान समाप्त किया तो बड़ी देर तक लोग हर्षध्वनि करते रहे। उसके बाद एक प्रतिनिधि खड़ा हुआ और बोला—"मैं नहीं जानता कि व्याख्याता महाशय कौन हैं और किस लिए यहाँ आये हैं। मै केवल इतना जानता हूँ कि उन्होंने संघ को टूटने से बचा लिया है।" इसके बाद जार्ज डेवीज की ओर घूमकर

उसने कहा—"मित्र, आपको तो इसकी जानकारी नहीं होगी, पर हम लोगों का सगठन आज छिन्न-भिन्न होने ही जा रहा था। कुछ समय से गलतफहमियाँ और कठिनाइयाँ बढ रही थीं। हमें वीरतापूर्वक मुकाबला करके उनपर विजय प्राप्त करनी चाहिए थी, परन्तु हमारे लिए वे बडी प्रबल सिद्ध होरही थीं। आज की मीटिंग इन कठिनाइयों से पार पाने के लिए हमारा अंतिम प्रयत्न था, पर उसमें हम असफल हुए। ऐसे ही अवसर पर आपका आगमन हुआ और जिस चीज को हम भूल गये थे आपने हमें उसकी याद दिलाई। हम आपके आभारी हैं और आपका धन्यवाद करते हैं।"

० ० ० ०

१६३२ मे दो विश्वसनीय एवं प्रतिष्ठित अंग्रेज पुरुष तथा डा० मौड रायडन नामक महिला, तीनों इस उद्देश्य से गाँवों में गये कि वहाँ-के लोगों के साथ मिलकर जटिल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति को सुलझाने एव हमें मार्ग दिखाने के लिए भगवान् से प्रार्थना करेंगे। यह बात स्पष्ट होती जा रही थी कि यदि आर्थिक एवं राष्ट्रीय संघर्ष की विषम स्थिति से संसार को मुक्त करने का कोई उपाय शीघ्र न ढूंढा गया तो मानवी सभ्यता का खात्मा होजायगा। इन तीन व्यक्तियों की चेष्टा का परिणाम यह निकला कि 'शान्ति-सेना' (पीस आर्मी)* का जन्म हुआ।

---

* The Peace Army. 24, Rosslyn Hill, Hampstead, London

इसका उद्देश्य एक शस्त्रहीन सेना का निर्माण करना है। इसके दो हिस्से हैं। पहले विभाग के सदस्य दो शक्तियों में परस्पर युद्ध होने

० ० ० ०

बैतुलहम में सराय के पास ही जो गिरजाघर है उसपर ईसाइयों के यूनानी, आर्मनी और लैटिन धर्म-सम्प्रदाय तीनों का अधिकार है। तीर्थयात्रियो के अज्ञान तथा अधिकारियो के पारस्परिक विद्वेष और प्रमाद के कारण इन तीनों सम्प्रदायों में आपस में इतने झगड़े खड़े होगये कि उस मन्दिर के पवित्र प्रागण में भी खून की धारा बह गई। जब फिलस्तीन (Palestine) पर तुर्कों का कब्जा था तब, १६१० में, मैंने इस गिरजाघर को देखा था। वह दृश्य मैं कभी भूल नहीं सकती। इन सम्प्रदायों के अनुगामियों में परस्पर कटुता इतनी बढ़ गई थी कि

की अवस्था में, उनके बीच निरस्त्र (Unarmed) खड़े होने को तैयार रहते हैं (Members of Section 1 Volunteer to stand unarmed between the contending forces in the event of War, by whatever means may be found possible)। दूसरे विभाग के लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि यदि हमारा देश युद्ध में भाग लेगा तो युद्ध-घोषणा होते ही हम युद्ध-विभाग के कार्यालय मे जाकर घोषणा करेंगे कि हम किसी प्रकार की सामरिक सेवा में भाग लेने से इन्कार करते हैं और यदि इस इन्कारी के फलस्वरूप हमें गोली से मार देने की भी आज्ञा हो तो उसके लिए भी तैयार हैं (Members of section 2 promise, in the event of their own country going to war, to present themselves at the War Office as soon as possible after its declaration, and state that they refuse to take part in war services of any kind, and that they are prepared to be shot for this refusal ,

अधिकारियों को शांति-रक्षा के निमित्त मन्दिर के अन्दर सेना रखने की आवश्यकता पड़ी। मैंने देखा कि 'उच्च वेदी' (Hign Altar) के सामने ही एक मुसलमान सैनिक किरचदार बदूक कधे पर लिये यहाँ-से-वहाँ और वहाँ-से-यहाँ घूमकर पहरा दे रहा है। वह वहाँ इसलिए था कि ईसा की उपासना के लिए एकत्र अपनेको ईसाई कहनेवाले लोग एक-दूसरे पर आक्रमण न कर बैठें।

यह हमारे लिए एक महान् चुनौती है!

हमें अपनी जड़ों को 'अपनी आत्मा की भूमि'—ईश्वर की गहराई में सन्निविष्ट करना होगा।

यदि हमको पृथ्वी पर शांति की स्थापना करनी हो तो हमें अपनी सहानुभूति का क्षेत्र इतना बढाना पडेगा कि कोई उसकी सीमा के बाहर न रह जाय।

यदि हमको पृथ्वी पर शांति की स्थापना करनी हो तो हमे ईश्वरोपासना और महदाकाक्षा की उस स्थिति को प्राप्त करना होगा जब अपने मानव-बन्धुओं के सम्बन्ध में हमारे अन्दर ईश्वरीय विचारों का विकास होता है।

हमे पुराने ढंग के उपायों से अब संतोष नहीं होसकता। प्राचीन काल में मनुष्य पागलों से डरते थे, दूर भागते थे। वे नहीं जानते थे कि उनको पागलों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। वे उन्हे पहाड़ की चोटी पर लेजाते और वहीं वेड़ियों एव साँकलों से उन्हें जकड़कर छोड़ देते थे। उनके खानेभर को नित्य उसी स्थान पर रखवा दिया जाता था, जिससे वे बस्ती में जाकर लोगों को तंग न करें।

° ° ° °

एक दिन की बात है कि कुछ मित्रों का दल सैर-सपाटे के लिए गाँवों की ओर गया। संयोगवश वे एक ऐसे स्थान के पास होकर निकले जहाँसे थोड़ी दूर पर एक पागल का निवास था। जाते-जाते एकाएक उनको दूर से आती हुई उस पागल की अमानुषिक डरावनी चीख सुनाई पड़ी। साँकलों मे बँधा हुआ वह पागल खीझ-खीझकर ज्यों-ज्यों उछलता, साँकलो की रगड़ से खनखनाहट होती थी। भय के मारे वे रुक गये, पर उनमें एक ऐसा था जो निर्भय और निश्चित आगे बढ़ता गया। उसके हृदय में पागल के लिए सहानुभूति का भाव था। 'बेचारे को कैसे सूनेपन का अनुभव होता होगा, वह खीझ-खीझकर कैसा निराश होगया होगा और सदा अपने दर्शकों के चेहरों पर भय के चिन्ह देखकर उसका हृदय भी भय से त्रस्त होगा'—यही सब सोचता-विचारता वह उसके पास जा पहुँचा। पागल ने जब देखा कि एक आदमी निर्द्वंद्व उसकी ओर चला आरहा है जिसके चेहरे पर भय का कोई चिन्ह नहीं है और आँखो मे साहनुभूति झलक रही है, तो उसने अपनी रक्षा के लिए हाथो मे पत्थर के जो टुकड़े ले रक्खे थे वे फेंक दिये और बड़े ध्यान से इस अद्भुत आगंतुक की ओर देखने लगा। अभीतक उसने अपनी तरफ आनेवाले किसी आदमी के चेहरे पर ऐसा भाव नहीं देखा था। वहाँ न भय था, न दया की रेखा थी; केवल आँखो में विश्वास एवं बंधुता की झलक थी। *

---

* अपने नाटक 'मेरी मैगडालेन' मे ऐसे चरित्र के बारे में प्रसिद्ध नाटककार मूरिस मेटरलिंक ने लिखा है:—

"He with his steadfast face and eyes that lit up all He looked upon end lips that spoke unceasingly of happiness ..

कुछ समय बाद जब और साथियों ने देखा कि पागल की डरावनी चीख बन्द होगई है तब वे सुस्थ हुए और इस बात पर शर्मिन्दा भी हुए कि हमने अपने नेता को अकेले छोड़ दिया। इसलिए वे भी साहस कर आगे बढ़े और नजदीक पहुँचने पर उन्होंने पागल के समीप ईसा-रूपी अपने नेता को बैठे हुए देखा। पागल ने वस्त्र पहन लिये थे और शान्त होकर बैठा था।

हम जन-साधारण को ऐसे ही नेता की जरूरत है। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम प्रभु की सरलता के कवच को न भूले।

परिशिष्ट-भाग

: १ :

विश्वास और श्रद्धा से क्या नहीं होसकता ?

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भागमें, अर्जेण्टाइन तथा चाइल नामक पड़ोसी देशों मे परस्पर बड़ा मनोमालिन्य था। फलतः दोनों के बीच के झगड़े यहाँतक बढ़े कि सब लोगों को निश्चय होगया कि युद्ध अवश्यम्भवी हैं। यद्यपि दोनो देशों ने १८९६-९८ मे महारानी विक्टोरिया से इन झगड़ों में पञ्च बनकर निर्णय कर देने की प्रार्थना की थी, किन्तु दोनो जोरों के साथ युद्ध की तैयारी भी करते जा रहे थे। १९०० मे तो ऐसा मालूम हुआ कि अब युद्ध रुक नहीं सकता। हरेक आदमी यही समझता था कि ३-४ महीनों के अन्दर—ईस्टर तक—लड़ाई अवश्य शुरू होजायगी।

परन्तु इन दोनों देशों मे ऐसे भी स्त्री-पुरुष थे जिनको वह ईसा का मज़ाक करने-जैसा मालूम पड़ता था कि एक ओर तो 'गुडफ्राइडे' * मनाने की तैयारियाँ हो और दूसरी ओर, साथ-ही-साथ, अपने पड़ोसी देश के भाइयों के कत्लेआम की तैयारियाँ की जायँ।

इसलिए अर्जेण्टाइन के बिशप श्री बेनावेण्टी (Monsignor Benavente) तथा चाइल के बिशप श्री जारा ने आगे कदम बढ़ाया

---

* गुडफ्राइडे = ईसा के क्रास पर चढ़ाये जाने की स्मृति में इस दिन ईसाई उपवास रखते हैं। यह त्योहार शुक्रवार के दिन प्रायः अप्रैल महीने मे आता है।

और अपने कार्य, वाणी तथा प्रार्थना-द्वारा अपने नागरिक बन्धुओं को यह बताया कि युद्ध कैसी भयकर वस्तु है। उन्होंने अपील की कि लोग शान्ति के साथ, ठडे दिमाग़ से, इस प्रश्न पर विचार करें। क्या युद्ध अनिवार्य है? इस ईश्वर-निर्मित ससार मे एक बिलकुल बुरी चीज कैसे अनिवार्य होसकती है? और युद्ध होता कब है? तभी तो जबकि दो देशों के लोग उसकी इच्छा करते हैं या समझते हैं कि इसमें भाग लेना हमारा कर्तव्य है? बिना देशवासियों की सहायता और सहयोग के तो कोई युद्ध हो नहीं सकता। इसलिए क्या अच्छा हो कि दोनो देशों के निवासी ठडे दिमाग से इस प्रश्न पर विचार करे और इस निश्चय पर पहुँचें कि हम लड़ाई न लड़ेगे। यदि हमने यह निश्चय करलिया तो शस्त्र निर्माण करनेवाले कारखाने भी हमारे विश्वास एवं विवेक की इस सगठित दृढता के सामने बेबस और अशक्त सिद्ध होगे।

यह बात लोगो के दिलो मे बैठ गई। ईस्टर* नजदीक आरहा था। क्या उसे खून से अपवित्र किया जायगा? लोगों के दिलों में इस विचार से बेचैनी पैदा होगई। फलतः दोनो देशो के अधिकारियों एवं राजनीतिज्ञो ने एकबार फिर सच्चे मन से, मिल-जुलकर, समझौते-द्वारा झगड़ा निपटा लेने की कोशिश की और इस बार वे सफल हुए। दोनों ने निश्चय कर लिया कि हम पच मुकर्रर करले और वह जो फैसला करे उसे मानलें। सम्राट् एडवर्ड सप्तम को पच बनाया गया। उन्होंने १९

* ईस्टर = कहते हैं कि फाँसी पर चढ़ाने के तीसरे दिन ईसा ने फिर शरीर धारण किया था। उस दिन, रविवार को, ईसाई बडी खुशियाँ मनाते हैं। यह उनका प्राचीन त्योहार है।

अगस्त १६०२ को अपना फैसला दिया, जिसपर सबके दस्तखत हुए और उसके फलस्वरूप दोनों देशों में एक 'सामान्य पचायती सधि' (General Treaty of Arbitration) होगई।

एक या दो वर्ष बाद इस सधि की खुशी में पुएटडेल-इका नामक सीमान्त पहाड़ी स्थान पर बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। इस स्थान के पास ही दोनों देशों की सीमाये मिलती हैं। एक रात पहले से ही आस-पास की टेकरियों पर या उपत्यकाओं मे लोगों ने डेरे डाल दिये थे। दोनों देशों की जल एवं स्थल सेनाओं के निहत्थे सैनिकों ने मिलकर प्रभु ईसा की एक बड़ी मूर्ति खींचकर पहाड़ की एक चोटी पर पहुँचाई। यह मूर्ति किसी पुराने तोप के गोले को गलाकर ढाली गई थी। आज यह १३,००० फुट ऊँचे उस तुषाराच्छादित स्थान से सतत उत्तर की ओर देख रही है जहाँ दोनों देशो की सीमाये मिलती हैं। इसके पादमूल में निम्नलिखित महत्वपूर्ण वाक्य खुदा हुआ है:--

"यही हमारी शान्ति है जिसने दो को एक करदिया।" *

दूसरी तरफ़ लिखा है:—

"ये पर्वत चाहे टूटकर धूल में मिल जायें, परन्तु मुक्तिदाता ईसा के चरणों के समीप संधि न तोड़ने की जो प्रतिज्ञा अर्जेंण्टाइन एव चाइल के लोगों ने की है वह अमर रहेगी।" $

---

* "He is our Peace who hath made loth one"

$ "Sooner shall these mountains crumble into dust than the people of Argentine and Chile break the peace which they have sworn to maintain at the feet of Christ—the Redeemer."

:२:

डाइनामाइट में अर्थ-शोषण

[लेखक—श्री ए० फेनर ब्रॉकवे]

महायुद्ध होने के समय तक ससार के सब बडे-बडे शस्त्र-निर्माता एव विक्रेता अपने अन्तर्राष्ट्रीय गुट बना-बनाकर सम्मिलित व्यापार करते थे और ये गुट बिना किसी भेदभाव के शत्रु-मित्र सभीको शस्त्र बेचते थे। ऐसे ही एक गुट का नाम 'हार्वी यूनाइटेड स्टील कम्पनी' था जिसमें इग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रास, इटली, रूस, जापान तथा अन्य कई देशों के शस्त्र-निर्माता एव व्यापारी सम्मिलित थे। अमेरिका की स्टील कम्पनी भी इसमें हिस्सेदार थी।

इसी प्रकार का एक दूसरा जबर्दस्त अन्तर्राष्ट्रीय गुट और था। यह 'नोबेल डाइनामाइट कम्पनी' के नाम से व्यापार करता था। इसमें छः अग्रेज और चार जर्मन कम्पनियाँ शामिल थीं। महायुद्ध शुरू होने के दस महीने बाद, मई १६१५ तक भी, जर्मन-ब्रिटिश शस्त्र-व्यापारियों का यह पारस्परिक सम्बन्ध बना रहा। युद्धकाल में शत्रु की सम्पत्ति को जब्त कर लिया जाता था, पर उपर्युक्त कम्पनी के सम्बन्ध में उलटे ब्रिटिश और जर्मन सरकारों ने गुट (ट्रस्ट) के एजेन्टों को पासपोर्ट

---

*'क्रिश्चियन सेंचुरी' से

दे रक्खा था कि वे एक-दूसरे से मिलकर शेयरों के विनिमय के बारे में प्रबन्ध कर सकें। मई १९१५ में दोनों देशो के समाचारपत्रों में ऐसे विज्ञापन छपे जिनमें कहा गया था—"दोनो देशो की सरकारो की सहमति से यह निश्चय किया गया है कि गुट—ट्रस्ट—के ब्रिटिश विभाग के शेयरों का जर्मन विभाग के शेयरों में और जर्मन विभाग के शेयरों का ब्रिटिश विभाग के शेयरो—हिस्सों—में तबादला कराया जा सकता है।" इधर यह होरहा था, उधर इसी गुट—ट्रस्ट—द्वारा बनाये गये विस्फोटक द्रव्यों तथा अन्य युद्ध-सामग्रियों के द्वारा ब्रिटिश और जर्मन सैनिक, समान रूप से, टुकड़े-टुकड़े किये जा रहे थे।

इस बात के उदाहरण से पृष्ठ-के-पृष्ठ भरे जा सकते हैं कि किस प्रकार शस्त्र-व्यापारियों ने अपनी पैशाचिक अर्थ-शोषण की प्रवृत्ति के कारण, महायुद्ध के पहले और महायुद्ध के समय में, शत्रु-देशों को भी युद्ध-सामग्री बेची। परन्तु मैं थोड़े में ही यहाँ उनका जिक्र करूँगा। पहले मैं जर्मन पक्ष को लेता हूँ।

क्रुप द्वारा जर्मनों का क़त्ल

महायुद्ध में हाथ से फेंके जानेवाले बमों-द्वारा हजारों जर्मन मारे गये। इन बमो में क्रुप के फ्यूज लगे होते थे। (महायुद्ध के बाद क्रुप ने २५ सेण्ट प्रति फ्यूज़ के हिसाब से जर्मन सैनिकों के मारने के काम में आये हुए २०,००,००० फ्यूज के दाम पाने के लिए अदालती कार्रवाई की थी।) कितने ही जर्मन सैनिक जर्मन कारखानों द्वारा बने हुए

*फौलाद का एक बहुत बड़ा जर्मन कारखाना जो जहाज़, अस्त्र-शस्त्र, चाकू इत्यादि बनाता है।

काँटेदार तारों मे फँसकर किरचों से मारे गये थे। अंग्रेजी रणपोत की तोपों में जर्मन लक्ष्यदर्शक सुई (Gun-sights) का उपयोग किया जाता था और उनके सहारे कितने ही जर्मन जहाज नाविकों सहित डुबा दिये गये। महायुद्ध के जमाने में जर्मनी से आनेवाले लोहो और फौलाद से बनी हुई फरासीसी, इटेलियन एव रूसी तोपो और गोलों ने जर्मन सैनिक दलों के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिये। मित्रराष्ट्रों की पैदल सेना जर्मन निर्मित ढालों को पहनकर युद्ध-क्षेत्र मे गई थी। रूसी नौ-सेना का तो निर्माण ही जर्मन पूजी से हुआ था। अमेरिकन अस्त्र-शस्त्र बनानेवाले कारखानों में भी बड़ी जबर्दस्त जर्मन पूजी लगी हुई थी।

यह तो हुई जर्मनी की बात। इसी प्रकार मित्रराष्ट्रों की ओर के भी कुछ उदाहरण लीजिए:—

एक ब्रिटिश कारखाने मे बनी हुई पनडुब्बियों (Submarines) तथा विध्वंसकों (Tarpedoes) द्वारा न जाने कितने अंग्रेज तथा अमेरिकन अगाध जल-राशि के अन्दर चले गये। एक अंग्रेजी फर्म द्वारा निर्मित किलों एवं तोपों-द्वारा दर्रा दानियाल (Dardanelles) में कितने ही अग्रेज और आस्ट्रेलियन सैनिक मारे गये। बलगेरिया के खिलाफ युद्ध करते हुए बाल्कन में फ्रास के मित्रराष्ट्रों की कितनी ही सैनिक टुकड़ियों का सफाया होगया और यह सब हुआ उन तोपों व गोला-बारूद की सहायता से जो एक फरासीसी फर्म द्वारा बलगेरिया को भेजी गई थी। युद्ध काल में ही फ्रांस और फ्लैंडर्स मे जब अंग्रेज और अमेरिकन सेनाये विध्वंस की जा रही थीं तब शत्रुओं के शस्त्र-निर्माण के लिए एक ब्रिटिश अमेरिकन फर्म, भारी पैमाने पर, निकल

(Nickal) पहुँचा रही थी। मज़ा तो यह है कि महायुद्ध-सम्बन्धी इन सेवाओं के लिए इस फर्म के अंग्रेज अध्यक्ष को बाद में 'सर' की उपाधि प्रदान की गई।

अपने-अपने देश में

युद्ध के पीछे काम करनेवाली इन स्वार्थी शक्तियो को शत्रु-देशों को हथियार भेजने से ही संतोष नही होगया, वरन् अपने देश में भी मौका पाकर उन्होंने भाव खूब ऊँचा कर दिया। उन्होंने राष्ट्र के साथ बड़ा ही निर्दय और लज्जाजनक वर्ताव किया। शस्त्र-सामग्री विभाग के मन्त्री डा० एडीसन ने ऐसे उदाहरण दिये हैं जब दाम इतने बढ़ाकर लिये गये कि १०० प्रतिशत से भी अधिक लाभ उठाया जासके। परन्तु बाद में ब्रिटिश सरकार के ज़ोर डालने पर इन्होंने दाम कम किये। श्री लायड जार्ज ने, जो युद्ध-काल में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे, बताया कि सरकार के इस कार्य से राष्ट्र के लगभग ६,३०,००,००,००० रुपये बच गये।

अमेरिकन कारखानेदारों ने अपने देश में कुछ कम फ़ायदा नही उठाया। उनका उदाहरण भी इतना ही बुरा है। १९२१ मे अमेरिका की शासन-सभा (सिनेट) ने युद्ध-व्यय के सम्बन्ध मे जाँच करने के लिए एक कमेटी बैठाई थी। उसने उदाहरण देकर बताया है कि तॉबे (Copper) के सौदागरों ने ६०,१५० और ३०० प्रतिशत से भी अधिक फायदा उठाया। 'यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन' ने ५० प्रतिशत तक लाभ उठाया। प्रसिद्ध 'बेथलहम शिपबिल्डिंग कार्पोरेशन' ने २१ प्रतिशत लाभ उठाया। हज़ारों सैनिको ने देश के लिए प्राण दे-देकर इन स्वार्थी व्यापारियों को मालामाल कर दिया।

अभी कुछ ही दिन पहले की बात है कि सयुक्तराष्ट्र अमेरिका की व्यवस्थापक सभा (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स) की वैदेशिक समिति के सामने यह प्रस्ताव विचारार्थ पेश किया गया था कि शस्त्र-निर्यात सीमित और नियमित कर दिया जाना चाहिए। इस कमेटी के सामने जिन गवाहों के बयान हुए उनमे रेमिंगटन आर्म्स कम्पनी के श्री मोनाहन भी थे। इन हजरत ने कहा कि आकस्मिक राष्ट्रीय आपत्काल के लिए कारीगरों को अभ्यस्त रखने के वास्ते शस्त्र-निर्यात आवश्यक है। आगे जो बातचीत हुई वह नीचे दी जाती है.--

श्री हुल--आपका कहना है कि इस वैदेशिक व्यापार के ऊपर उनकी शिक्षा (ट्रेनिंग) चल रही है ?

श्री मोनाहन—जी, हाँ

श्री हुल—इन कारीगरो को शस्त्र-निर्माण का अभ्यास बना रहे, वे इसे भूल न जायँ, इसके लिए ससार के किसी-न-किसी भाग मे कुछ उपद्रव बनाये रखना आपके लिए आवश्यक है ?

श्री मोनाहन--जी, हाँ।

दूसरे शब्दो में इस बात को यो रक्खा जा सकता है कि शस्त्र-व्यापारियों की सफलता ससार के किसी-न किसी भाग मे युद्ध के स्थायी रूप से चलते रहने पर निर्भर है। सफलता की इस शर्त्त के कारण ही वे युद्ध तथा सैनिक तैयारियों को उत्तेजन देने तथा निःशस्त्रीकरण और शान्ति के प्रयत्नों को अनुत्साहित करने में नहीं हिचकिचाते।

शांति के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय षड़यंत्र

मैं इसके अनेक उदाहरण दे सकता हूँ कि शस्त्र-कम्पनियों ने समाचारपत्रों द्वारा दूसरे देशों के शस्त्र-संग्रह एवं सैनिक तैयारियां के सम्बन्ध में किस प्रकार झूठी एव मनगढ़ंत कहानियो का प्रचार किया, ताकि उनके देशो की सरकारे भी सैनिक तैयारियों की झूटी होड़ में शामिल होजायँ: किस प्रकार इन कम्पनियों के गुप्त प्रतिनिधियो ने झूठे और अतिशयोक्तिपूर्ण ऑकडे दे-देकर मन्त्रिमंडलो को भयग्रस्त कर दिया है और उनकी उत्तेजना का लाभ उठाया है; किस प्रकार चीन के विभिन्न सैनिक दलपतियों, मैक्सिकों के क्रातिकारियो एवं फासिस्ट सेनाओ को शस्त्र पहुँचा-पहुँचाकर इन्होंने गृह-कलह को वढ़ाया है (मज़ा यह कि शस्त्रो का मूल्य गरीब किसानो की लूट से चुकाया जाता था)। शस्त्र-कारवार की प्रसिद्ध फरासीसी कम्पनी स्कोडा ने ही हिटलर को अस्त्र-शस्त्र पहुँचाये। मैं इसके भी उदाहरण दे सकता हूँ कि किस प्रकार शस्त्रादि तथा सैनिक जहाजों के लिए आर्डर प्राप्त करने के उद्देश्य से इन कम्पनियो ने युद्ध-विभागो तथा नौसेना के अफसरो को घूस दे-देकर मुट्ठी में किया है। हम इस विषय का जितना ही गहरा अध्ययन करते हैं यह बात उतनी ही स्पष्ट होती जाती है कि शस्त्रास्त्र-उद्योग विश्व-शांति के विरुद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र है।

अमेरिकावासी श्री शीरर के मुकदमे को न भूले होंगे। यह हज़रत अमेरिका की प्रसिद्ध शस्त्रनिर्माता फर्मो (वेथलहम शिपबिल्डिंग कार्पोरेशन, न्यूपोर्ट-न्यूज़ शिपविल्डिग ड्राई डाक कम्पनी तथा अमेरिकन ब्राउन वोवेरी कार्पोरेशन) द्वारा जेनेवा के निःशस्त्रीकरण-सम्मेलन मे

उसे असफल करने के उद्देश्य से भेजे गये थे। इस कार्य के लिए इन कम्पनियों ने इन्हे ५१,२३० डालर भेट किया, परन्तु इन्होंने इस बिना पर २,००,००० डालर और मॉगे कि उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप इन कम्पनियों को सैनिक जहाजों के निर्माण के लिए कई अच्छे आर्डर भी प्राप्त हुए जो सम्मेलन के सफल होने की अवस्था मे कभी न प्राप्त होते। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ओर तो अमेरिकन राष्ट्रपति नौसेना-सम्बन्धी निःशस्त्रीकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाते हैं और दूसरी ओर अमेरिकन शस्त्र-कम्पनियाॅ निःशस्त्रीकरण को असफल बनाने के लिए प्रतिनिधि भेजती हैं।

जिनको युद्ध से लाभ होता है ऐसे स्वार्थी व्यापारियों द्वारा विश्व-शाति के विरुद्ध जो यह भयकर अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र चल रहा है उसके सामने हम क्या कर सकते हैं? पहला पग तो इस दिशा मे यह होसकता है कि हम शस्त्र-उद्योग के राष्ट्रीयकरण और अन्तर्राष्ट्रीयकरण पर जोर दे। व्यक्तिगत शस्त्र-उद्योग को बन्द कर दिया जाय। परन्तु यह इस गम्भीर समस्या के एक अत्यन्त लघु अश का हल है। जब हम युद्ध के आर्थिक पहलू पर विचार करना आरम्भ करते हैं तब हम देखते हैं कि इस समस्या के साथ इसकी अनेक शाखा-प्रशाखाये लगी हुई हैं और तब हमे यह पता चलता है कि इस कार्य मे न केवल शस्त्र-कम्पनियाॅ मिली हुई हैं वरन् बैक (जो शस्त्रों के आर्डर के लिए कर्ज देते हैं), धातु एव तैल-उद्योग के बडे-बडे व्यापारी (जो शस्त्र-निर्माण के लिए कच्चा माल पहुॅचाते हैं) तथा पूॅजी लगानेवाले लोग, उद्योग-सघ एव विशेष सुविधाप्राप्त वर्ग (जिनकी हित-रक्षा के लिए सेनाये

'मार्च करती और सैनिक पोत आगे बढ़ते हैं) भी इसमें बड़ी दूर तक सम्बन्धित हैं। इन सब बातों को देखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि युद्ध-समस्या और अधिक गहरी समाज की आर्थिक निर्माण-विधि की समस्या का केवल एक अंश-मात्र है। इसलिए यदि हम ईज़राई जैंग विल के साथ यह प्रश्न करें कि—

> ऐसी दशा में हमारे लिए इस बात की आशा कहाँ है कि यह मृत्यु-व्यापार बन्द हो जायगा ?

तो हमें उसके ही शब्दों में इसका यह उत्तर देना पड़ेगा—

> जबतक वर्तमान समाज-विधि है, तबतक इसकी कोई आशा नहीं। व्यापार में लगा मनुष्य युद्ध का देवता है। सोना ही सब शस्त्रों का सञ्चालक है। *

---

* There is none while this Social order lives.
The man of business is the God of war.
And gold pulls all the strings and all the triggers.

: ३ :

युद्ध-काल में असत्य

[कैप्टन एफ० डबल्यू० विल्सन ने यह कथा १६२२ मे अमेरिका मे कही थी और वह 'न्यूयार्क-टाइम्स' में निकली, जहाँसे २४ फरवरी १६२२ के 'क्रुसेडर' में छपी।]

लन्दन के प्रसिद्ध दैनिक 'डेलीमेल' के सवाददाता कैप्टन विल्सन युद्ध छिडने के समय ब्रसेल्स मे थे। उनको पत्र के स्वामियों का तार मिला कि अत्याचार की कथाये भेजो। पर उस समय कोई अत्याचार नहीं होरहा था जिसकी कहानियॉ भेजी जा सकें, अतः सवाददाता ने असमर्थता प्रकट करदी। तब वहाँसे तार आया कि भगोड़ों एव शरणार्थियों (refugees) की कहानियाँ भेजो। सवाददाता ने मन में कहा--"अच्छा है, मुझे कहीं जाना न पडेगा।" ब्रसेल्स के बाहर एक छोटा कस्बा था, जहाँ अच्छा खाना मिलता था। सवाददाता ने सुना कि वहाँ कुछ जर्मन आये थे। उसने कल्पना की कि वहाँ बच्चे भी रहे होंगे। बस, उसने घर मे आग लगा दिये जाने एव बडी कठिनाई से बच्चे के बचाने की एक अत्यन्त करुण पर पूर्णतः कल्पित कथा लिख डाली।

'फाल्सहुड इन वार टाइम' (ले०—आर्थर पासनबी, प्र—जॉर्ज-एलेन एण्ड अनविन) से।

वह लिखता है—'दूसरे दिन तार आया कि बच्चे को भेज दो। लगभग पॉच हजार पत्र आये हैं जिनमें उसे गोद लेने की उत्सुकता प्रकट की गई है। उसके दूसरे दिन आफिस में बच्चे के कपड़े आने लगे। रानी अलेकज़ेण्ड्रा तक ने सहानुभूति का पत्र और कुछ कपड़े भेजे। वहॉ तो कोई बच्चा भी न था। पर मै ऐसा तार तो दे नही सकता था। इसलिए शरणार्थियों की देखभाल करनेवाले डाक्टर से मिलकर मैंने यह गढ़ा कि बच्चा किसी गहरे सक्रामक रोग से मर गया।

बच्चे के लिए आये हुए कपड़ों से लेडी नार्थक्लिफ़ ने एक शिशु-विश्रामगृह की स्थापना की।

° ° ° °

युद्ध के पूर्व, १३ जुलाई १९१४ ई० को, बर्लिन मे शाही महल के सामने एकत्र हुई एक भीड का फोटो लिया गया था। यह फोटो एक फरासीसी पत्र (Le Monde Illustre) के २१ अगस्त १९१५ के अक मेें निम्नलिखित शीर्षक के साथ छपा:—

,Enthousiasme et Joie de Barbares'

[जगली जर्मनों का उत्साह और आह्लाद]

इसके नीचे एक नोट था कि लुसिटानिया' (जहाज) के डूबने पर यह आनन्द-प्रदर्शन किया गया है।

° ° ° °

'बर्लिन टैग' नामक जर्मन पत्र के १३ अगस्त १९१४ के अंक मे एक फोटो प्रकाशित हुआ। इसमें हाथ में भोजपात्र लिये हुए लोगों की लम्बी पक्तियॉ थीं और इसके नीचे लिखा हुआ था:—

"हमारे रूसी और फरासीसी नजरबंदों को एक लाइन मे खडा करके भोजन वितरण किया जा रहा है।"

यही फोटो २ अप्रैल ११११५ के 'डेली न्यूज' मे प्रकाशित हुआ। उसपर शीर्षक था:—

जर्मन मजूरों में असंतोष

और फोटो के नीचे लिखा था—"इस प्रकार के दृश्य जर्मनी मे आज सामान्य होरहे हैं। इससे हमारी समुद्री शान्ति का पता चलता है।" मतलब यह था कि समुद्री सेना के घेरा डाल लेने से जर्मनी में भोजन दुष्प्राप्य होगया है।

० ० ० ०

जर्मनी में कहीं एक फोटो छपा था जिसमें जर्मन अफसर विस्फोटक द्रव्यों के बडे बडे बक्सो का निरीक्षण कर रहे थे। यह फोटो ३० जनवरी १६१५ के अंग्रेजी पत्र 'वार अलेस्ट्रेटेड' में प्रकाशित हुआ। उसपर शीर्षक था—"एक फरासीसी हवेली के खजाने को जर्मन अफसर लूट रहे हैं।"

० ० ० ०

एक फोटो था जिसमें एक जर्मन सैनिक एक घायल एव मरणासन्न जर्मन सैनिक बन्धु के ऊपर झुका हुआ उसे देख रहा है। यही फोटो १७ अप्रैल १६१६ के 'वार अलेस्ट्रेटेड' मे निम्नलिखित शीर्षक के साथ प्रकाशित हुआ—

"युद्ध के नियमो के जर्मनों द्वारा दुरुपयोग का प्रत्यक्ष उदाहरण।"

"जर्मन जगली एक रूसी को लूटने के समय पकड़ा गया।"

० ० ० ०

६ जून १६१४ के 'बर्लिन लोकलज़ीगर' में एक फोटो छपा था। इसमें तीन अश्वारोही अफसर किसी प्रतियोगिता मे विजयी होने पर प्राप्त कप एव ट्राफ़ी के साथ खडे हैं।

यह फोटो पहले 'वेसमीर' नामक एक रूसी पत्र में उद्धृत हुआ। उसपर शीर्षक यह था—"वारसा में जर्मन लुटेरे।" यही फोटो ८ अगस्त १६१५ के 'डेली मिरर' मे इस शीर्षक के साथ उद्धृत किया गया—

'तीन जर्मन अश्वारोही सैनिक लूटे हुए चॉदी-सोने के साथ।'

जो देश युद्ध से उदासीन थे उनमे जाली फोटो बहुत बड़ी सख्या मे भेजे जाते थे।

० ० ० ०

एक जर्मन नगर (Schwirwindt) पर रूसियो ने क़ब्जा कर लिया था। जर्मनी वालो ने इसका एक फोटो छापा। यही फोटो डेनमार्क के एक पत्र (Illustraret Familienlad) मे इस शीर्षक से प्रकाशित हुआ—"जर्मन बम-वर्षा के बाद एक फरासीसी नगर का दृश्य।"

एक जर्मन पत्र (Das Leben in Bild) मे १६१७ मे तीन हॅसते हुए युवक जर्मन सैनिकों का एक फोटो निकला। शीर्षक था:—

"पुनः स्वदेश मे। तीन साहसी युवक जर्मन जो फरासीसी कैद से निकल भागने मे सफल हुए।"

यही फोटो डेनमार्क के एक पत्र मे २ मई १६१७ को प्रकाशित हुआ, जिसके नीचे लिखा था:—

"युद्ध की अग्निवर्षा से भागे हुए तीन जर्मन सैनिक फ्रास के कैदी होजाने पर कैसे आनंद-मग्न हैं!"

० ० ० ०

पीछे हटते हुए रूसियो ने 'ब्रेस्ट लिटोवस्क' (Brest-Litovsk) के किले पर अग्नि-वर्षा की। ५ सितम्बर १६१५ के 'जीत विल्डर' मे एक फोटो निकला, जिसमें वोरों मे नाज भरकर जर्मन सैनिक लेजाते दिखाये गये थे।

यह फोटो १८ सितम्बर १६१५ के अग्रेजी पत्र 'ग्रैफिक' में उद्धृत हुआ। लिखा था—"जर्मन सैनिक ब्रेस्ट-लिटोवस्क की एक फैक्टरी को, जिसपर पीछे हटते हुए रूसियों ने अग्निवर्षा की थी, लूट रहे हैं।"

० ० ० ०

एक रूसी फिल्म में यह दिखाया गया कि जर्मन नर्से धार्मिक साधुनियों (सिस्टर्स)के वेश मे घायलों की सेवा के बहाने जाती हैं और उन घायलों को छुरा भोंक देती हैं।

० ० ० ०

एक फरासीसी तस्वीर (फोटो नही) का उन दिनों बड़ा प्रचार हो-रहा था। उसका नाम था 'Chemin de la gloire (यश का मार्ग) और वह Choses vues (दृष्ट पदार्थ) माला मे प्रकाशित हुई थी।

इसकी पार्श्वभूमि मे एक गिरजा आग में धू-धू करके जल रहा है.और लम्बी सडक टूटी फूटी वोतलों से भर रही है। सामने एक छोटे लड़के का शव पड़ा हुआ है जिसमें किरचों की मार पड़ी है।

० ० ० ०

फ्रास के भूतपूर्व अर्थसचिव क्लाट (Klotz) ने, जिनको युद्ध के आरम्भकाल मे अखबारों के सेसर का काम सौपा गया था, अपने

सस्मरणों(De la Guerre a la Paix, Paris Payot, 1924)में लिखा है:-

'एक दिन शाम को मुझे 'फिगारो' पत्र का प्रूफ दिखाया गया, जिसमे दो प्रसिद्ध वैज्ञानिको के हस्ताक्षर से यह बात प्रकाशित की गई थी कि उन्होने अपनी आँखो से देखा है कि लगभग १०० लड़को के हाथ जर्मनों द्वारा काट लिये गये हैं।

इन वैज्ञानिकों की गवाही होते हुए भी मुझे इस वक्तव्य की सचाई में सदेह हुआ और मैने उसका प्रकाशन रोक दिया। जब 'फिगारो' के संपादक ने इसपर आपत्ति की तो मैने कहा कि मैं अमेरिकन राजदूत के समक्ष इस गंभीर आरोप की, जिससे दुनिया मे तहलका मच जायगा, जाँच करने को तैयार हूँ। मैने कहा कि दोनों वैज्ञानिको को उस स्थान का नाम बताना चाहिए जहाँ जाँच की जाय। मैंने विस्तृत विवरण तुरन्त माँगा। पर आज तक मुझे इन वैज्ञानिकों का न कोई उत्तर प्राप्त हुआ और न वे स्वयं मेरे पास आये।"

पर यह झूठ उस समय जनता के दिमाग़ पर इतना असर कर गया था कि आज भी उसके डंक की लहर देखने मे आती है। अभी कुछ ही दिन हुए लिवरपूल के एक कवि ने 'ए मेडली ऑफ सान, नामक एक कविता-पुस्तक छपवाई है, जिसमें देश-प्रेम के नाम पर लिखी एक कविता की चन्द लाइनें ये हैं:—

They stemmed the first mad on rush
Of the cultured German Hun.
Who'd outraged every fema e Belgian
And maimed every mother, son !

[उन्होंने सभ्य जर्मन हूण के प्रथम पागल से आक्रमण को रोका - उस जर्मन हूण के जो प्रत्येक बेलजियन नारी की आबरू लेलेता था और प्रत्येक माता के बच्चे को हाथ काटकर लूला कर देने को तैयार था।]

:४:

सर बेसिल ज़हरोफ़*

हम पहले स्वदेश की शस्त्र-निर्माणकारी फर्म विकर्स आर्मस्ट्रांग (Vickors Armstrong) को लेते है। इस फर्म की कथा अभीतक कही नहीं गई है। युद्ध के पूर्व के इसके इतिहास एवं स्थिति तथा १९१८ से इसके विकास की साधारण परीक्षा से भी यह प्रकट होता है कि यह क्रप-जैसी ही कम्पनी है।

इस कम्पनी का इतिहास काफी पुराना है। इसका सूत्रपात तो असल में १७९० ई० में जार्ज नेलर द्वारा हुआ था। १८२६ में इसका नाम 'नेलर हचिंसन विकर्स ऐण्ड को०' पड़ा और १८६७ ई० में 'विकर्स सस ऐण्ड को०' के रूप में बदल गया और डेढ़ लाख पौंड की पूॅजी से काम चलने लगा। चार ही वर्ष में पूॅजी बढ़ाकर पॉच लाख पौंड करदी गई।

१८९२ ई० में इसने अपना कार्य और बढ़ाया। नये शेयर निकाले गये और कई अन्य कम्पनियों में हिस्से खरीदे गये। तबसे इसका 'नाम विकर्स लिमिटेड' पड़ा और जोरो से इसकी वृद्धि होने लगी। इसने ग्लासगो में सैनिक भण्डार, शेफील्ड और एरिथ में शस्त्रास्त्र

---

*'सीक्रेट इण्टरनेशनल' से।

बनाने के कारखाने और वालनी द्वीप मे जहाजी कारबार का आरम्भ किया। १८९७ में भविष्य के युद्ध को दृष्टि में रखकर इसने अपना कार-बार और बढ़ाया और बैरो की 'नेवल कस्ट्रक्शन ऐंड आर्मामेंट कम्पनी' को सवा चार लाख पौंड मे खरीद लिया।

यहाँ वेसिल जहरोफ का उल्लेख करना आवश्यक है, क्योंकि विकर्स के इतिहास मे इस व्यक्ति ने अपनी अर्थ-सम्बन्धी प्रतिभा से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। इसका जन्म १८४९ मे यूनान (ग्रीस) मे हुआ था। शस्त्र-व्यापार मे यह 'नार्डेनफेल्ड' (Norden feldr) के विक्रेता के रूप में आया। जगह-जगह घूमकर इस फर्म के आर्डर लेता था। १८७७ में इसने इस व्यवसाय में प्रवेश किया। इस समय बाल्कन में तुर्की के विरुद्ध विद्रोह की आग सुलग रही थी और तुर्की तथा रूस पूर्व मे अपनी शक्ति बढ़ाने में प्रयत्नशील थे। १८८० तथा उसके बाद के वर्षों में यूनानी सेना का जो सगठन हुआ और उसमें जो वृद्धि हुई उससे सर बेसिल जहरोफ ने खूब रुपया कमाया। इसी समय 'नार्डेनफेल्ड' के कारखाने ने एक नई एवं प्रभाव-शाली 'पनडुब्बी' (सबमेरीन) का आविष्कार किया। जहरोफ ने प्रधान शक्तियों के हाथ इसे वेचना चाहा, पर वे तबतक इस निश्चय पर नहीं पहुँची थीं कि पनडुब्बियों का प्रयोग बढाना चाहिए या नहीं, इसलिए उन्होंने खरीदने से इन्कार कर दिया। किन्तु युनान ने जहरोफ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस प्रकार यूनान ने दुनिया मे सबसे पहले पनडब्बियों का अनुभव प्राप्त किया। शीघ्र ही जहरोफ ने तुर्की को बह-काया कि यूनान के पास एक पनडुब्बी है तो तुर्की के पास दो होनी

चाहिएँ। १८८८ ई० में, ज़हरोफ़ के प्रयत्न एवं प्रभाव से 'नार्डेनफेल्ड गन्स एण्ड एम्यूनिशन कम्पनी' और 'मैक्सिम गन कम्पनी' दोनों मिलकर एक होगईं। हीरम मैक्सिम ने ही उस मशीनगन का आविष्कार किया था जिसने युद्ध-प्रणाली मे क्रांति करदी। बाद में नार्डेनफेल्ड के कम्पनी से अलग होजाने पर जहरोफ उसका सर्वेसर्वा होगया।

बोअर-युद्ध के बाद इस कम्पनी ने एक लाख साठ हजार पौंड मे 'अल्सली स्टील एण्ड मोटर कम्पनी' तथा एक लाख दस हजार पौंड मे 'आर्डनेंस असेसरीज़ कम्पनी' खरीद ली।

रूस-जापान युद्ध में यद्यपि इग्लैन्ड जापान का दोस्त था, पर उसने दोनों पक्षों को शस्त्रास्त्र पहुँचाये और जहरोफ ने रूस के सेटपीटर्स-बर्ग आयरन वर्क्स एव फ्रैंको-रशन कम्पनी की साझेदारी मे काम किया। इन फर्मों के द्वारा उसने तोपो एवं क्रूजरो के लिए आर्डर प्राप्त किया और रशन शिपबिल्डिंग कम्पनी की सहायता से काला सागर के लिए दो प्रथम श्रेणी के लड़ाकू जहाज़ों का आर्डर उसे मिल गया। विकर्स-द्वारा सचालित ग्लासगो की बर्डेमियर फर्म ने श्नीडर-क्रासेट एवं आगस्टिन नार्मण्ड के साथ मिलकर रेवल मे तोप के गोले का कारखाना और डाक यार्ड बनाने का काम किया। इससे इस फर्म का अ-राष्ट्रीय रूप स्पष्ट होजाता है। ज़हरोफ के शेयर न केवल विकर्स-मैग्जिम वरन् श्नीडर-क्रासेट तथा अन्य ब्रिटिश शस्त्र बनानेवाली कम्पनियों में भी थे। इनमे आर्मस्ट्राग ह्विटवर्थ का नाम भी शामिल है।

परन्तु केवल विकर्स को अलग लेकर विचार करना भ्रमोत्पादक होगा, क्योंकि इस समय तक वह उस महान् अन्तर्राष्ट्रीय शस्त्र-निर्माण-

कारी सघ का अङ्ग बन गया था जो हार्वी यूनाइटेड स्टील कम्पनी के नाम से प्रसिद्ध था। यह ट्रस्ट (सघ) १६०१ ई० मे बना था और १६१३ तक उसका अस्तित्व रहा। विकर्स एण्ड मैग्जिम के मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री एलबर्ट विकर्स ही इसके अध्यक्ष थे और १६०२ ई० में इसके सचालक-मण्डल (Directorate) में चार्ल्स कैमिकल कम्पनी, चार्ल्स कैमिकल लिमिटेड, विकर्स और सस एण्ड मैग्जिम लिमिटेड नामक चार अंग्रेजी फर्मों के प्रतिनिधि थे। इसके अलावा क्रप और डिलिंजन स्टील कम्पनी नामक दो प्रधान जर्मन, कार्नेगी स्टील कम्पनी नामक अमेरिकन, श्नीडर, कैटलन स्टील कम्पनी और चेमेएट स्टील कम्पनी नामक फ्रेंच तथा टर्नी स्टीलवर्क्स नामक इटैलियन फर्मों के प्रतिनिधि भी सचालक-मण्डल में थे। यद्यपि बाद के वर्षों में सचालको में परिवर्तन होता रहा और नये-नये सगठन बनते रहे, पर यूरोपीय महायुद्ध के आरम्भकाल तक तो हार्वी स्टील ट्रस्ट ही विश्व का सबसे बड़ा शस्त्र-निर्माणकारी सगठन था और इसमें ग्रेटब्रिटेन, जर्मनी, फ्रास, इटली और यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका की प्रधान शस्त्र-कम्पनियाँ शामिल थीं। हार्वी स्टील ट्रस्ट के साथ शस्त्र-निर्माण व्यवसाय के स्फोटक एव रासायनिक पदार्थों पर एकछत्र आधिपत्य रखनेवाली नोवेल डाइनामाइट ट्रस्ट और चिलवर्थ गनपाउडर कम्पनी का भी सहयोग था।

चिलवर्थ गन पाउडर कम्पनी लिमिटेड का आविर्भाव १८८५ई० में हुआ था। यह यूनाइटेड रनिश, डुएनबर्ग पाउडर मिल्स और आर्मस्ट्राग के मैनेजिंग डाइरेक्टरों का सम्मिलित प्रयत्न था। इसके अध्यक्ष आर्मस्ट्राग के ही एक डाइरेक्टर थे और महायुद्ध के आरम्भ

तक इसक । भा अन्तर्राष्ट्रीय रूप था। महायुद्ध आरम्भ होने पर जर्मनी वाले अलग होगये।

ये सब संगठन पूर्णतः अन्तर्राष्ट्रीय थे और इन्होंने प्रत्येक राष्ट्र पड़ोसी राष्ट्रों में होनेवाली तैयारी के नाम पर शस्त्र-प्रतियोगिता की भावना को खूब चढ़ाया और यों फ़ायदा उठाते रहे। इन्होंने राष्ट्रों को युद्ध सामग्री से खूब सज्जित किया और इन्हीं शस्त्रास्त्रों के द्वारा एक राष्ट्र के निवासियों ने दूसरे राष्ट्र के आदमियों को नष्ट करने का भरपूर प्रयत्न किया।

जब १९१४ ई०में युद्ध आरम्भ हुआ तो विकर्स लिमिटेड का दर्जा रीब-करीब आर्मस्ट्राग के बराबर था और व्हाइटहेड टारपीडो फैक्टरी में दोनों का साझा था। दोनों सम्मिलित रूप से अंग्रेजी शस्त्र-व्यवसाय के नेता थे। यदि पूजी (शेयर कैपिटल) की दृष्टि से विचार किया जाय तो विकर्स को क्रप से भी बड़ा कह सकते हैं। फिर इसका देश-विदेश की अनेकानेक कम्पनियो से सम्बन्ध था। इनमें जर्मनी की लीवे कम्पनी भी थी, जिसका एक प्रतिनिधि विकर्स के सचालक-मडल में भी था। स्पेन, इटली, रूस, जापान और कनाडा में इसके कारख़ाने थे।

:५:

जेनेवा का घोषणापत्र

'जेनेवा का घोषणापत्र' 'बालरक्षा कोष' (Save the Children Fund) के सस्थापक श्री एगलएटाइन जेब ने १६२६ ई० मे तैयार किया था। सितम्बर १६२४ ई० मे, राष्ट्रसघ यूनियन की पाँचवीं बैठक (असेम्बली) में, वह राष्ट्रसघ द्वारा स्वीकार किया गया और असेम्बली के अध्यक्ष के शब्दों मे 'यह राष्ट्रसंघ के शिशु-कल्याण कार्य का आदेशपत्र है।'

जेनेवा का घोषणापत्र

शिशु के अधिकार (Rignts of the child) के इस घोषणापत्र के द्वारा, जो साधारणतः जेनेवा का घोषणापत्र के नाम से प्रसिद्ध है, यह जानते हुए कि मानव-जाति का शिशु के प्रति बड़ा भारी कर्तव्य है, ससार के समस्त राष्ट्रों के स्त्री-पुरुष घोषित और स्वीकार करते हैं वि जाति, राष्ट्रीयता और धर्म की भावनाओ एव विचारों के ऊपर—

१ शिशु को उसके स्वाभाविक विकास के लिए भौतिक ए आध्यात्मिक सब प्रकार की सुविधा दी जानी चाहिए।

२ जो शिशु भूखा हो उसे भोजन अवश्य मिलना चाहिए, ज शिशु बीमार हो उसकी शुश्रूषा और चिकित्सा अवश्य होनी चाहिए, ज

शिशु अविकसित हो उसे अवश्य सहायता मिलनी चाहिए; अपराधोन्मुख शिशु को अवश्य सुधारा जाना चाहिए और अनाथ एव अरक्षित को अवश्य रक्षण एवं शरण प्राप्त होनी चाहिए।

३. आपदा एवं संकट के समय शिशु को सबसे पहले सहायता मिलनी चाहिए।

४. शिशु को इस योग्य बना देना चाहिए कि वह जीविका कमा सके और सब प्रकार के शोषण से उसकी रक्षा होनी चाहिए।

५. शिशु के अन्दर यह चेतना जाग्रत करनी चाहिए कि वह अपनी बुद्धि का उपयोग मानव-बन्धुओं की सेवा में करेगा।

:६:

हालैण्ड और बेलजियम में शान्ति-आन्दोलन

हमारे डच मित्रों ने फ्लशिंग, राटर्डम, हेडा, हार्लेम, उट्रेश्ट, अर्नहेम एव हीरलेन इत्यादि नगरों मे अनेक सभाओ की योजना की। 'डच फेडरेशन ऑफ पीस यूथ, 'नो मोर वार' एव 'कर्क एन रीड' इत्यादि सस्थाओं ने 'डच फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलियेशन' से पूर्ण सहयोग किया। तीनों जर्मन वक्ता कैथलिक थे और उन्होंने मुख्यतः प्रोटेस्टेण्ट लोगो की बड़ी-बड़ी सभाओ मे भाषण किये। इस आन्दोलन मे कैथलिक एव प्रोटेस्टेण्ट लोगों का हार्दिक सहयोग एक विशेष बात थी। अर्नहेम जैसे स्थानो की बड़ी सभाओं मे श्रमिकों एव 'युवकों' का सम्पर्क स्थापित हुआ। हार्लेम इत्यादि स्थानों की सभाये यद्यपि अपेक्षाकृत छोटी थी, पर उनमे शान्तिवादी सभी प्रकार के वर्गों का प्रतिनिधित्व था और इनके द्वारा विदेशी वक्ताओ से डच शान्ति-आन्दोलन के कार्यकर्ताओ का अच्छा परिचय हुआ। एम्सटर्डम मे सभा 'कैपर्स ट्रेनिंग स्कूल फार सोशल सर्विस' मे हुई। उट्रेश्ट में लगभग ३०० श्रमिको एव छात्रों की उपस्थिति थी। फ्लशिंग की सभा मे शामिल होने के लिए जीलैण्ड द्वीप से भी कितने ही आदमी आये थे और "हाल श्रमिकों, कृषक स्त्रियों, क्लर्कों, पादरियों तथा

अन्य पेशे करनेवाले स्त्री-पुरुषों से भरा हुआ था।" हार्लेम मे तो जर्मन, फ़्लेमिश और वालून के शान्ति-वर्गों का डच शान्ति-वर्गों के साथ अच्छा सम्पर्क स्थापित हुआ। वक्ताओं पर डच जनता की शान्ति के लिए तीव्र इच्छा और उत्साह का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

उत्तरी फ्रांस के खनिकों में

हेनिन-लीटार्ड : एक स्कूल में बड़ी सभा : मेयर की अध्यक्षता में : श्रमिक स्त्री-पुरुषों की श्रोतृमंडली : अनेक खनिक : सब प्रकार के मत रखनेवालों की उपस्थिति। प्रथम वक्ता ऑद्री त्राकमे नाम के एक फरासीसी युवक पादरी थे। उन्होने फ्रास की सरकारी नीति की निर्भीक आलोचना के साथ अपना भाषण शुरू किया। उनके भाषण में बार-बार बाधा डाली गई। अन्त में उन्होंने चुनौती दी कि विरोधी सामने आकर अपनी बात की सत्यता सिद्ध करे। बाधा देनेवाला ठडा पड़ गया और उसने शिथिल होकर कहा—"पर मैंने अखबारो मे तो ऐसा ही पढ़ा है।" इसपर लोगों ने व्यंगात्मक हास्य किया। पादरी वक्ता ने श्रोताओं की अत्यधिक सख्या को अपनी बात का विश्वास दिला दिया। श्रोताओ मे निःशस्त्रीकरण और शान्ति की प्रबल इच्छा स्पष्ट दिखाई दे रही थी। जर्मन वक्ता जोसेफ प्रोब्स्ट ने, जो एक कैथलिक गृहस्थ था, अपनी निर्भीक सरलता से श्रोताओं के हृदय को जीत लिया और उसका बड़ा स्वागत हुआ। बहुत थोड़े-से विरोधी रह गये। वेथून के एक युवक वकील ने फरासीसी राष्ट्रीयता के पक्ष मे एक जबर्दस्त भाषण किया—"हम शान्ति चाहते हैं, पर शान्ति के लिए ही हमें पूर्णतः शस्त्र-सज्जित फ्रास की आवश्यकता है।" श्रोताओं से

उसे बहुत थोड़ा समर्थन प्राप्त होता है, पर वह अपने विश्वास में सच्चा है। जर्मन वक्ता उसे राइनलैंड आकर स्वयं अपनी आँखों सब कुछ देखने का निमन्त्रण देता है और आतिथ्य का विश्वास दिलाता है।

योने के नगरों एवं गाँवों में

"अगली संध्या हमें सर्व-साधारण के और निकट पहुँचाती है। हम बिनसेलास नामक एक गाँव में सभा करते हैं। सीधे-सादे ग्रामीण उसमें पर्याप्त संख्या में आते हैं—बहुत-से तो दूर-दूर के गाँवों से भी आते हैं।

"अन्तिम गाँव, जहाँ हम गये, वेसली था। यहाँ भी सभा की योजना की गई। लोगों ने कहा कि यहाँ कभी सार्वजनिक सभा नहीं हुई और लोग शायद ही आवें, पर आठ बजते बजते हाल भर गया। सभा हुई, भाषण हुए। मेयर ने अन्त में कहा कि 'आप लोग उनके सामने बोले हैं जो पहले से ही शान्ति के प्रेमी हैं।'

"क्या इसमें अतिशयोक्ति थी? ऐसा नहीं मालूम होता। सर्व-साधारण जनता चाहती यह है कि उसे शान्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने के निश्चित साधन और मार्ग बताये जायँ। वह चाहती है कि शान्ति के विचारों को राजनैतिक कार्यक्रम के रूप में परिवर्तित किया जाय। जनता की शान्ति की इच्छा उससे कहीं अधिक दृढ़ है जितना हमें उनकी सरकारों की नीति से पता चलता है।

लियोन से जेनेवा के मार्ग पर

"एक अमेरिकन, एक स्काट, बारह तरुण अंग्रेज स्त्री–पुरुष, एक फरासीसी और एक जर्मन मिलकर लियोन से जेनेवा को रवाना हुए।

गॉवो एव नगरों से जाते हुए वे गाते और छोटी-छोटी पुस्तिकाये वितरण करते। पहली रात को उन्होंने मौंटलुएल में मुकाम किया। एक गोष्ठी हुई। दूसरे दिन हम अम्बेरियस में ठहरे। यहाँ टाउनहाल में बड़ी सभा हुई। इस प्रकार की मटरगश्ती से हम सामान्य जनता के सम्पर्क मे खूब आये। (इनमे शान्ति की प्रबल प्यास थी) पर जब हम सरकारी जेनेवा के सकुचित क्षेत्र मे पहुँचे तो हमें कुछ अजीब अनुभव हुआ। जहाँ केवल शासक ही बोल सकते हैं और शासितो को मौन रहना चाहिए।"

:७:

श्री मुलीनर का मामला

१९०९ ई० शस्त्र-व्यवसाय की एक प्रसिद्ध घटना के लिए मशहूर होगया है। व्यापार की हालत बुरी थी, बेकारी बढ़ रही थी और शस्त्र-कम्पनियों के मुनाफे की दर घटती जा रही थी।

इस समय श्री एच० एच० मुलीनर कवेन्ट्री आर्डनेन्स कम्पनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर थे। ३ जनवरी १९१० ई० के 'टाइम्स' मे उन्होंने 'महान् पराजय की डायरी' (The Diary of the Great Surrender) प्रकाशित की और निम्नलिखित वाक्य उनके कार्य के सम्बन्ध मे स्वयं प्रकाश डालते हैं.—

"१३ मई, १९०६। मि० मुलीनर ने एडमिरलटी (नौसेना विभाग) को सूचित किया कि जर्मन नौसेना में बहुत अधिक वृद्धि करने की तैयारियाँ हो रही हैं। (राष्ट्रों से यह समाचार मार्च १९०९ तक छिपा कर रक्खा गया)।

"३ मई, १९०९। मि० मुलीनर ने मंत्रि-मण्डल के सामने बयान देते हुए सिद्ध किया कि जर्मनी में शस्त्र-निर्माण के कार्य को प्रगति देने की जिस योजना के विषय में मैंने बार-बार नौसेना विभाग को सूचना दी थी, वह अब कार्यान्वित होगई है और बड़ी तेजी से तोपें तथा अन्य चीजें बनाई जा रही हैं।"

"१६०८ के हेमत में मि० मुलीनर ने एक बड़े सेनापति के कान में ये बाते भरीं। सेनापति ने हाउस ऑफ़ लार्ड्स (पार्लमेंट की सरदार-सभा) मे भविष्यवाणी की कि 'शीघ्र ही ऐसी बाते प्रकट होनेवाली हैं जो भयकरता के साथ हमारी आँखे खोल देगी।'

३ मार्च १६०८ को श्री मुलीनर मन्त्रि-मण्डल की बैठक में बुलाये गये। दस दिन बाद नौसेना विभाग के व्यय का चिट्ठा प्रकाशित हुआ, जिसमें १६०६-१० के लिए ३,५१,४२,७०० पौंड का खर्च दिखाया गया था अर्थात् खर्च मे २८,२३,२०० पौंड की वृद्धि की गई थी। इन अनुमानपत्रको और उन पर होनेवाले पार्लमेंट के विवाद से स्पष्ट मालूम पड़ता है कि गलत सूचनाये दे-देकर मन्त्रि-मण्डल को गुप्त रूप से प्रभावित करने में श्री मुलीनर सफल हुए।

इन आँकड़ो तथा जर्मनी की तैयारी के सम्बन्ध मे जो रिपोर्ट अखबारों मे तथा अन्यत्र प्रकाशित हुई वह इतनी चालाकी से तैयार की गई थी कि उसने जनता मे एक भय एवं उत्तेजना पैदा कर दी। इस रिपोर्ट का यह वाक्य खूब लोकप्रिय हुआ—"We want eight and we wont' wait" (हम आठ चाहते हैं और इसके लिए प्रतीक्षा नहीं करेंगे।)

बाद की घटनाओं ने जर्मन सरकार पर लगाये गये युद्ध की तैयारी के इलजाम को असत्य सिद्ध कर दिया। फिर भी ब्रिटिश सरकार ने २६ जुलाई को चार लड़ाकू जहाज बनाने का निश्चय प्रकट किया और सबसे पहले निर्माण का ठेका कैमेल लेयर्ड को मिला, जिसका कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी मे (जिसके मैंनेजिंग डाइरेक्टर श्री मुलीनर थे) बहुत काफी हिस्सा था।

बाद में तो श्री मुलीनर ने इस सनसनीखेज कहानी के गड़ने की जिम्मेदारी भी स्वीकार करली। इसके कारण वह कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी की मैनेजिंग डाइरेक्टरी से हटा दिये गये और उनकी जगह पर रियर एडमिरल आर० एच० एस० वेकन (जी० वी० ओ०, डी०एस० ओ०) की नियुक्ति हुई। श्री वेकन फर्स्ट सी-लार्ड के नौ-सैनिक सहायक (नेवल असिस्टेंट) थे और १६०७ से १६०६ तक डाइरेक्टर ऑफ नेवल आडनेस ऐंड टारपीडोज रह चुके थे। उन्होंने कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी के लिए सरकार से बड़े-बडे आर्डर लेने मे सफलता प्राप्त की। जान ब्राउन कम्पनी की(जिसका कवेण्ट्री आर्डनेंस कम्पनी मे पर्याप्त हिस्सा था) वार्षिक सभा में १ जुलाई १६१३ को लार्ड अवरसेनवी ने कहा था—"कवेण्ट्री बढ रहा था, पर वह हमारी पूँजी पर एक बोझ-सा हो रहा था और शायद कुछ और दिनों तक रहता, किन्तु सरकार ने राष्ट्रीय शस्त्र-निर्माण कार्य मे उसकी उपयोगिता स्वीकार करली। गत हेमत में मैं श्री विंस्टन चर्चिल के साथ स्काटसनवर्क गया। श्री चर्चिल ने मुझे वचन दिया और बाद में उसे पूरा किया कि कवेण्ट्री को सरकार अब सदा आर्डर दिया करेगी और पिछले दिनों की भाँति उसके साथ उपेक्षा का व्यवहार न होगा।"

: ८ :

युद्ध-प्रतिरोधक संघ ('वार रेसिस्टर्स इण्टरनेशनल) का घोषणा पत्र

"युद्ध मानवता के प्रति एक अपराध है। इसलिए हम दृढ़ हैं कि उसका सममर्थन न करेंगे, चाहे वह किसी प्रकार का युद्ध हो, और युद्ध के सब कारणों को दूर करने की चेष्टा करेंगे।"

सिद्धान्त-विषयक वक्तव्य

युद्ध मानवता के प्रति एक अपराध है, यह जीवन के प्रति अपराध है और राजनैतिक एवं आर्थिक स्वार्थो के लिए मनुष्य का दुरुपयोग करता है।

इसलिए हम, मनुष्य-जाति के प्रति अपने दृढ़ प्रेम के कारण, दृढ़ हैं कि उसका समर्थन न करेंगे, स्थल, जल या वायु सेना में किसी प्रकार की सेवा करके न तो प्रत्यक्ष समर्थन करेंगे और न युद्ध-सामग्री बनाने, युद्ध-ऋण में हिस्से बॅटाने अथवा दूसरो को सैनिक सेवा के लिए मुक्त करने के हेतु अपनी श्रम-शक्ति का उपयोग करने इत्यादि के रूप में अप्रत्यक्ष समर्थन करेंगे।

चाहे वह किसी प्रकारका युद्ध हो—आक्रमणात्मक अथवा रक्षणात्मक; क्योंकि हम जानते हैं कि आजकल युद्ध को सरकारे रक्षणात्मक ही कहकर छेड़ती हैं।

युद्धों को तीन भागो मे विभक्त किया जा सकता है :—

१ उस राज्य की रक्षा के लिए छेड़ा गया युद्ध जिसके हम, कहने को, अंग हैं और जिसमे हमारा घर-बार स्थित है। इसमे युद्ध मे भाग लेने से इन्कार करना कठिन है—

(क) क्योंकि राज्य सब प्रकार की जोर-जबर्दस्ती के द्वारा हमें वैसा करने को बाध्य करेगा।

(ख) क्योंकि घर या मातृभूमि के लिए हमारे प्राकृतिक प्रेम को जानबूझकर राज्य के प्रेम से अभिन्न कर दिया गया है।

२. कतिपय अधिकार-प्राप्त लोगो (Privileged few) की रक्षा के लिए वर्तमान समाज-सगठन को कायम रखने के हेतु किया जानेवाला युद्ध। यह स्पष्ट है कि हम इसके लिए कभी युद्ध न करेंगे।

३ दलित जनता (मजूर-किसान) की रक्षा या मुक्ति के लिए छेड़ा गया युद्ध। इसके लिए शस्त्र ग्रहण करने से इन्कार करना बहुत ही कठिन है--

(क) क्योंकि मजूर-किसान शासन या उससे भी अधिक क्रुद्ध जनता (Masses) क्रांति एव विद्रोह के समय उसको विश्वासघातक (Traitor) समझेगी जो नूतन व्यवस्था की शस्त्र द्वारा सहायता करने से इन्कार करेगा।

(ख) क्योंकि पीड़ित और दलित वर्गों के प्रति हममें जो प्राकृतिक प्रेम है, वह उनके लिए शस्त्र ग्रहण करने को हमें प्रलुब्ध करेगा।

जो हो, हमारा विश्वास है कि हिंसा के द्वारा वस्तुतः शान्ति की रक्षा नहीं हो सकती, न उसके द्वारा हमारे घरो का बचाव हो सकता है,

न उससे मजूरों-किसानो को मुक्ति मिल सकती है। बल्कि अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि सब युद्धों में शान्ति (Order), सुरक्षितता (Security) और स्वतंत्रता (Liberty) का लोप होजाता है एवं उनसे लाभ उठाना तो दूर रहा, किसान-मजूरो की हानि सबसे ज्यादा होती है। हमारी धारणा है कि शांतिवादियो को केवल नकारात्मक स्थिति मे रहने का कोई अधिकार नही है, उन्हे अच्छी तरह स्थिति को समझना और युद्ध के सब कारणों को दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए।

हम मानते हैं कि केवल अहकार और लोभ, जो प्रत्येक मनुष्य के हृदय मे पाये जाते हैं, ही युद्ध के कारण नही हैं, वरन् वे सब बाते भी है जो आदमियों के विभिन्न वर्गो में घृणा और विरोध पैदा करती हैं। इनमें हम निम्नाकित को वर्तमान समय में अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं:—

१. जातियो में विभेद, जो कृत्रिम ढग से बढाकर विद्वेष एव घृणा में बदल दिया जाता है।

२. विभिन्न धर्मों में विभेद, जो पारस्परिक असहिष्णुता और उपहास की वृद्धि करता है।

३. वर्गों के बीच हर्ता एवं अपहृत के बीच का विभेद, जिससे गृह-युद्ध पैदा होता है। यह तबतक रहेगा जबतक उत्पादन की वर्तमान व्यवस्था बनी है और सामाजिक आवश्यकता की जगह व्यक्तिगत मुनाफ़ा समाज का मुख्य ध्येय बना हुआ है।

४. राष्ट्रों के बीच विभेद (जिसका मुख्य कारण उत्पादन की वर्तमान व्यवस्था है), जो व्यापक युद्धों और आर्थिक अव्यवस्था की

सृष्टि करता है, जैसा आज हम देख रहे हैं। हमारी दृढ़ धारणा है कि यदि सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण को दृष्टि मे रखकर विश्व की अर्थ-व्यवस्था का निर्माण किया जाय तो ऐसे युद्धो का भय न रहेगा।

अन्त में हम कहेगे कि राज्य(State)के बारे मे जो गलत धारणा लोगों मे फैली हुई है उसमें भी युद्ध का एक मुख्य कारण निहित है। राज्य मनुष्य के लिए है, मनुष्य राज्य के लिए नही है (The State exists for man, not man for the state)। मानव व्यक्तित्व (Human personality) की पवित्रता की स्वीकृति को मानव-समाज का आधारभूत सिद्धान्त माना जाना चाहिए। इसके अलावा राज्य कोई सर्वप्रधान एव अपनेमे परिपूर्ण (Self-contained) सत्ता नहीं है, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र विशाल मानव-कुटुम्ब का एक अङ्ग है। इसलिए, हम अनुभव करते हैं कि सच्चे शान्तिवादियो को केवल नकारात्मक स्थिति ग्रहण करके रह जाने का कोई अधिकार नहीं है वरन् उन्हे वर्गों (Classes) एव जातियों के बीच के विभेदों को दूर करने और पारस्परिक सेवा-सहयोग पर आश्रित विश्वव्यापी भ्रातृत्व(बिरादरी–Brotherhood) के निर्माण में लग जाना चाहिए।

:९:

छात्रों का युद्ध-विरोधी निश्चय

१. आक्सफर्ड यूनियन सोसायटी ने ९-२-३३ को निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया:—

"यह यूनियन किसी भी परिस्थिति में अपने राजा और देश के लिए युद्ध नहीं करेगा।"

पक्ष में २७५ मत। विपक्ष में १५३।

२ श्री राण्डल्फ चर्चिल ने संशोधन पेश किया कि यह प्रस्ताव कार्य-विवरण पुस्तक (Minutes) से निकाल दिया जाय।

७५० मत विपक्ष में, केवल १३८ पक्ष में। सशोधन गिर गया।

३ मांचेस्टर विश्वविद्यालय ने आक्सफर्ड वाला उपर्युक्त प्रस्ताव (नं० १) पास किया।

३७१ मत पक्ष में, १९६ विपक्ष में।

४ ग्लासगो यूनिवर्सिटी यूनियन

निम्नलिखित प्रस्ताव पेश हुआ था—

"यह यूनियन अपने राजा एवं देश के लिए युद्ध करने को तैयार है।"

पर वह अस्वीकृत हुआ। प्रस्ताव के पक्ष में ५६८ मत आये; विपक्ष में ६३४ मत आये।

५. लदन स्कूल ऑफ इकानामिकल ऐएड पोलीटिकल साइस
८-३-३३ को आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ।
पक्ष मे २७० मत, विपक्ष मे केवल ३० मत।

६ वेडफर्ड कालेज, लन्दनः आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ।
पक्ष मे १४८, विपक्ष में ४४ मत।

७ बर्कबेक कालेज, लन्दनः आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास।
पक्ष में ५५, विपक्ष में ३८ मत।

८ ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी : निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ--
"दो राष्ट्रों के बीच युद्ध का कोई औचित्य नहीं हो सकता।"
पक्ष में ६७, विपक्ष में १२ मत।

९ ब्रिस्टल अन्तर्विश्वविद्यालय विवाद (आक्सफर्ड के पूर्व): यह प्रस्ताव पास हुआ--"राष्ट्रीय सरकार द्वारा युद्ध की घोषणा होने पर यह सभा उसमें भाग न लेगी।" पक्ष में १४०, विपक्ष में ४० मत।

१० एब्रिसट्विथ यूनिवर्सिटी कालेज. शान्ति का प्रस्ताव पास हुआ।
पक्ष मे १८६, विपक्ष में ९९ मत।

११ वैंगर यूनिवर्सिटी, ७ मार्च, १९३३: आक्सफर्ड वाले प्रस्ताव का समर्थन। पक्ष में १९५, विपक्ष में ३८ मत।

१२ यू निवर्सिटी कालेज ऑफ साउथवेल्स ऐन्ड मानमाउथशायर
१०-३-३३ को आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ। पक्ष में २००, विपक्ष में ९१ मत।

१३. लाइसेस्टर यूनिवर्सिटी कालेज आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास हुआ। पक्ष मे २०, विपक्ष में ८ मत।

१४. नार्थम्पटन इंजीनियरिंग कालेज यूनियनः आक्सफर्ड के प्रस्ताव का समर्थन। पक्ष में २२, विपक्ष में १० मत।

१५. मेलबोर्न यूनिवर्सिटी : आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष मे १०७, विपक्ष में १०५ मत।

१६. विक्टोरिया कालेज, टारंटो: आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष मे दो-तिहाई बहुमत।

१७ केपटाउन यूनिवर्सिटी : आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष में १८६, विपक्ष में १४४ मत।

१८. सेली ओक कालेज, बिरमिंघम : आक्सफर्ड का प्रस्ताव पास। पक्ष मे ५०, विपक्ष मे ८ मत।

१९ वेस्ली हाउस, केम्ब्रिज : २३ सदस्यों मे से २०ने घोषणा की कि वे किसी भी स्थिति में युद्ध मे भाग न लेंगे।

२० वेस्ली कालेजेज, लीड्स : आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास। पक्ष में २७, विपक्ष में १७ मत।

२१ पेथसेडा लाज ऑफ नार्थवेल्स—क्वैरीमेस यूनियन(सदस्य-सख्या लगभग ६,०००): आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास।

२२. थार्नली माइनर्स वेलफेयर डिवेटिंग सोसायटी: आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव पास। पक्ष में १२४, विपक्ष में ३३मत।

२३ नेशनल अमलगेमेटेड यूनियन ऑफ शाप असिस्टेण्ट्स, वेयर-हाउसमेन ऐन्ड क्लर्क्स की मेरीसाइड शाखा : मार्च १९३३ मे एक प्रस्ताव पास कर दुकानो मे काम करनेवालों से अनुरोध किया कि युद्ध की घोषणा होने पर वे राजा एव स्वदेश के लिए लड़ने से इन्कार करदें।

२४ निम्नलिखित ५ मेथडिस्ट कालेजों में यह प्रस्ताव पास हुआ कि "हम आक्सफर्ड यूनियन वाले प्रस्ताव से सर्वथा सहमत हैं।"

मत यो आये—

	कालेज	पक्ष	विपक्ष	उदासीन
१	रिचमण्ड कालेज, सरे	२५	२१	—
२	विक्टोरिया पार्क, मांचेस्टर	२३	१	३
३	हार्टली कालेज, मांचेस्टर	४६	६	२
४	डिड्सबरी कालेज, मांचेस्टर	२६	२०	७
५	हैंड्सवर्थ कालेज, बिरमिंघम	५१	१०	१
		१७४	५८	१३

निम्नलिखित कालेजों मे आक्सफर्ड वाला प्रस्ताव या तो पेश होने से रोक दिया गया, या अस्वीकृत हुआ—

		पक्ष में मत	विपक्ष में मत
१	नाटिंघम यूनिवर्सिटी	(रोक दिया गया)	
२.	शेफील्ड यूनिवर्सिटी	(रोक दिया गया)	
३	बिरमिंघम यूनिवर्सिटी (अस्वीकृत हुआ)	१०७	१७०
४	आर्मस्ट्रांग कालेज, न्यूकैसिल (अस्वीकृत हुआ)	१२०	३१६
५	सेंट डेविड्स कालेज, लाम्पीटर (अस्वीकृत हुआ) ११ मतों से		
६	क्वींस कालेज, बेलफास्ट (अस्वीकृत हुआ)	१०४	१२४

अनुवादक का नोट

ससार के प्रायः सभी देशों के छात्रों ने युद्ध के विरोध में अपना मत प्रकट किया है।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	फुटनोट में सबसे नीचे की लाइन का "The stıangeı" पृष्ठ ६ के फुटनोट की पहली लाइन के ऊपर रहेगा। पृष्ठ ६ के इस फुटनोट का आरभ यों होगा— N P "The stıanger." Shall see . (शेप जैसा छपा है)		
६	,, ,, १	और आँखो में	और अपरिचित आँखो मे
७	फुटनोट पक्ति २	classics seııes	Classics Seııes
७	,, ,, ३	The kıngdom of Heaven ıs with	The Kıngdom of Heaven ıs
७	,, ,, ४	wıthın you	Wıthın You
८	३	नार्मल	नार्मन
११	फुटनोट पक्ति ३	galander	Icelander
११	,, ,, ४	7 M.	J. M.
१३	६	वैराग्य	वैप्रम्य
१५	१३	सैनिक ने	सैनिक नेता
२१	१०	जीव न	जीवन
२८	३	आत्मोसर्ग	आत्मोत्सर्ग
२६	फुटनोट पक्ति ८	पर्सीफाक	पर्सीफाल
३०	,, ,, १	आकर्मण	आक्रमण
३०	,, ,, २	क्रूरनुमा	क्रूसनुमा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२	१७	अनेक	प्रत्येक
३२	फुटनोट पंक्ति २	216	2/6
३२	,, ,, २	Union	Unwin
३२	,, ,, ३	पृष्ठ	परिशिष्ट
३३	१०	ऊँचा	अन्धा
३५	४	धक्छे	धक्के
४१	२	अग्नभूमि	अग्रभूमि
४१	फुटनोट पंक्ति ४	निमत्रित	नियत्रित
४६	५	fell	flee
६३	१	जाने दे	जाने के
८१	८	समारे	हमारे
८१	१७	सलिए	इसलिए
८३	३	पुरस्कार	पुरस्कृत
८४	१	फर ओ	फोर्ड, ओ
८५	२	शाति	शात
८६	१३	deed	deeds
८८	३	blackode	blockade
६४	१४	जमन	जर्मन
१०५	फुटनोट पंक्ति ४	lands	lambs
१०५	,, ,, ५	Pour	Poor
१०८	१०	अफम	अफसर
११३	७	Dues	Deus

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११३	१७	निःशात्री करण	निःशस्त्रीकरण
११६	६	इतना रुपया	इतना समय
११७	५	कर वे	वेचर
१२०	फुटनोट पंक्ति २	निःशास्त्री करण	निःशस्त्रीकरण
१२२	४	कुछ तुम हो	कुछ तुम कह रहे हो
१२४	१६	वो वेरी	ब्रोवेरी
१२५	फुटनोट पंक्ति १	Navy Defence	Navy: Defence
१२६	७	वायुमान	वायुयान
१३३	१३	यानव	मानव
१३४	६	रटेशन	स्टेशन
१३७	अन्तिम लाइन	स्वदेश-हित	स्वदेश-हित-विरोध
१३८	नीचे से दूसरी लाइन	Jablonec n/m	Jablone'c
१४०	७	हटा	हरा
१४२	२	अपना	अपने
१४२	१७	हमे	हम
१४६	फुटनोट पंक्ति ४	end	and
१५५	” ” १	loth	both
१६६	७	समुद्री शान्ति	समुद्री शक्ति
१६६	नीचे से ” १	mother,	mother's
१७५	४	पड़ोसी	मे पडोसी
१७५	१०	रीव-करीव	करीव-करीव

'सस्ता साहित्य मण्डल' : 'सर्वोदय साहित्य माला' के प्रकाशन

१. दिव्य जीवन। स्वेट मार्डेन की The Miracles of right Thought नामक पुस्तक का अनुवाद। जीवन की कठिन समस्याओं से निराश युवकों के लिए, यह पुस्तक सजीवनी विद्या के समान है। उत्साह-वर्धक ओजपूर्ण और सही रास्ता बतानेवाली। मूल्य ।=)

२. जीवन साहित्य। भारतीय साहित्य परिषद् के मंत्री और महान् विचारक काका कालेलकर के शिक्षा, सस्कृति, सभ्यता राजनीति आदि महत्वपूर्ण विषयों पर लिखे निबन्ध। मूल्य १)

३. तामिल वेद। दक्षिण के अछूत महात्मा तिरुवल्लुवर का उच्चकोटि की नैतिक, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक शिक्षाओं से भरा हुआ ग्रन्थ। भूमिका लेखक श्री राजगोपालाचार्य। मूल्य ।||)

४. भारत मे व्यसन और व्यभिचार। [ले० वैजनाथ महोदय] इसमे तथ्यों तथा आँकड़ों से यह बताया है कि भारतवर्ष में शराब, भाँग, गाँजा अफीम आदि दुर्व्यसन कैसे फैले तथा उनसे भारतवर्ष की जनता को क्या हानियाँ हुईं और हो रही हैं; व्यभिचार के पाप से भारतवासी किस प्रकार ग्रसित हो रहे हैं, और किस प्रकार हम इन दुर्गुणों के पजों से निकल सकते हैं। मूल्य ।||=)

५. सामाजिक कुरीतियाँ। [जब्तः अप्राप्य] मूल्य ।||)

६. भारत के स्त्री-रत्न। इस पुस्तक में भारतवर्ष की लगभग सभी प्रसिद्ध एव पूजनी देवियो की मनोहर तथा पवित्र जीवन-कथाये लिखी गई हैं। बहनें इन्हे पढ़े तथा हमारे पवित्र और गौरवशाली

भूतकाल की झांकी देख और अपने को आदर्श स्त्री-रत्न बनावे। तीन भागो में। चौथा भाग तैयार हो रहा है। मूल्य ३)

७ अनाथा। फ्रान्स के प्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के Laughing Man का अनुवाद। उमरावो तथा दरबारियो की कुटिल क्रीड़ाओ का नग्न दर्शन। मनोरंजक, करुण और गम्भीर। मूल्य १।=)

८. ब्रह्मचर्य-विज्ञान। (जगन्नारायणदेव शर्मा) इस पुस्तक में ब्रह्मचर्य की महिमा, उसके पालन की विधि, उसके लाभ आदि बातें बहुत अच्छे ढँग से बताई गई हैं। पुस्तक मे वेद, उपनिषद्, पुराण आदि सद्ग्रन्थों के शुभ वचनों का बहुत अच्छा सग्रह है। मूल्य ।।।=)

९. यूरोप का इतिहास। (रामकिशोर शर्मा) यह राष्ट्रीयता, आत्म-बलिदान तथा आजादी का इतिहास है। हम भारतीयों को यह इतिहास जरूर पढ़ना चाहिए। मूल्य २)

१०. समाज-विज्ञान। (चन्द्रराज भडारी) समाज-रचना, उसके विकास तथा निर्माण पर इसमे बहुत अच्छी तरह विचार किया गया है। समाजशास्त्र पर हिन्दी की मौलिक पुस्तक। मूल्य १।।)

११ खद्दर का संपत्तिशास्त्र। रिचर्ड बी ग्रेग की The Economics of Khaddar का हिन्दी अनुवाद। इसमे लेखक ने खादी की उपयोगिता वैज्ञानिक तथा आर्थिक ढग से सिद्ध की है। मूल्य ।।।≢)

१२. गोरों का प्रभुत्व। अमेरिकन विद्वान् लाथ्राप स्टाडार्ड की The Rising Tide of Colour नामक पुस्तक के आधार पर इसमे बतलाया गया है कि ससार की सवर्ण जातियाँ स्वतन्त्र होने के लिए किस प्रकार गोरी जातियों से लड़ रही हैं और किस प्रकार उनके भार से अपने को स्वतन्त्र कर रही हैं। मूल्य ।।।=)

१३. चीन की आवाज़। [अप्राप्य] मूल्य ।–)

१४. दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास। (महात्मा गांधी) सत्याग्रह की उत्पत्ति तथा उसके प्रयोग का खुद गाधीजी द्वारा लिखा इतिहास पढे कि किस प्रकार बहादुरी से इस शस्त्र द्वारा अफ्रीकावासियों ने अपने अधिकारो की बिना दूसरो को तकलीफ पहुँचाते हुए रक्षा की। मूल्य १।)

१५. विजयी बारडोली। [अप्राप्य] मूल्य २)

१६. अनीति की राह पर। सयम, इद्रिय-निग्रह तथा ब्रह्मचर्य पर गाधीजी की यह कृति अनुपम और सर्वश्रेष्ठ है। मूल्य ॥=)

१७. सीता की अग्नि-परीक्षा। (काली प्रसन्न घोष) लका-विजय के बाद सीताजी की अग्नि-शुद्धि का यह वैज्ञानिक विश्लेषण है। विज्ञान का हवाला देकर, यह बताया गया है कि सीता की अग्नि-परीक्षा की घटना सच्ची है। ।–)

१८ कन्या शिक्षा। इस छोटी-सी पुस्तक मे हिन्दी के यशस्वी लेखक स्व० चन्द्रशेखर शास्त्री ने बिलकुल सरल ढॅग से, शुरू से लेकर विवाह के बाद तक के कन्याओं के जीवन तथा उनके कर्त्तव्यो की चर्चा प्रश्नोत्तर के रूप मे बडे सुन्दर ढॅग से की है। कन्याओं के सीखने योग्य सभी बातें इसमे आगई हैं। मूल्य ।)

१६ कर्मयोग। अश्विनीकुमार दत्त की यह पुस्तक पढने से पाठक 'कर्मयोग' के ससार मे प्रवेश पा जाते हैं और उनको पारमार्थिक सुख का अनुभव होने लगता है। मूल्य ।=)

२०. कलवार की करतून। रूस के महान् लेखक महात्मा टाल्स्टाय की सरल भाषा मे शराब के आविष्कार की मनोरजक और शिक्षा-प्रद कहानी। मूल्य =)

२१. व्यावहारिक सभ्यता। बच्चो, युवकों, यहाँ तक कि अवस्था-प्राप्त लोगो के लिए भी रोज के व्यवहार में आनेवाली शिक्षाओं की पोथी। बोधप्रद, शिक्षाप्रद तथा ज्ञानप्रद। मूल्य ॥)

२२. अन्धेरे में उजाला। टाल्सटाय के Light Shines in The Darkness नामक नाटक का अनुवाद। इस नाटक में टाल्सटाय ने अपने जीवन की छाया अकित की है। उनके हृद्‌गत मनोभावों और हृदय-मंथन की यह अनुपम कहानी है मूल्य ॥)

२३. स्वामीजी का बलिदान। (ह० उ०) [अप्राप्य] मूल्य ।―)

२४. हमारे ज़माने की गुलामी। जब्त : [अप्राप्य] मूल्य ।)

२५. स्त्री और पुरुष। सयम तथा ब्रह्मचर्य पर टाल्सटाय की यह पुस्तक बहुत महत्वपूर्ण है। स्त्रियों को अपनी इच्छा-पूर्ति का साधन समझनेवाले इसे पढ़े और समझें कि स्त्री-पुरुषों का सम्बन्ध भोग-विलास का नहीं बल्कि एक पवित्र उद्देश्य के लिए किया गया एक पवित्र सम्बन्ध है। मूल्य ॥)

२६. सफ़ाई। घर, गाँव तथा शरीर की सफाई के सम्बन्ध में उत्तम पुस्तक। ग्रामीणों के काम की चीज़। मूल्य ।=)

२७. क्या करें? टाल्स्टाय की सुप्रसिद्ध पुस्तक What to do? का अनुवाद। गरीबों एव पीड़ितों की समस्याये और उनका हल। यह पुस्तक नहीं बल्कि समभावी हृदय का मथन है। मूल्य १॥=)

२८. हाथ की कताई-बुनाई। [अप्राप्य] मूल्य ॥―)

२९. आत्मोपदेश। यूनान के प्रसिद्ध विचारक महात्मा एपिक्टेटम के उत्तम और महत्वपूर्ण उपदेशो का सग्रह। मूल्य ।)

यथार्थ आदर्श जीवन। [अप्राप्य] मूल्य ।।।-)

३१. जब अंग्रेज नहीं आये थे। इसमें बताया गया है कि भारत की दुर्दशा किस प्रकार अंग्रेजों के यहाँ आने के बाद से शुरू हुई। स्व०-दादाभाई नौरोजी की Poverty and Un-British Rule in India के आधार पर लिखित। मूल्य ।)

३२ गंगा गोविन्दसिंह। [अप्राप्य] मूल्य ।।=)

३३. श्री रामचरित्र। श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य लिखित रामायण की कहानी। करुण और मधुर। मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी का जीवन-चरित्र। मूल्य १)

३४. आश्रम-हरिणी। (वामन मल्हार जोशी) एक पौराणिक गाथा। विधवा-विवाह- समस्या पर पौराणिकों के विचार। मूल्य ।)

३५ हिन्दी-मराठी-कोप। (पुण्डलीक) मराठी भाषा-भाषियों को हिन्दी सीखने में यह बड़े काम की चीज है। मूल्य २)

३६. स्वाधीनता के सिद्धान्त। आयर्लैण्ड के अमर शहीद टिरेन्स मेक्स्विनी के Principles of freedom का अनुवाद है। आजादी की इच्छावालों की नसों में नया खून, नया जोश और स्फूर्ति भरनेवाली पुस्तक। मूल्य ।।)

३७. महान् मातृत्व की ओर। (नाथूराम शुक्ल) इस पुस्तक में मातृत्व की जिम्मेदारी, उसकी गुरुता और आदर्श का दिग्दर्शन है। स्त्री-उपयोगी उत्तम और दिलचस्प पुस्तक। मूल्य ।।।=)

३८. शिवाजी की योग्यता। (तामसकर) छत्रपति शिवाजी का चरित्र-विश्लेषण। उनकी शासन-प्रणाली का तर्कपूर्ण अध्ययन। मूल्य ।=)

३९ तरंगित हृदय। गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री देवशर्मा के

विचार-तरंगों का सुन्दर संग्रह। स्व० स्वामी श्रद्धानन्द के आशीर्वाद सहित। नया सस्करण मूल्य ॥)

४०—हलैण्ड की राज्यक्रान्ति [नरमेध] अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक मोटले की Rise of the Duch Republic के आधार पर श्री चन्द्रभाल जौहरी का लिखा हुआ डच प्रजा के आत्मयज्ञ का पुनीत और रोमांचकारी इतिहास। हृदय में उथल-पुथल मचा देनेवाला क्रातिकारी ग्रथ। मूल्य १॥)

४१. दुखी दुनिया। ग़रीब और पीड़ित मानवी दुनिया के करुण चित्र। श्री राजगोपालाचार्य की सच्ची घटनाओं पर लिखी कहानियाँ। मधुर, करुण और सुन्दर। मूल्य ।=)

४२ जिन्दा लाश। टाल्सटाय के The Living Corpse नामक नाटक का अनुवाद। टाल्सटॉय के सब नाटकों में यह बड़ा ही करुण और मर्मस्पर्शी है। मूल्य ॥)

४३. आत्म-कथा। (महात्मा गाधी) ससार के साहित्य का यह एक उज्ज्वल रत्न है। उपनिषदों की भाति पवित्र और उपन्यासों की भाँति रोचक। चरित्र को निर्मल और मन को ऊँचा उठानेवाला। हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा किया गया प्रमाणिक अनुवाद। मूल्य १॥)

४४. जब अंग्रेज आये। [ज़ब्तः अप्राप्य] मूल्य १।=)

४५. जीवन-विकास। डार्विन के विकासवाद के सिद्धान्त को विषद रूप से समझानेवाली हिन्दी में यह एक ही पुस्तक है। मुल्य १।) १॥)

४६. किसानों का बिगुल। [ज़ब्तः अप्राप्य] मूल्य =)

४७. फांसी। विक्टर ह्यूगो लिखित Sentence to death नामक उपन्यास का अनुवाद। फॉसी की सज़ा पाये हुए एक युवक के मनोभावों का चित्रण। बेबस और करुण हृदय की झाकी। मूल्य ।=)

अनासक्तियोग और गीता-बोध। गीता पर महात्मा गांधी की व्याख्या मूल श्लोक तथा महात्माजी द्वारा गीता के तात्पर्य—गीता-बोध सहित ३५० पृष्ठों में। मूल्य केवल ।=)
केवल अनासक्तियोग =), सजिल्द ।) : गीताबोध —)॥

४९. स्वर्ण विहान (हरिकृष्ण प्रेमी) [जब्त · अप्राप्य] मू० ।=)

५०. मराठों का उत्थान और पतन। (गोपाल दामोदर तामसकर) मराठा साम्राज्य का विस्तृत और सच्चा इतिहास। मराठी भाषा में भी मराठों का ऐसा सच्चा और बड़ा इतिहास नहीं है। ऐसा महाराष्ट्र के अनेक विद्वान् और नेता मानते हैं। मू० २॥)

५१. भाई के पत्र। (रामनाथ 'सुमन') स्त्री-जीवन पर प्रकाश डालनेवाली; उनकी घरेलू एव रोजमर्रा की कठिनाई मे पथ-प्रदर्शक, बहनो के हाथों मे दिये जाने योग्य एक ही पुस्तक। मूल्य १॥) २)

५२ स्वगत। (हरिभाऊ उपाध्याय) चरित्र को गढ़नेवाले तथा युवको को सच्चा रास्ता दिखाने वाले उच्च और उत्तम विचार। मू० ।=)

५३. युगधर्म। (ह० उ०) [जब्त अप्राप्य] मूल्य १=)

५४ स्त्री समस्या। (मुकट बिहारी वर्मा) नारी-जवीन की जटिल समस्याओं का गम्भीर अध्ययन। स्त्री-आन्दोलन के इतिहास सहित-स्त्रियों की समस्या पर यह एक अच्छी और सग्रह करने योग्य 'रेफरेन्स' बुक है। मूल्य १॥।) सजिल्द २)

५५. विदेशी कपड़े का मुकाबला। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री मनमोहन गाधी ने इसमें बतलाया है कि भारत किस प्रकार अपनी जरूरत का पूरा कपडा तैयार कर सकता है और विदेशी कपडे को हिन्दुस्तान मे आने से रोक सकता है। मू० ॥=)

५६ चित्रपट। प्रो० शान्तिप्रसाद वर्मा एम० ए० के गद्य-गीतों का सग्रह। भावनामय, करुण और मधुर। मूल्य ।=)

५७. राष्ट्रवाणी। (गाधीजी) [अप्राप्य] मू० ।।=)

५८. इग्लैण्ड मे महात्माजी। (महादेव देसाई) महात्माजी की दूसरी गोलमेज परिषद् के समय की इंग्लैंड की यात्रा का सुन्दर, सरस और मजेदार वर्णन। हिन्दी मे अपने ढग का सर्वोत्तम यात्रा-वृत्तान्त। मू० १)

५९. रोटी का सवाल। मशहूर क्रातिकारी लेखक प्रिंस क्रोपाटकिन की अमर कृति Conquest of Bread का सरल अनुवाद। समाज-वाद का सुन्दर, सरल और सुबोध विवेचन। मू० १)

६०. दैवी-सम्पद्। उत्तम नैतिक एव धार्मिक पुस्तक। 'दैवी-सम्पद् से मनुष्य को मोक्ष होता है।'गीता की इस उक्ति का सुन्दर विवेचन। मनुष्य को मोक्ष का रास्ता बतानेवाली पुस्तक। मू० ।=)

६१. जीवन-सूत्र। अग्रेजी में थॉमस केम्पिस लिखित सर्व प्रसिद्ध पुस्तक Imitation of Christ का अनुवाद। जीवन को उन्नत और विचारो को सात्विक बनानेवाली पोथी। अग्रेजी मे इसको बाइबिल के समान माना जाता है। मू० ।।।)

६२. हमारा कलंक। अस्पृश्यता-निवारण पर महात्माजी के विचारों एव लेखों का सग्रह, उनके महान् उपवास की कहानी। महात्मा गाधी के आशीर्वाद सहित। मू० ।।=)

६३. बुदबुद्। (हरिभाऊ उपाध्याय) अपने अदर्शों से जीवन का मेल मिलानेवाले युवको के लिए चिंतनीय पुस्तक है। मूल्य ।।)

६४. सघर्ष या सहयोग? प्रिंस क्रोपाटकिन की Mutual Aid नामक पुस्तक का अनुवाद। इसमे बतलाया है कि पशु और पक्षियो से

लेकर मनुष्य तक सबके जीवन का आधार सहयोग है, संघर्ष नहीं; एकता है, लड़ाई नहीं। मूल्य १॥)

६५. गांधी-विचार दोहन । (किशोरलाल मशरूवाला) इसमें महात्मा जी के समस्त राजनैतिक, धार्मिक, समाजिक एवं नैतिक विचारों का बड़ा सुन्दर संकलन और दोहन किया गया है। मूल्य ॥।)

६६ एशिया की क्रांति । (सत्यनारायण) [जब्त : अप्राप्य] १॥।)

६७. हमारे राष्ट्र-निर्माता । (रामनाथ 'सुमन') लोकमान्य तिलक, स्व० मोतीलालजी, मालवीयजी, महात्माजी, दास बाबू, जवाहर-लालजी, मौ० मुहम्मदअली, सरदार और प्रेसिडेण्ट पटेल की जीवनियाँ—उनके संस्मरण, जीवन की झाँकियाँ और उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण। हिन्दी में यह पुस्तक जीवन-चरित्र लिखने का एक नया ही मार्ग उपस्थित करती है। अपने ढंग की एक ही मौलिक पुस्तक। मूल्य २॥) ३)

६८ स्वतन्त्रता की ओर । (हरिभाऊ उपाध्याय) इसमें बताया गया है कि हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? हम उस लक्ष्य—स्वतन्त्रता—को किस प्रकार और किन साधनों से प्राप्त कर सकते हैं। हमारा समाज कैसा हो, हमारा साहित्य कैसा हो, हमारा जीवन कैसा बने, जिससे हम स्वतन्त्रता की ओर बढ़ते चले जायँ। हिन्दी में इस पुस्तक का बड़ा आदर हुआ है और अपने ढंग की एक ही मौलिक पुस्तक मानी जाती है। मूल्य १॥)

६९. आगे बढ़ो । स्वेट् मार्डेन के Pushing to the Front का संक्षिप्त अनुवाद। कठिनाई में पड़े युवकों को सच्चे साथी के समान रास्ता बतानेवाली मूल्य ॥)

७०. बुद्ध-वाणी। (वियोगी हरि) भगवान् बुद्ध के चुने हुए वचनों का विषयवार सकलन। बौद्ध-धर्म के विषय में हिन्दी में मिलनेवाले सब ग्रन्थों का सार-तत्त्व। मूल्य ॥=)

७१ कांग्रेस का इतिहास। डॉ० पट्टाभि सीतारामैया की लिखी तथा कांग्रेस की स्वर्ण-जयन्ती पर प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक History of the Congress का यह प्रामाणिक अनुवाद है। इसकी भूमिका तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू ने लिखी है। अनुवाद तथा सपादन हरिभाऊ ऊपाध्याय ने किया है। दूसरा सस्करण। बड़े आकार के ६५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक। मूल्य केवल २॥)

७२. हमारे राष्ट्रपति। (सत्यदेव विद्यालकार) कांग्रेस के पहले अधिवेशन से अबतक के तमाम सभापतियों के जीवन-परिचय इस पुस्तक में दे दिये हैं। हिन्दी में अपने विषय की यह उत्तम तथा एक मात्र पुस्तक है। भूमिका श्री राजेन्द्रबाबू ने लिखी है। सब सभापतियों के चित्रों के साथ पृष्ठ सख्या ४००। मूल्य १)

७३. मेरी कहानी। प० जवाहरलाल नेहरू की आत्म-कथा। हिन्दी अनुवाद और सपादन हरिभाऊ उपाध्याय ने किया है। वर्तमान समय की एक ही बेजोड़ पुस्तक। बड़े आकार मे, पृष्ठ-सख्या ७५०। सजिल्द मूल्य ४)

७४ विश्व इतिहास की झलक। पण्डित जवाहरलालजी के अपनी पुत्री इदिरा के नाम लिखे पत्रों का सग्रह। इसमे १९६ पत्र हैं और इनमें उन्होंने सारी दुनिया के इतिहास की झांकी बड़ी सरलता से बताई है। दो खण्डों मे—१५००, पृष्ठ— मूल्य ८)

७५ किसानो का सवाल। (डॉ० अहमद) इसमे बताया गया है

कि हमारे किसानो का सवाल क्या है, उनकी हालत क्यों खराब है ? और अगर खराब है तो उसके जिम्मेदार कौन है ? और उसके दूर करने का उपाय क्या है-? यह सब हमे जानना चाहिए। इसकी भूमिका पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लिखी है। मूल्य ।)

७६ भारत का नया शासन विधान। (प्रान्तीय स्वराज्य) नये शासन-विधान पर इस पुस्तक मे आलोचनात्मक ढग से विचार किया गया है और बताया गया है कि किस प्रकार इस नये शासन-विधान मे हमे कुछ भी अधिकार नहीं दिये गये हैं। नये विधान को समझने के लिए इससे सरल और सुबोध पुस्तक अभी तक हिन्दी मे नहीं लिखी गई है। मूल्य ।।।)

७७. हमारे गॉवों की कहानी। (स्वर्गीय रामदास गौड़) हिन्दुस्तान गॉवो का देश है। गॉव ही हमारी नसो में जीवन प्रदान करते हैं—ये ही हमे खाना कपड़ा देते हैं लेकिन इनकी खुद की दशा क्या है ? यह जानने के लिए स्व० रामदास गौड़ की लिखी हमारे गॉव की यह दर्दनाक कहानी पढ़िए तो आप सिहर उठेगे कि हमारे अन्नदाताओ ने जिनको मेहमान समझा और उनकी इतनी खातिरतवाजो की, वे कितने वेवफा निकले और उनको कितना नीचे गिरा दिया। मू० ।।)

७८. महाभारत के पात्र। (आचार्य नानाभाई) मूल्य ।।)

७९ हमारे गॉवों का सुधार और सगठन। (स्वर्गीय रामदास गौड़) मूल्य १)

८०. सन्तवाणी। (वियोगी हरि) मू० ।।)

'सस्ता साहित्य मण्डल' [सोल एजेन्सी विभाग] के

अन्य प्रकाशन

१. जादूगरनी [हरिकृष्ण 'प्रेमी'] प्रेमीजी की कविताओं से हिन्दी-ससार काफी परिचित हो गया है। जादूगरनी उनकी दूसरी रचना है—मूल्य ।।।)

२. विद्यार्थी और शिक्षक [अनु० काशीनाथ त्रिवेदी] गुजराती के शिक्षण-शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य श्री गिजूभाई, हरभाई, ताराबहन मोदक आदि के शिक्षा विषयक उत्तम लेख और निबन्धों का सग्रह— ।।) [अप्राप्य]

३. लोपामुद्रा [ले० कन्हैयालाल मुन्शी] गुजरात के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री मुन्शी का यह ऋग्वेद कालीन उपन्यास बहुत मनोहर और रोचक है। महान् अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा की यह जीवन-कथा है। मूल्य १)

४. रोटी का राग [श्रीमन्नारायण अग्रवाल एम० ए०] रोटी का राग नये युग का राग है। महात्मा जी के शब्दों में रचयिता का 'हेतु स्पष्ट और निर्मल है।' श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दो मे 'यह रोटी का राग भूखों टुंटो को रुचेगा' और काका कालेलकर के शब्दो में 'सरल सस्कारी और सहृदय इन्हीं शब्दों में श्रीमन्नारायणजी की कविता का वर्णन हो सकता है।' मूल्य ।।।)

५ चारा-दाना और उसको खिलाने के उपाय [ले० परमेश्वरी प्रसाद गुप्ता] इसमे पशु-पालन के बारे मे वैज्ञानिक रीति से और साथ ही सरलता पूर्वक विचार किया गया है। इसके लेखक का इस बारे में वर्षों का प्रत्यक्ष अनुभव है। मूल्य =)

आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थ

१. राजनीति प्रवेशिका—(हेरल्ड लास्की)
२. जबसे अंग्रेज आये—(डॉ० अहमद)
३. गीतामन्थन—(किशोरलाल मशरूवाला)
४. हमारी नागरिक ज़िम्मेदारी—(कृष्णचन्द्र विद्यालंकार)
५. लोकजीवन—(काका कालेलकर)
६ जीवनशोधन—(किशोरलाल मशरूवाला)
७. गान्धीवाद : समाजवाद—(सपादक—काका कालेलकर)
८. गांधी साहित्य माला—(२० भागों मे)
९. महाभारत के पात्र—(५ भागो में)
१०. टाल्स्टॉय ग्रन्थावलि—(१० भागो में)
११. लोक साहित्यमाला—(२०० पुस्तकें)
१२. नया शासन विधान—(फेडरेशन)